लग्नचन्द्रिका

प्रकाशक—
नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ.

श्रीकाशिनाथ-प्रणीत

लग्न-चन्द्रिका

भाषा-टीका-सहित

टीकाकार

पं० रामबिहारी सुकुल

संशोधक

श्रीगोकर्णदत्तत्रिपाठी

एकादश संस्करण

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

भूमिका।

वेद के छः अंगों में नेत्र-स्वरूप ज्योतिष तीन भागों में विभक्त है—सिद्धान्त, संहिता और होरा। वेदाङ्ग ज्योतिष में लिखा है—

> "सिद्धान्त-संहिता-होरा-रूपं स्कन्धत्रयात्मकम्।
> वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम्॥"

इस स्थल में सिद्धान्त द्वारा साधारण रीति से ग्रहगणितोपयोगी शास्त्र का ग्रहण है। सिद्धान्त तीन भागों में विभक्त है—सिद्धान्त, तन्त्र और करण। जिसमें सृष्टि की आदि से इष्ट दिन तक दिनों की संख्या द्वारा ग्रह-गणना के नियमों का समावेश है, उसका नाम सिद्धान्त-भाग। जिसमें सिद्धान्त के संपूर्ण विषयों का निरूपण है, किन्तु युग की आदि से इष्ट दिन तक दिनों की संख्या द्वारा ग्रह-गणना की विधि है—उसका नाम तन्त्र, और जिस भाग में किसी सिद्धान्त-ग्रन्थ को मूल मानकर इष्ट, शक, वर्ष से इष्ट दिन तक दिनों की संख्या से ग्रह-गणना का विधान है—उसका नाम करण है। इसी लिये लिखा है—

> "सिद्धान्तोदीरितो ह्यर्थो, निजयुक्त्यैव बध्यते।
> निखिलो यत्र तत्तन्त्रं, निजोपकरणाश्रितम्॥
> सिद्धान्तोक्तैकदेशास्तु, केचिद्यत्र निरूपिताः।
> तदुक्तं करणं नाम, लघूपायविनिर्मितम्॥"

इस प्रकार प्राचीन ग्रन्थों में सिद्धान्त-भाग जिसको सिद्धान्त-स्कन्ध भी कहते हैं, उसका लक्षण माना गया है। और कालानुसार ग्रहों के राशि-सञ्चार द्वारा सुभिक्ष और दुर्भिक्ष, एवं सब

प्रकार के प्राकृतिक और प्राणियों के शुभाशुभ-फल का जिसमें विचार है—उसका नाम संहिता-भाग है। प्राकृतिक विज्ञान, उद्भिद्विद्या, प्राणि-विद्या आदि बहुत से विषयों के संयोग होने से ही इस भाग का नाम संहिता रक्खा गया है। पशु, पक्षियों के स्वरादि द्वारा फल-ज्ञापक स्वर-शास्त्र; पल्ली (छिपकली) प्रभृति प्राणि-द्वारा फल-ज्ञापक शकुन-शास्त्र; यात्रा, विवाह आदि के काल-ज्ञापक मुहूर्त-ग्रन्थ और अंग-प्रत्यंगों से मनुष्य, गौ, अश्व, हस्ती आदि के फल-ज्ञापक सामुद्रिक शास्त्र भी इसी संहिता के अन्तर्गत है।

जिस भाग में जन्मकालिक ग्रह-संस्था से मनुष्यों के भूत, भविष्य और वर्तमान शुभाशुभ का निर्णय किया जाता है, उसका नाम होरा किंवा जातक है। आचार्य वराहमिहिर (शक ४२७) ने बृहज्जातक में लिखा है—

"होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके,
वाञ्छन्ति पूर्वापरवर्णलोपात्।
कर्मार्जितं पूर्वभवे सदादि,
यत्तस्य पंक्तिं समभिव्यनक्ति॥"

अर्थात् किसी का मत है कि 'अहोरात्र' शब्द के पूर्वापर वर्ण अर्थात् अक्षर अ, त्र का लोप करने से 'होरा' शब्द सिद्ध होता है*। मेषादि द्वादश लग्न-राशि अहोरात्र का आश्रय करते हैं, इसी लिये होरा नाम हुआ। इस होरा-शास्त्र से प्राणियों के पूर्वजन्म-सम्बन्धी शुभाशुभ कर्म-भोग का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इस प्रकार, ज्योतिष-शास्त्र के तीनों स्कन्धों का विषय-विभाग पूर्वाचार्यों ने स्थिर किया है, और यही सर्वमान्य है।

कोई यवनों से उपलब्ध, वर्षफल-विषयक, ताजिक नाम से विख्यात ग्रन्थों का भी समावेश होरा-शास्त्र में मानते हैं। कोई

* अथवा 'हुल हिंसा संवरणयोः' धातु से पचादित्वात् अच् प्रत्यय करके होलति, हुल्यते वा—इस अर्थ में र, ल के सावर्ण्य से 'ल' के स्थान में 'र' करने से 'होरा' शब्द सिद्ध होता है। होरा शब्द का दूसरा अर्थ राशि का अर्ध और लग्न का अर्ध भी है। लग्न-मान स्थूल-मान से ५ घड़ी है, इसका अर्ध २½ घड़ी प्रचलित १ घंटा के समान है।

शकुन-विद्या और दाक्षिणात्य, केरलीय प्रश्नादि विद्या को अलग-अलग दो स्कन्धों में विभक्त करके पाँच स्कन्धों की कल्पना करते हैं। जैसा कि एक श्लोक में लिखा है—

"पञ्चस्कन्धमिदं शास्त्रं, होरा-गणित-संहिताः।
केरलिः शकुनं चेति ज्योतिःशास्त्रमुदीरितम्॥"

परंतु यह कल्पना ठीक नहीं है। शकुन और केरलि के प्रतिपाद्य विषयों का संकलन संहिता और होरा के ही अन्तर्गत है। यदि नाम-मात्र के भेद से पृथक् स्कन्धों की कल्पना की जाय, तो स्वर, ताजिक, रमल आदि के भी स्कन्ध होने चाहिए, इसलिये यह मत मान्य नहीं है। किंतु उक्त सिद्धान्त, संहिता और होरा नामक तीन स्कन्धों में ज्योतिःशास्त्र का महाविशाल वृत्त विभक्त किया गया है।

यदि गणित और फलित, इन दो भागों में ज्योतिष-शास्त्र विभक्त किया जाय, तो संहिता और होरा फलित-भाग के अन्तर्गत हो सकते हैं। आचार्य वराहमिहिर ने लिखा है कि जिसमें ज्योतिःशास्त्र के समस्त विषयों का निरूपण हो, उसको संहिता कहते हैं। वास्तव में ग्रह-गणित (तन्त्र) और ग्रह-लग्न-वश से प्रत्येक व्यक्तियों का शुभाशुभ गणना-स्वरूप होरा किंवा जातक को छोड़कर जो कुछ शुभाशुभ गणना हो सकती है, वह संहिता का विषय है। समाज, जाति किंवा देश-विशेष में जो फल-घटना होती है, वह संहिता का विषय है, और व्यक्तिविशेष में जो फल-घटना होती है, वह होरा का विषय है। प्रकृति में जो कुछ है, और जो-जो घटनाएँ होती हैं, उन्हीं का कुछ-न-कुछ फल हम लोगों को भोगना पड़ता है, क्योंकि हम सब क्या, विश्व ही प्रकृति के नियमों के भीतर है, बाहर कुछ भी नहीं है। या, यों समझना चाहिए कि प्राकृतिक घटनाओं से ही हम लोग शुभाशुभ फल का अनुमान कर सकते हैं। इसी प्रकार के, अनेक तर्कों और कल्पनाओं से हमारे प्राचीन आचार्यों ने महाविशाल संहिता-ज्योतिष की सृष्टि रची है। आचार्य वराहमिहिर की 'बृहत्संहिता' को देखने से संहिता के विषयों का असीम विस्तार और उसकी

उपयोगिता भलीभाँति जानी जा सकती है। महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों के आलोचन से ज्ञात होता है कि वराहमिहिर के पहले आचार्यों ने इस भाग को बड़ा ही विस्तृत रूप दिया था। परंतु बृहत्संहिता के बाद इस विषय में किसी आचार्य ने हस्ताक्षेप नहीं किया, इसलिये इस स्कन्ध की अनर्गल सीमा सार्गल हो चुकी थी। हाँ, मिथिला के राजा लक्ष्मणसेन के पुत्र बल्लालसेन ने १०९० शक में अनेक प्रपञ्चों से भरपूर 'अद्भुतसागर' की रचना की थी और इस संग्रह-ग्रन्थ ने सचमुच अपने नाम को सार्थक करने में कोई कमी नहीं रक्खी। प्राचीन आचार्य, वराहमिहिर की बृहत्संहिता के साथ इस अद्भुतसागर में गोता खा गए। इस ग्रन्थ में गर्ग, वृद्ध गर्ग, पराशर, कश्यप, विष्णुधर्मोत्तर, देवल, वसन्तराज, वटकणिका, महाभारत, वाल्मीकीय रामायण, यवनेश्वर, मत्स्यपुराण, भागवत पुराण, मयूरचित्र, ऋषिपुत्र, राजपुत्र आदि अनेकों के वचन समा गए हैं। इस सागर को देखकर स्वर्गीय महामहोपाध्याय श्रीसुधाकर द्विवेदीजी भी चक्कर में पड़ गए, और अपनी 'गणकतरङ्गिणी' में लिखा है कि प्राचीन इतिहास रसिकों को यत्नपूर्वक इस सागर का अवगाहन करना चाहिए, अर्थात् इसने सबके कान काट लिए हैं। अस्तु !

बृहत्संहिता पर भट्टोत्पल (शक ८८८) की टीका, बड़ी उत्तम और विविध ऋषि, मुनि और प्राचीन आचार्यों के प्रमाण-वाक्यों से भूषित है। इसका संपादन स्वर्गीय उक्त द्विवेदीजी ने, कई वर्ष हो चुके, बड़े परिश्रम से किया था और काशी के मेडिकल हाल-प्रेस से 'विजयानगर संस्कृत-सीरीज़' में प्रकाशित हुई थी†। संहिता के अन्तर्गत मुहूर्त का भी विषय है। अथर्ववेद के समय से संहिता ज्योतिष और उसके अंग-स्वरूप मुहूर्त का बीजारोप हुआ है। रौद्र, मैत्र आदि मुहूर्त्तों का उल्लेख अथर्व में पाया जाता है। महाभारत के उद्योगपर्व, वनपर्व आदि में प्रसंगवश मुहूर्त्तों की चर्चा मिलती

† बृहत्संहिता का हिंदी अनुवाद—नवलकिशोर-प्रेस से सबसे पहले प्रकाशित हुआ था और उसी के बाद बंबई से भी प्रकाशित हुआ है। इसके द्वितीय संस्करण का संशोधन ज्योतिषाचार्य पं० श्रीगिरिजाप्रसादद्विवेदीजी प्रोफ़ेसर संस्कृत कालेज जयपुर कर रहे हैं, जो शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

है। इसके सिवा ग्रहों की वक्रगति, ग्रहयुति और ग्रहों की स्थिति के अनुसार शुभाशुभ फल की कल्पना भी देखी जाती है। मनु-स्मृति में भी संस्कार-काल स्थूलरूप से प्राप्त होता है। वङ्गदेशीय रघुनन्दन भट्टाचार्य (शक १४२१) का ज्योतिषतत्त्व स्मृतिविषयक ग्रन्थ होने पर भी अधिकांश में मुहूर्त्त-निर्णायक ही है। संपूर्ण श्रौत और स्मार्त कर्म ज्योतिष से सम्बन्ध रखते हैं। वेदांग ज्योतिष में लिखा है—

"वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः
कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं
यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्॥"

इसी कालज्ञान की सुगमता के लिये पञ्चाङ्ग की सृष्टि हुई है, और भिन्न-भिन्न देशों में आचार्यों ने हज़ारों गणित और फलित के ग्रन्थ बना डाले, जिनमें न मालूम कितने काल-कवलित हो गए।

फलित के प्रचलित ग्रन्थों में काशिनाथजी की लग्नचन्द्रिका का भी ज्योतिर्विदों में अधिक प्रचार है। यह ग्रन्थ नव परिच्छेदों में विभक्त है। इसके पहले परिच्छेद में जन्म-तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण तथा ऋतु, पक्ष, अयन आदि का फल; दूसरे परिच्छेद में सूर्य आदि ग्रहों के बारह भावों के फल; तीसरे परिच्छेद में सूर्य आदि नव ग्रहों की महादशाओं तथा अन्तर्दशाओं के फल; चौथे परिच्छेद में जन्माङ्गस्थ भावों में आये हुए दो-दो ग्रहों के फल; पाँचवें परिच्छेद में तीन-तीन ग्रहों के फल; छठे परिच्छेद में चार-चार ग्रहों के फल; सातवें परिच्छेद में पाँच-पाँच ग्रहों के फल; आठवें परिच्छेद में छः-छः ग्रहों के फल तथा नवें परिच्छेद एवं अन्य परिच्छेदों में यथास्थान अनेक अपूर्व योगों का समावेश किया गया है।

ग्रन्थकार का 'शीघ्रबोध' नामक ज्योतिषविषयक एक ग्रन्थ और है, बालकों की पाठ्य पुस्तक है। इसके अधिक प्रचार होने पर भी शुद्ध पुस्तक का अभाव है। इसका संशोधित संस्करण निकलना परमावश्यक है। इसकी जितनी ही प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकें मिलें, उतनी ही संशोधन के लिये उपयोगी हैं।

ग्रन्थकार ने अपने जन्म द्वारा किस देश को कब अलंकृत किया था इसका निर्णय ठीक नहीं हो सका है। कुछ लोगों का मत है कि काशिनाथ जी 'रामचन्द्रिका' के रचयिता कविवर केशवदासजी के पूर्वज थे। मुहूर्त्तचिन्तामणि की सुप्रसिद्ध टीका पीयूष-धारा में भी कई स्थानों पर श्रीकाशिनाथजी का नाम बड़े आदर के साथ लिखा गया है। उस टीका की समाप्ति शक १५२५ में हुई थी इससे यह पता अवश्य चलता है कि हमारे ग्रन्थकार पूर्वोक्त शक-संवत् में विद्यमान थे।

इस ग्रन्थ का अनुवाद उन्नाव ज़िले के तारगांवनिवासी स्वर्गीय पं० रामविहारीसुकुलजी ने किया था, जो इस प्रेस में कई वर्षों तक कर्मचारी भी थे। उक्त परिडतजी ने समयोचित अनुवाद करके सर्व साधारण ज्योतिषियों का बड़ा उपकार किया था।

उस समय की भाषाशैली और इस समय की भाषाशैली में अधिक अन्तर पड़ जाने के कारण, नवलकिशोर-प्रेस बुकडिपो के मैनेजर बाबू श्रीहरिरामजी भार्गव की आज्ञानुसार इस बार मैंने इस ग्रन्थ को शुद्ध करने और हिंदी अनुवाद को व्यवस्थित करने में यथासाध्य प्रयत्न किया है। बहुत से आवश्यक विषयों का समावेश करके ग्रन्थ को पूर्णरूप से नवीन रूप दे दिया है, तो भी सम्भव है, त्रुटियाँ रह गई हों।

आशा है, हमारे देश के सर्वसाधारण विद्याप्रेमी महानुभावगण इस ग्रन्थ को उत्तरोत्तर अपनाकर मेरा परिश्रम सफल करेंगे।

नवलकिशोर-प्रेस
लखनऊ
ता० २८।१।३०

निवेदक—
श्रीगोकर्णदत्तत्रिपाठी.

ॐ नमः शिवाय ।

लग्न-चन्द्रिका

भाषा-टीका-सहित

की

परिच्छेद-क्रम से विषयानुक्रमणिका ।

विषय	पृष्ठ
पहिला परिच्छेद	
मंगलाचरण ...	१
बारह भावों की संज्ञाएँ ...	१
मेष आदि बारह राशियों की संज्ञाएँ ...	२
बारहों भावों की संज्ञाएँ	२
वर्गोत्तम नवांशक और होरा	३
द्वादशांश, द्रेष्काण और पृष्ठोदय आदि संज्ञक लग्न	३
पापग्रह और होरा-विचार	४
ग्रहों का स्वराशि और पर-राशि में शत्रु-मित्र का विचार	४
उच्च ग्रहों का विचार ...	४
पुरुष-राजयोग ...	५
स्त्री-राजयोग ...	२०
शुभाशुभ योग ...	२२
गण्डयोग-विचार ...	३८
गण्ड-शान्ति ...	३८
गण्ड की शान्ति का प्रकार	३८
पुनः शुभाशुभ योग ...	३९
वर्ष-क्रम से नाश-विचार	४१
वारायु	४२
जन्म-वार फल	४३
जन्म-राशि फल ...	४५
जन्म-लग्न फल ...	४६
जन्म-तिथि फल ...	५२
जन्म-योग फल ...	५५
जन्म-करण फल ...	६०
जन्म-राशि-नवांशक फल	६२
जन्म-गण-फल ...	६३
जन्म-ऋतुफल ...	६४
जन्म-पक्ष फल ...	६५
जन्म-अयन फल ...	६६
तुंग ग्रह फल ...	६६
मूलत्रिकोणगतग्रह फल	६७
स्वगृहस्थ ग्रहफल ...	६८
मित्रगृहस्थ ग्रहफल ...	६९
नीचगृहस्थ ग्रहफल ...	६९
शत्रुगृहस्थ ग्रहफल ...	७०

विषय		पृष्ठ
जन्म-नक्षत्र फल	...	७१
जन्म-तिथि फल	...	७६
दूसरा परिच्छेद		
सूर्यद्वादशभाव फल	...	७८
चन्द्रद्वादशभाव फल	...	८०
भौमद्वादशभाव फल	...	८२
बुधद्वादशभाव फल	...	८४
गुरुद्वादशभाव फल	...	८६
शुक्रद्वादशभाव फल	...	८८
शनिद्वादशभाव फल	...	९१
स्त्री-जन्मलग्न फल	...	९३
तीसरा परिच्छेद		
सूर्यचक्र का वर्णन	...	९६
चन्द्रचक्र का वर्णन	...	९७
भौमचक्र का वर्णन	...	९८
बुधचक्र का वर्णन	...	९९
गुरुचक्र का वर्णन	...	९९
शुक्रचक्र का वर्णन	...	१००
शनिचक्र का वर्णन	...	१०१
राहुचक्र का वर्णन	...	१०२
केतुचक्र का वर्णन	...	१०३
स्त्रियों के सूर्यचक्र का वर्णन		१०४
सूर्यकालानल चक्र	...	१०४
जन्मराशि के वेध का फल		१०५
चन्द्रकालानल चक्र	...	१०६
दुर्गचक्र का वर्णन	...	१०७
रवि आदिकों का मध्यम चार	...	१०८
जन्मलग्नज्ञान	...	१०८
अष्टोत्तरीदशाक्रम	...	११०

विषय		पृष्ठ
नक्षत्रों से दशा-विचार	...	१११
अन्तर्दशा-विचार	...	११२
सूर्यमहादशाफल	....	११२
सूर्यान्तर्दशा फल	...	११२
चन्द्रान्तर्दशा फल	...	११३
भौमान्तर्दशा फल	...	११३
बुधान्तर्दशाफल	...	११३
शन्यन्तर्दशा फल	...	११३
गुर्वन्तर्दशा फल	...	११४
राह्वन्तर्दशा फल	...	११४
शुक्रान्तर्दशा फल	...	११४
चन्द्रमहादशा फल	....	११५
चन्द्रान्तर्दशा फल	...	११५
भौमान्तर्दशा फल	...	११५
बुधान्तर्दशा फल	...	११६
शन्यन्तर्दशा फल	...	११६
गुर्वन्तर्दशा फल	...	११६
राह्वन्तर्दशा फल	...	११६
शुक्रान्तर्दशा फल	...	११७
सूर्यान्तर्दशा फल	...	११७
भौममहादशा फल	....	११७
बुधान्तर्दशा फल	...	११८
शन्यन्तर्दशा फल	...	११८
गुर्वन्तर्दशा फल	...	११८
राह्वन्तर्दशा फल	...	११९
शुक्रान्तर्दशा फल	...	११९
सूर्यान्तर्दशा फल	...	११९
चन्द्रान्तर्दशा फल	...	११९
बुधमहादशा फल	....	१२०
बुधान्तर्दशा फल	...	१२०

विषय		पृष्ठ
शन्यन्तर्दशा फल	...	१२०
गुर्वन्तर्दशा फल	...	१२१
राह्वन्तर्दशा फल	...	१२१
शुक्रान्तर्दशा फल	...	१२१
सूर्यान्तर्दशा फल	...	१२२
चन्द्रान्तर्दशा फल	...	१२२
भौमान्तर्दशा फल	...	१२२
शनिमहादशा फल	....	१२२
शन्यन्तर्दशा फल	...	१२३
गुर्वन्तर्दशा फल	...	१२३
राह्वन्तर्दशा फल	...	१२३
शुक्रान्तर्दशा फल	...	१२४
सूर्यान्तर्दशा फल	...	१२४
चन्द्रान्तर्दशा फल	...	१२४
भौमान्तर्दशा फल	...	१२४
बुधान्तर्दशा फल	...	१२५
गुरुमहादशा फल	....	१२५
गुर्वन्तर्दशा फल	...	१२५
राह्वन्तर्दशा फल	....	१२६
शुक्रान्तर्दशा फल	...	१२६
सूर्यान्तर्दशा फल	...	१२६
चन्द्रान्तर्दशा फल	...	१२६
भौमान्तर्दशा फल	...	१२७
बुधान्तर्दशा फल	...	१२७
शन्यन्तर्दशा फल	...	१२७
राहुमहादशा फल	....	१२८
राह्वन्तर्दशा फल	...	१२८
शुक्रान्तर्दशा फल	...	१२८
सूर्यान्तर्दशा फल	...	१२८
चन्द्रान्तर्दशा फल	...	१२९
भौमान्तर्दशा फल	...	१२९
बुधान्तर्दशा फल	...	१२९
शन्यन्तर्दशा फल	...	१३०
गुर्वन्तर्दशा फल	...	१३०
शुक्रमहादशा फल	....	१३०
शुक्रान्तर्दशा फल	...	१३०
सूर्यान्तर्दशा फल	...	१३१
चन्द्रान्तर्दशा फल	...	१३१
भौमान्तर्दशा फल	...	१३१
बुधान्तर्दशा फल	...	१३२
शन्यन्तर्दशा फल	...	१३२
गुर्वन्तर्दशा फल	...	१३२
राह्वन्तर्दशाफल	...	१३२
विंशोत्तरीदशा-प्रकार	....	१३३
केतुमहादशा फल	....	१३४
केत्वन्तर्दशा फल	...	,,
शुक्रान्तर्दशा फल	...	,,
सूर्यान्तर्दशा फल	...	१३५
चन्द्रान्तर्दशा फल	...	,,
भौमान्तर्दशा फल	...	,,
राह्वन्तर्दशा फल	...	,,
गुर्वन्तर्दशा फल	...	१३६
शन्यन्तर्दशा फल	...	,,
बुधान्तर्दशा फल	...	,,
सूर्य की महादशा में केत्वन्तर्दशा फल	....	१३७
चन्द्र की म.द. में के.अ.द.फ.		,,
भौम की ,, ,,		,,
राहु की ,, ,,		,,

विषय	पृष्ठ
गुरु की म.द. में के.अ.द.फ.	१३८
शनि की ,, ,,	,,
बुध की ,, ,,	,,
वर्षदशा	१३९
मासदशा	,,
दिनदशा	,,
दिन-फल	१४०
क्रूर-ग्रह शुभ-ग्रह दशा फल विचार ...	,,
भौम की महादशा में शन्यन्तर्दशा फल	,,
क्रूरग्रहराशिस्थ पापग्रह फल	१४१
दशारिष्टभंग	,,

चौथा परिच्छेद

विषय	पृष्ठ
सूर्यचन्द्रयोग फल ...	१४३
सूर्यमंगलयोग फल ...	,,
सूर्यबुधयोग फल ...	,,
सूर्यगुरुयोग फल ...	१४४
सूर्यशुक्रयोग फल ...	,,
सूर्यशनियोग फल ...	,,
चन्द्रभौमयोग फल ...	,,
चन्द्रबुधयोग फल ...	,,
चन्द्रगुरुयोग फल ...	१४५
चन्द्रशुक्रयोग फल ...	,,
चन्द्रशनियोग फल ...	,,
मंगलबुधयोग फल ...	,,
मंगलगुरुयोग फल ...	१४६
मंगलशुक्रयोग फल ...	,,
मंगलशनियोग फल ...	,,
बुधगुरुयोग फल ...	१४६
बुधशुक्रयोग फल ...	१४७
बुधशनियोग फल ...	,,
गुरुशुक्रयोग फल ...	,,
गुरुशनियोग फल ...	,,
शुक्रशनियोग फल ...	१४८

पाँचवाँ परिच्छेद

विषय	पृष्ठ
सूर्यचन्द्रबुधयोग फल ...	१४९
सूर्यमंगलबुधयोग फल ...	,,
सूर्यमंगलगुरुयोग फल ...	,,
सूर्यमंगलशुक्रयोग फल ...	,,
सूर्यमंगलशनियोग फल ...	१५०
सूर्यबुधगुरुयोग फल ...	,,
सूर्यबुधशुक्रयोग फल ...	,,
सूर्यबुधशनियोग फल ...	,,
शुक्रगुरुसूर्ययोग फल ...	१५१
शनिगुरुसूर्ययोग फल ...	,,
सूर्यशुक्रशनियोग फल ...	,,
चन्द्रमंगलबुधयोग फल	,,
चन्द्रमंगलगुरुयोग फल	,,
चन्द्रमंगलशुक्रयोग फल	१५२
चन्द्रमंगलशनियोग फल	,,
चन्द्रबुधगुरुयोग फल	,,
चन्द्रबुधशुक्रयोग फल	,,
चन्द्रबुधशनियोग फल	१५३
चन्द्रगुरुशुक्रयोग फल ...	,,
चन्द्रगुरुशनियोग फल ...	,,
चन्द्रशुक्ररवियोग फल ...	,,
मंगलबुधगुरुयोग फल ...	,,
मंगलबुधशुक्रयोग फल ...	१५४

विषय	पृष्ठ
मंगलगुरुशुक्रयोग फल ...	१५४
मंगलबुधशनियोग फल ...	,,
मंगलगुरुशनियोग फल ...	,,
मंगलशुक्रशनियोग फल...	१५५
बुधगुरुशुक्रयोग फल ...	,,
बुधगुरुशनियोग फल ...	,,
बुधशुक्रशनियोग फल ...	,,
गुरुशुक्रशनियोग फल ...	१५६
शुभग्रहपापग्रहयोग फल	,,
छठा परिच्छेद	
सूर्यचन्द्रमंगलबुधयोग फल	१५७
सूर्यचन्द्रमंगलगुरुयोगफल	,,
सूर्यचन्द्रभौमशुक्रयोग फल	१५७
सूर्यचन्द्रभौमशनियोग फल	,,
सूर्यचन्द्रबुधगुरुयोग फल	१५८
सूर्यचन्द्रबुधशुक्रयोग फल	,,
सूर्यचन्द्रबुधशनियोग फल	,,
सूर्यचन्द्रगुरुशुक्रयोग फल	,,
सूर्यचन्द्रगुरुशनियोग फल	१५९
सूर्यचन्द्र शुक्रशनियोग फल	,,
सूर्यमंगलबुधगुरुयोग फल	,,
सूर्यचन्द्रमंगलशुक्रयोगफल	,,
सूर्यमंगलबुधशनियोग फल	१६०
सूर्यमंगलगुरुशुक्रयोग फल	,,
सूर्यमंगलगुरुशनियोग फल	,,
सूर्यमंगलशुक्रशनियोग फल	,,
सूर्यबुधगुरुशुक्रयोग फल	,,
सूर्यबुधगुरुशनियोग फल	१६१
सूर्यबुधशुक्रशनियोग फल	,,
सूर्यगुरुशुक्रशनियोग फल	,,
चन्द्रमंगलबुधगुरुयोग फल	,,
चन्द्रमंगलबुधशुक्रयोग फल	१६२
चन्द्रमंगलबुधशनियोग फल	,,
चन्द्रमंगलगुरुशुक्रयोगफल	,,
चन्द्रमंगलगुरुशनियोग फल	,,
चन्द्रमंगलशुक्रशनियोग फल	१६३
चन्द्रबुधगुरुशुक्रयोग फल	,,
चन्द्रबुधगुरुशनियोग फल	,,
चन्द्रगुरुशुक्रशनियोग फल	,,
मंगलबुधगुरुशुक्रयोग फल	१६४
मंगलबुधगुरुशनियोग फल	,,
मंगलबुधशुक्रशनियोग फल	,,
मंगलगुरुशनिशुक्रयोग फल	,,
बुधगुरुशुक्रशनियोग फल	१६५
सातवाँ परिच्छेद	
सूर्यचन्द्रमंगलबुधगुरु-योग फल	१६६
सूर्यचन्द्रमंगलबुधशुक्र-योग फल	,,
सूर्यचन्द्रमंगलबुधशनि-योग फल	,,
सूर्यचन्द्रमंगलगुरुशुक्र-योग फल	१६७
सूर्यचन्द्रमंगलगुरुशनि-योग फल	,,
सूर्यचन्द्रमंगलशुक्रशनि-योग फल	,,
सूर्यचन्द्रबुधगुरुशुक्रयोग फल	,,
सूर्यचन्द्रबुधगुरुशनि-योग फल	,
सूर्यचन्द्रबुधशुक्रशनि-योग फल	१६८

विषय	पृष्ठ
सूर्यचन्द्रगुरुशुक्रशनि-योग फल	१६८
सूर्यमंगलबुधगुरुशुक्रयोगफल	,,
सूर्यमंगलबुधगुरुशनि-योग फल	,,
सूर्यमंगलबुधशुक्रशनि-योग फल	१६९
सूर्यमंगलगुरुशुक्रशनियोगफल	,,
सूर्यबुधगुरुशुक्रशनियोग फल	,,
चन्द्रमंगलबुधगुरुशुक्र-योग फल	,,
चन्द्रमंगलगुरुशुक्रशनि-योग फल	१७०
चन्द्रमंगलबुधशुक्रशनि-योग फल	,,
चन्द्र बुधगुरुशुक्रशनि-योग फल	,,
भौमबुधगुरुशुक्रशनियोगफल	१७१

आठवाँ परिच्छेद

विषय	पृष्ठ
सूर्यचन्द्रमंगलबुधगुरु-शुक्रयोग फल ...	१७२
सूर्यचन्द्रमंगलबुधगुरु-शनियोग फल ...	,,
सूर्यचन्द्रमंगलबुधशुक्र-शनियोग फल ...	,,
सूर्यचन्द्रमंगलगुरुशुक्र-शनियोग फल ...	१७३
सूर्यचन्द्रबुधगुरुशुक्र-शनियोग फल ...	,,
सूर्यमंगलबुधगुरुशुक्र-शनियोग फल ...	,,
चन्द्रमंगलबुधगुरुशुक्र-शनियोग फल ...	१७३
सूर्यचन्द्रमंगलबुधशुक्र-शनियोग फल ...	१७४
सूर्यचन्द्रमंगलगुरुशुक्रशनि-योग फल	,,

नवाँ परिच्छेद

विषय	पृष्ठ
नौकायोग और उसका फल	१७५
कूटयोग और उसका फल	,,
छत्रयोग और उसका फल	१७६
कार्मुकयोग और उसका फल	,,
वज्र, यव, मिश्र और पद्म-योग तथा उनके फल	१७७
शकट और विहंगयोग तथा उनके फल ...	१७८
जलधि और चक्रयोग तथा उनके फल ...	१७९
हल और शृंगाटकयोग तथा उनके फल ...	,,
यूप, बाण, शक्ति और दण्ड-योग तथा उनके फल	१८०
अर्धचन्द्र और गदायोग तथा उनके फल ...	१८१
गोल, युग, शूल, केदार, पाश, दामिनी और वीणायोग तथा उनके फल	१८२
नल, मुसल और रज्जु-योग तथा उनके फल	१८४
माला और सर्पयोग तथा उनके फल ...	१८५
धान्यादिविश्वाज्ञान प्रकार	,,
ध्रुवांक	१८७
दशा-भुक्त-भोग्यविचार ...	,,
उच्चस्थ ग्रहफल ...	१८८
सूर्यादि का परमोच्चांश ...	१९१

ग्रंथ समाप्त ।

श्रीगणेशाय नमः ।

लग्न-चन्द्रिका

(भाषा-टीका-सहित)

पहला परिच्छेद ।

मंगलाचरण ।

तमिस्रया जगद् ग्रस्तं यो जीवयति भूतले ।
तं वन्दे परमानन्दं सर्वसाक्षिणमीश्वरम् ॥ १ ॥

इस ग्रंथ के आचार्य, ज्योतिर्विद् पं० काशिनाथजी, ग्रंथ के निर्विघ्न समाप्त होने के लिये ग्रंथ के आरंभ में जगत्पालक श्रीसूर्यनारायणजी की वंदना करते हैं—

जो परमात्मा, अंधकारग्रस्त जगत् का पृथ्वीतल में (सूर्यरूप से) पालन करते हैं, उस सर्व-साक्षी और परमानंद-स्वरूप श्रीसूर्यदेव की मैं (काशिनाथ) वंदना करता हूँ ॥ १ ॥

बारह भावों की संज्ञाएँ ।

तनुर्धनं च भ्राता च सुहृत्पुत्रो रिपुः स्त्रियः ।
मृत्युश्च धर्मः कर्मायो व्ययो भावाः प्रकीर्तिताः ॥२॥

तनु[१], धन[२], भ्राता[३], सुहृत्[४], पुत्र[५], रिपु[६], स्त्री[७], मृत्यु[८], धर्म[९], कर्म[१०], आय[११] और व्यय[१२] ये बारह भाव कहे गए हैं ॥ २ ॥

मेष आदि बारह राशियों की संज्ञाएँ ।

विषमोऽथ समः पुंस्त्री क्रूरः सौम्यश्च नामतः ।
चरः स्थिरो द्विस्वभावो मेषाद्या राशयः क्रमात् ॥ ३ ॥

मेष आदि बारह राशियों में क्रम से सम और विषम अर्थात् मेष विषम, वृष सम, फिर मिथुन विषम, कर्क सम, ऐसे ही बारहों राशियों को जानो । एवं पुरुष और स्त्री अर्थात् मेष पुरुष, वृष स्त्री, मिथुन पुरुष, कर्क स्त्री, ऐसे ही क्रम से जानना चाहिए । तथा क्रूर और सौम्य अर्थात् मेष क्रूर, वृष सौम्य, मिथुन क्रूर, कर्क सौम्य, ऐसे ही क्रम से बारहों राशियों को जानो । इसी प्रकार चर, स्थिर और द्विस्वभाव अर्थात् मेष चर, वृष स्थिर और मिथुन द्विस्वभाव, ऐसे ही कर्क चर, सिंह स्थिर, कन्या द्विस्वभाव, इसी तरह बारहों राशियों को जानो ॥ ३ ॥

बारहों भावों की संज्ञाएँ ।

दुश्चिक्यं स्यात्तृतीयं च सुखं सद्म चतुर्थकम् ।
बन्धुसंज्ञं च पातालं हिबुकं पञ्चमं च धीः ॥ ४ ॥
द्यूनं द्युनमथास्तं च यामित्रं सप्तमं स्मृतम् ।
दशमं त्वम्बरं मध्यं छिद्रं स्यादष्टमं गृहम् ॥ ५ ॥
एकादशं भवेल्लाभः सर्वतोभद्रमेव च ।
व्ययो रिष्फं द्वादशं च त्रिकोणं नवपञ्चमे ॥ ६ ॥
त्रिषष्ठदशलाभानां भवेदुपचयाख्यकम् ।
चतुर्थाष्टमयोः संज्ञा चतुरस्रं स्मृता बुधैः ॥ ७ ॥
केन्द्रचतुष्टयकण्टकसंज्ञाऽऽद्यचतुर्थसप्तमदशमानाम् ।
परतः पणफरमापोक्लिमं च वेद्यं यथाक्रमतः ॥ ८ ॥

तीसरे घर को **दुश्चिक्य** और **तृतीय**; चौथे घर को **सुख, सद्म, बंधु, पाताल** और **हिबुक**; पाँचवें घर को **धी** (बुद्धि); सातवें घर को **घून, द्युन, अस्त, यामित्र** और **सप्तम**; दशवें घर को **दशम, अंबर,** और **मध्य**; आठवें घर को **छिद्र** और **अष्टम**; ग्यारहवें घर को **एकादश, लाभ** और **सर्वतोभद्र**; ऐसे ही बारहवें घर को **व्यय, रिष्फ** और **द्वादश**; नवें और पाँचवें घर को **त्रिकोण**; तीन, छः, दश और ग्यारह इन घरों को **उपचय**; चतुर्थ और अष्टम घर को **चतुरस्र**; एक, चार, सात और दश इन घरों को **केन्द्र, चतुष्टय** और **कण्टक**; दो, पाँच, आठ और ग्यारह इन घरों को **पणफर**; ऐसे ही तीन, छः, नव और बारह को '**आपोक्लिम**' कहते हैं ॥ ४-८ ॥

वर्गोत्तम नवांशक और होरा।

वर्गोत्तमनवमांशाश्चरादिषु प्रथममध्यान्त्याः ।
होरा विषमेऽर्केन्द्वोःसमराशौ चन्द्रसूर्ययोः क्रमतः॥९॥

चर आदि मेष से बारह राशियों में क्रम से प्रथम, मध्य और अन्त्य (होनेवाले) वर्गोत्तम नवांशक कहलाते हैं । एवं विषम राशियों में पहले सूर्य की होरा, फिर चन्द्र की होरा होती है, और सम राशियों में पहले चन्द्रमा की, फिर सूर्य की होरा क्रम से होती है ॥ ९ ॥

द्वादशांश, द्रेष्काण और पृष्ठोदय आदि संज्ञक लग्न ।

स्वगृहाद्द्वादशभागा द्रेष्काणाः प्रथमपञ्चनवमानाम् ।
मेषाद्याश्चत्वारः सधन्विमकराः क्षपाबला ज्ञेयाः ।
पृष्ठोदया विमिथुनाः शिरसान्ये ह्युभयतो मीनः ॥१०॥

अपने घर से द्वादशभाग (द्वादशांश); और द्रेष्काण पहले १० अंश तक प्रथम राशि का फिर २० अंश तक पंचम और ३० अंश तक नवम का होता है । अर्थात् लग्न के तृतीयांश को द्रेष्काण समझना चाहिए और मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धन और मकर ये राशियाँ

रात्रि में बलवान् होती हैं । एवं मिथुन को छोड़कर और ऊपर कही हुई पाँच राशियाँ पीठ से उदय होती हैं, शेष राशि शिर से उदय होती हैं, और मीन राशि शिर और पीठ दोनों से उदय होती है ॥ १० ॥

पापग्रह और होरा-विचार ।

क्षीणचन्द्रो रविर्भौमः पापो राहुः शनिः शिखी ।
बुधोऽपि तैर्युतः पापो होरा राश्यर्द्धमुच्यते ॥ ११ ॥

क्षीण चन्द्रमा, सूर्य, मंगल, राहु, शनैश्चर और केतु ये पाप-ग्रह हैं । और इनके संग में बुध भी पापग्रह होता है । एवं राशि के आधे को होरा कहते हैं ॥ ११ ॥

ग्रहों का स्वराशि और पर-राशि में शत्रु-मित्र का विचार ।

रवीन्दुभौमगुरवो ज्ञराहुशनिभार्गवाः ।
स्वस्मिन्मित्राणि चत्वारि परस्मिञ्छत्रवः स्मृताः ॥१२॥

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और बृहस्पति ये चार अपनी राशि में मित्र हैं । और बुध, राहु, शनैश्चर और शुक्र ये चार पराई राशि में शत्रु हैं ॥ १२ ॥

उच्च ग्रहों का विचार ।

मेषे रविर्वृषे चन्द्रो मकरे च महीसुतः ।
कन्यायां रोहिणीपुत्रो गुरुः कर्के झषे भृगुः ॥ १३ ॥
शनिस्तुलायामुच्चश्च मिथुने सिंहिकासुतः ।
उच्चात्सप्तमगा नीचा राशौ वापि नवांशके ॥ १४ ॥

मेष राशि का सूर्य, वृष का चन्द्रमा, मकर का मंगल, कन्या का बुध, कर्क का बृहस्पति, मीन राशि का शुक्र, तुला का शनैश्चर और मिथुन का राहु; ये उच्च होते हैं । एवं उच्च राशि से सप्तम राशि पर नीच होते हैं । राशि वा नवांश दोनों ही में यही क्रम है । जैसे सूर्य मेष का उच्च होता है, तो सातवीं राशि अर्थात् तुला का नीच हुआ । ऐसे ही सब ग्रहों को जानना चाहिए ॥ १३-१४ ॥

शुभाशुभ-योग ।

अर्थी भोगी धनी नेता जायते मण्डलाधिपः ।
नृपतिश्चक्रवर्त्ती च रव्याद्यैरुच्चगैर्ग्रहैः ॥ १५ ॥

सूर्य आदि ग्रह यदि उच्च के होवें, तो क्रम से नीचे लिखे हुए फल को देते हैं । जैसे—सूर्य द्रव्य को, चन्द्रमा भोग को, मंगल धन को और बुध सिखलानेवाला, बृहस्पति पृथ्वी भर का राजा, शुक्र राजा और शनैश्चर तो चक्रवर्त्ती राजा कर देता है ॥ १५ ॥

त्रिभिः स्वस्थैर्भवेन्मन्त्री त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः ।
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभिरस्तंगतैर्जडः ॥ १६ ॥

तीन ग्रह स्वस्थ (पूर्ण बलवाले) होवें तो मन्त्री; तीन ग्रह उच्च के होवें तो राजा; तीन ग्रह नीच के होने से दास और तीन ही ग्रह अस्त होने से जड़ होता है ॥ १६ ॥

उदितः स्वगृहस्थश्च मित्रगेहे स्थितोऽपि वा ।
मित्रवर्गे मित्रदृष्टः स ग्रहः सबलः स्मृतः ॥ १७ ॥

उदय को प्राप्त, और अपने ही घर में स्थित वा मित्र के घर में स्थित वा मित्र ही के वर्ग में और मित्र ही करके देखा हुआ, ऐसा ग्रह बलवान् होता है ॥ १७ ॥

स्वामिना बलिना दृष्टः सबलैश्च शुभग्रहैः ।
न दृष्टो न युतः पापैः स लग्नः सबलः स्मृतः ॥ १८ ॥

बली स्वामी करके देखा हुआ, किंवा बली शुभग्रहों करके देखा गया और पाप-ग्रहों करके न देखा गया हो, और न युक्त हो, ऐसा लग्न बलवान् होता है ॥ १८ ॥

दशमे बुधसूर्यौ च भौमराहू च षष्ठगौ ।
राजयोगेऽत्र यो जातः स पुमान्नायको भवेत् ॥ १९ ॥

दशवें बुध और सूर्य हों, मंगल और राहु छठे घर में हों, तो यह राजयोग है । इसमें उत्पन्न हुआ पुरुष नायक (राजा या मन्त्री) होता है ॥ १९ ॥

आदौ जीवः शनिश्चान्ते ग्रहा मध्ये निरन्तरम् ॥
राजयोगं विजानीयात्कुटुम्बबलसंयुतः ॥ २० ॥

पहले में बृहस्पति, और अंत में शनैश्चर और बीच में शेष ग्रह हों, तो भी कुटुंब और बल करके संयुक्त राजयोग जानिए ॥ २० ॥

सहजस्थो यदा जीवो मृत्युस्थाने स्थितः सितः ।
निरन्तरं ग्रहा मध्ये राजा भवति निश्चितम् ॥ २१ ॥

जिसके तीसरे स्थान में बृहस्पति आठवें स्थान में शुक्र और बीच में निरंतर और ग्रह हों, तो वह निश्चय राजा होता है ॥ २१ ॥

जीवो वृषे सुधारश्मिर्मिथुने मकरे कुजः ।
सिंहे भवति सौरिश्च कन्यायां बुधभास्करौ ॥ २२ ॥
तुलायामसुराचार्यो राजयोगो भवेदयम् ।
अस्मिन्योगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः ॥ २३ ॥
अष्टमे द्वादशे वर्षे यदि जीवति मानवः ।
सार्वभौमस्तदा राजा जायते विश्वपालकः ॥ २४ ॥

वृष राशि में बृहस्पति, मिथुन में चन्द्रमा, मकर में मंगल, सिंह में शनैश्चर, कन्या में बुध और सूर्य, तुला में शुक्र हो तो यह भी राजयोग होता है । इस योग में उत्पन्न हुआ पुरुष महाराजा होता है । जो यह मनुष्य आठवें या बारहवें वर्ष तक जीता रहा, तो संसारभर का पालक पृथ्वीभर का राजा होवे ॥ २२-२४ ॥

एको जीवो यदा लग्ने सर्वे योगास्तदा शुभाः ।
दीर्घजीवी महाप्राज्ञो जातको नायको भवेत ॥ २५ ॥

जिसके अकेला बृहस्पति ही लग्न में हो, तो सभी योग शुभदायक होते हैं । इसमें उत्पन्न पुरुष चिर-काल तक जीनेवाला बुद्धिमान् और नायक होता है ॥ २५ ॥

धने शुक्रश्च भौमश्च मीने जीवस्तुले बुधः ।
नीचस्थौ शनिचन्द्रौ च राजयोगो विधीयते ॥ २६ ॥
अस्मिन्योगे च जाते च स राजा धनवर्जितः ।
दाता भोक्ता च विख्यातो मान्यो मण्डलनायकः॥२७॥

धन राशि में शुक्र वा मंगल, मीन राशि में बृहस्पति, तुला में बुध तथा शनैश्चर और चन्द्रमा नीच में स्थित हों, तो भी राजयोग होता है । इस योग में उत्पन्न होने से धन-रहित राजा दाता, भोग करनेवाला, प्रसिद्ध, पूज्य और मण्डलभर का नायक होता है ॥२६-२७॥

मीने शुक्रो बुधश्चान्ते धने राहुस्तनौ रविः ।
सहजे च भवेद्भौमो राजयोगो विधीयते ॥ २८ ॥

मीन राशि में शुक्र, अन्त (बारहवें) में बुध, धन में राहु, लग्न में सूर्य और तीसरे स्थान में मंगल हों, तो भी राजयोग होता है ॥२८॥

सहजे च यदा जीवो लाभस्थाने च चन्द्रमाः ।
स राजा गृहमध्यस्थो विख्यातः कुलदीपकः ॥ २९ ॥

जिसके तीसरे स्थान में बृहस्पति, ग्यारहवें चन्द्रमा होवे, वह भी घरही में स्थित, बड़ा प्रसिद्ध, कुल का दीपक (प्रकाशक) राजा होता है ॥ २९ ॥

शुभग्रहाः शुभक्षेत्रे भवन्ति यदि केन्द्रगाः ।
तदा शुभानि कर्माणि करोत्येव हि जातकः ॥ ३० ॥

शुभग्रह यदि शुभ ग्रहों के क्षेत्र में हों, अथवा केन्द्र में हों, ऐसे योग में भी उत्पन्न हुआ पुरुष शुभ (उत्तम) ही कर्म करे ॥ ३० ॥

उच्चस्थानगताः सौम्याः केन्द्रेषु च भवन्ति चेत् ।
ध्रुवं राज्यं भवेत्तस्य वंशयानां चैव पोषकः ॥ ३१ ॥

शुभग्रह उच्च राशि के हों, अथवा केन्द्र-स्थानों में हों, उस पुरुष को निश्चय राज्य होगा, और वंश का पालन करनेवाला होगा ॥ ३१ ॥

धने व्यये तथा लग्ने सप्तमे च यदा ग्रहाः ॥
छत्रयोगस्तदा ज्ञेयः स्ववंशे नायको भवेत् ॥ ३२ ॥

धन में बारहवें तथा लग्न और सप्तम में जिसके ग्रह स्थित होवें, तो छत्रयोग जानना चाहिए । इस योग में उत्पन्न हुआ पुरुष अपने वंश में श्रेष्ठ होता है ॥ ३२ ॥

स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधः सौरिः स्वराशिगः ।
अत्र जातस्य दीर्घायुः सम्पदश्च भवन्ति हि ॥ ३३ ॥

जिसके बृहस्पति अपने ही स्थान में स्थित, एवं बुध और शनैश्चर अपनी-अपनी राशि पर हों तो उसकी बहुत आयु और संपदा होवे ॥ ३३ ॥

मीने बृहस्पतिः शुक्रश्चन्द्रमाश्च यदा भवेत् ।
तत्र जातस्य राज्यं स्यात्पत्नी च बहुपुत्रिणी ॥ ३४ ॥

जिसके मीन राशि में बृहस्पति, शुक्र और चन्द्रमा होवें, उसको राज्य और उसकी स्त्री के बहुत से पुत्र होवें ॥ ३४ ॥

पञ्चमस्थो यदा जीवो दशमस्थश्च चन्द्रमाः ॥
राज्यवान् स महाबुद्धिस्तपस्वी च जितेन्द्रियः ॥ ३५ ॥

जिसके पञ्चम स्थान में बृहस्पति और दशम में चन्द्रमा हो, वह पुरुष पूज्य, महाबुद्धिमान्, तपस्वी और जितेन्द्रिय होता है ॥ ३५ ॥

सिंहे जीवस्तुलाकीटकोदंडमकरेषु च ।
ग्रहा यदा तदा जातो देशभोगी भवेन्नरः ॥ ३६ ॥

जिसके सिंह राशि में बृहस्पति हों, और तुला, कर्क, धन और मकर इन राशियों में और ग्रह हों, वह मनुष्य देशभर का राजा होता है ॥ ३६ ॥

तुलाकोदण्डमीनस्थो लग्नगः स्याच्छनैश्चरः ।
करोति भूपतेर्जन्म त्वन्यराशौ गतायुषम् ॥ ३७ ॥

तुला, धन और मीन इन राशियों पर स्थित हुआ शनि यदि लग्न में स्थित हो तो राजा होता है । जो अन्य राशि का शनि लग्न में हो, तो आयु की हीनता करता है ॥ ३७ ॥

विद्यास्थाने यदा सौम्यः कर्मस्थाने च चन्द्रमाः ।
धर्मस्थाने यदा सौम्या राजयोगः स उच्यते ॥ ३८ ॥

पाँचवें स्थान में बुध हो और दशवें में चन्द्रमा हो, और नवें में भी शुभग्रह ही हों, तो भी राजयोग होता है ॥ ३८ ॥

मकरे च घटे मीने वृषे मिथुनमेषयोः ।
ग्रहास्तदात्र विख्यातो राजा भवति मानवः ॥ ३९ ॥

मकर, कुंभ, मीन, वृष, मिथुन और मेष; इन स्थानों में जिसके ग्रह हों, वह भी प्रसिद्ध राजा होता है ॥ ३९ ॥

बुधभार्गवजीवार्कियुक्तो राहुश्चतुष्टये ।
कुरुते कमलारोग्यं पुत्रं मानादिकं फलम् ॥ ४० ॥

बुध, शुक्र, बृहस्पति और शनैश्चर; इन चारों ग्रहों करके युक्त राहु केन्द्र-स्थान में बैठा हो तो लक्ष्मी, आरोग्य, पुत्र और सन्मान आदि की प्राप्तिरूप फल को करता है ॥ ४० ॥

चतुर्थे भवने शुक्रो गुरुश्चन्द्रो धरासुतः ।
रविसौरियुताः सन्ति राजा भवति निश्चितम् ॥ ४१ ॥

जिसके चौथे स्थान में शुक्र, बृहस्पति, चन्द्रमा, मंगल, सूर्य और शनैश्चर होवें, वह निश्चय राजा हो ॥ ४१ ॥

अष्टमे च व्यये क्रूरो मध्यगौ क्रूरसौम्यकौ।
राजयोगेऽत्र यो जातश्चत्वारिंशत्स जीवति ॥ ४२ ॥

जिसके आठवें और बारहवें क्रूरग्रह और मध्य में क्रूरग्रह और शुभग्रह दोनों हों तो यह भी राजयोग है। और इस राजयोग में उत्पन्न हुआ पुरुष चालीस वर्ष जीता है ॥ ४२ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ।
कर्मस्थाने भवेद्भौमो राजयोगो विधीयते ॥ ४३ ॥

लग्न में शनैश्चर तथा चन्द्रमा हो और त्रिकोण अर्थात् नवें पाँचवें बृहस्पति और सूर्य एवं दशवें स्थान में मंगल हो तो भी राजयोग होता है ॥ ४३ ॥

नवमे च यदा सूर्यः स्वगृहस्थो भवेद्यदा।
तस्य जीवति न भ्राता स्यादेकोऽपि नृपैः समः ॥४४॥

जिसके नवें सूर्य अपने ही घर में हो, उसके भाई नहीं जीवें, जो एक भी कोई भाई रहे, तो वह राजाओं के तुल्य हो ॥ ४४ ॥

द्वित्रितुर्यसुते षष्ठे कर्मण्यपि यदा ग्रहाः।
राजयोगं विजानीयाज्जातस्तत्र नृपो भवेत् ॥ ४५ ॥

जिसके दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवें, छठे और दशवें घरों में ग्रह होवें, तो यह भी राजयोग है। इस राजयोग में उत्पन्न हुआ पुरुष राजा होवे ॥ ४५ ॥

लग्ने क्रूरो व्यये सौम्यो धने क्रूरश्च जायते।
राजयोगो[1] न राजा च दाता दारिद्र्यभाक् सदा ॥४६॥

जिसके लग्न में क्रूरग्रह और बारहवें शुभग्रह एवं दूसरे भी क्रूरग्रह हों, तो यह भी राजयोग ही है; परतु इस योग में राजा न होवे, दाता होवे और सदा ही दरिद्री रहे ॥ ४६ ॥

१—'राजयोगेऽत्र यो जातो दरिद्रो धनवर्जितः' पाठांतर मिलता है।

लग्ने[1] क्रूरो धने सौम्यो यदा वै जातको भवेत् ।
सप्तमे भवने क्रूरः परिवारक्षयङ्करः ॥ ४७ ॥

जिसके लग्न में क्रूरग्रह, दूसरे में शुभग्रह और सातवें भी क्रूरग्रह ही हों, इसमें उत्पन्न हुआ पुरुष परिवार का नाश करनेवाला होवे ॥ ४७ ॥

धने[2] चन्द्रश्च सौम्यश्च मेषे जीवो यदा भवेत् ।
दशमे राहुशुक्रौ च राजयोगो विधीयते ॥ ४८ ॥

जिसके दूसरे स्थान में चन्द्रमा और बुध हो, और मेषराशि में बृहस्पति हो तथा दशवें स्थान में राहु और शुक्र हों, तो भी राजयोग होता है ॥ ४८ ॥

सिंहे जीवोऽथ कन्यायां भार्गवो मिथुने शनिः ।
स्वक्षेत्रे हिबुके भौमः स पुमान्नायको भवेत् ॥ ४९ ॥

जिसके सिंहराशि में बृहस्पति, कन्याराशि में शुक्र, मिथुनराशि में शनैश्चर और अपने ही चौथे स्थान में मंगल हो तो वह भी पुरुष श्रेष्ठ होता है ॥ ४९ ॥

शनिचन्द्रौ च कन्यायां सिंहे जीवो घटे तमः ।
मकरे च कुजस्तत्र जातः स्याद्विश्वपालकः ॥ ५० ॥

जिसके कन्याराशि में शनैश्चर वा चन्द्रमा, सिंहराशि में बृहस्पति, कुम्भराशि में राहु और मकर में मंगल हो तो इसमें भी उत्पन्न हुआ पुरुष संसार का पालन करनेवाला (राजा) होवे ॥ ५० ॥

---

१ । २—इन दोनों श्लोकों के स्थान में पाठांतर मिलता है—

‘ लग्ने क्रूरो व्यये सौम्यो धने क्रूरश्च जायते ।
राजयोगेऽत्र यो जातो दरिद्रो धनवर्जितः ॥ ४७ ॥
चापे सौरिश्च चन्द्रश्च मेषे जीवो यदा भवेत् ।
दशमे राहुशुक्रौ च राजयोगे नृपो भवेत् ॥ ४८ ॥

शुक्रो जीवो रविर्भौमश्चापे मकरकुम्भयोः ।
मीने च वत्सरे त्रिंशे[1] जातः स्यात् सर्वकर्मकृत् ॥ ५१ ॥

जिसके धनराशि में शुक्र, मकरराशि में बृहस्पति, कुम्भ राशि में सूर्य और मीनराशि में मंगल हो तो इसमें उत्पन्न हुआ पुरुष तीस वर्ष में संपूर्ण कर्मों का कर्ता होवे ॥ ५१ ॥

चतुर्षु केन्द्रस्थानेषु सौम्यपापग्रहस्थितिः ।
चतुःसागरयोगोऽयं राज्यदो धनदो भवेत् ॥ ५२ ॥

जिसके चारों केन्द्र स्थानों में अर्थात् १ । ४ । ७ । १० में शुभ-ग्रह और पापग्रह दोनों हों तो यह चतुस्सागर योग कहलाता है, यह योग राज्य और धन का देनेवाला होता है ॥ ५२ ॥

कर्कलग्ने जीवयुक्ते लाभे चन्द्रज्ञभार्गवाः ।
मेषे भानौ च यो जातः स राजा विश्वपालकः ॥ ५३ ॥

जिसके कर्क लग्न में बृहस्पति, ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा, बुध और शुक्र, मेषराशि में सूर्य हों, तो इसमें उत्पन्न हुआ पुरुष संसार का पालन करनेवाला राजा होता है ॥ ५३ ॥

कर्मस्थाने यदा जीवो बुधः शुक्रस्तथा शशी ।
सर्वकर्माणि सिद्ध्यन्ति राजमान्यो भवेन्नरः ॥ ५४ ॥

जिसके दशवें स्थान में बृहस्पति, बुध, शुक्र तथा चन्द्रमा हो, उस पुरुष के संपूर्ण कर्म सिद्ध होवें और राजाओं में पूज्य होवे ॥ ५४ ॥

षष्ठेऽष्टमे पञ्चमे च नवमे द्वादशे तथा ।
सौम्यक्रूरग्रहैर्योगे राजमान्यः सकष्टकः ॥ ५५ ॥

जिसके छठे, आठवें, पाँचवें, नवें, बारहवें शुभग्रह और क्रूरग्रह हों वह भी राजाओं में पूज्य हो, परंतु कष्ट-युक्त रहे ॥ ५५ ॥

पञ्चमे च यदा षष्ठे चाष्टमे नवमे क्रमात् ।
भौमराहुसितार्काः स्युर्जातोऽत्र कुलदीपकः ॥ ५६ ॥

१—'विंशे' पाठांतर है ।

जिसके पाँचवें मंगल, छठे राहु, आठवें शुक्र, नवें सूर्य हों, तो इसमें जन्म लेनेवाला पुरुष भी कुलदीपक होता है ॥ ५६ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रश्चाष्टमे भार्गवो यदा।
जायते च तदा राजा मानी पत्नीरतः सदा ॥ ५७ ॥

जिसके लग्न में शनैश्चर तथा चन्द्रमा और आठवें शुक्र हो, वह भी पुरुष अभिमानी और स्त्री में रत राजा होवे ॥ ५७ ॥

मिथुनस्थो यदा राहुः सिंहस्थो भूमिनन्दनः।
अत्र जातः पितुर्द्रव्यं प्राप्नोति सकलं नृपः ॥ ५८ ॥

जिसके मिथुनराशि में राहु और सिंह में मंगल हो, इसमें उत्पन्न हुआ पुरुष राजा और पिता के संपूर्ण द्रव्य को प्राप्त होवे ॥ ५८ ॥

चापार्द्धे शशिना युक्तो यदि सूर्यः प्रजायते।
लग्ने च सबलो मन्दो मकरे च कुजो भवेत् ॥ ५६ ॥
अत्र योगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः।
दूरादेव नमन्त्यस्य प्रतापैश्चरणं नृपाः ॥ ६० ॥

जिसके धनराशि के आधे में चन्द्रमा-युक्त सूर्य लग्न में बली शनैश्चर और मकरराशि में मंगल होवे, तो इस योग में उत्पन्न हुआ पुरुष महाराजा होता है और इसके प्रताप से राजा लोग दूरही से चरणों में शिर नवाते हैं ॥ ५९-६० ॥

उच्चाभिलाषी सविता त्रिकोणस्थो यदा भवेत्।
अपि नीचकुले जातो राजा स्याद्धनपूरितः ॥ ६१ ॥

जिसके उच्च का अभिलाषी सूर्य त्रिकोण अर्थात् नवें या पाँचवें हो, वह नीचकुल में भी उत्पन्न हुआ पुरुष धन-युक्त राजा होता है ॥ ५१ ॥

एकादशे यदा सर्वे ग्रहाः स्युर्दशमेऽपि वा।
विलग्ने सम्मुखे वापि कारकः परिकीर्तितः ॥ ६२ ॥

उत्पन्नः कारके योगे नीचोऽपि नृपतां व्रजेत् ।
राजवंशसमुत्पन्नो राजा तत्र न संशयः ॥ ६३ ॥

जिसके ग्यारहवें अथवा दशवें अथवा लग्न किंवा लग्न के सम्मुख सातवें घर में संपूर्ण ग्रह हों, तो कारक योग होता है। इस कारक-योग में उत्पन्न हुआ पुरुष नीच भी होवे, तो राज्य को प्राप्त होता है और राजवंश में उत्पन्न हो तो निःसंदेह राजा होवे ॥ ६२-६३ ॥

लग्नतश्चान्यतो वापि क्रमेण पतिता ग्रहाः ।
एकावली समाख्याता महाराजो भवेन्नरः ॥ ६४ ॥

लग्न से अथवा अन्य घर से क्रमशः जिसके ग्रह पड़ते ही गए हों अर्थात् मध्य में कोई घर खाली न हो, तो एकावली नामक योग होता है। इसमें उत्पन्न पुरुष महाराजा ही होता है ॥ ६४ ॥

धनस्थाने यदा शुक्रो दशमे च बृहस्पतिः ।
षष्ठे[1] च सिंहिकापुत्रो राजा भवति विक्रमी ॥ ६५ ॥

जिसके दूसरे स्थान में शुक्र, दशवें घर में बृहस्पति और छठे राहु हो, तो पराक्रमी राजा होवे ॥ ६५ ॥

चतुर्ग्रहा एकगताः पापाः सौम्या भवन्ति चेत् ।
भ्रातृधीधर्मलग्नार्थे राजयोगो भवेदयम् ॥ ६६ ॥

जिसके चार पापग्रह किंवा शुभग्रह तीसरे, पाँचवें, नवें, लग्न और दूसरे इन घरों में से किसी स्थान में इकट्ठे होकर बैठे हों, तो भी राजयोग होता है ॥ ६६ ॥

त्रिकोणे सप्तमे लग्ने भवन्ति च यदा ग्रहाः ।
हंसयोगं विजानीयात् स्ववंशस्यात्र पालकः ॥ ६७ ॥

१—पुस्तकांतर में—
'षष्ठेऽष्टमे सिंहिकाजो राजा भवति विक्रमात् ।' यह पाठ मिलता है।

जिसके नवें, पाँचवें, सातवें अथवा लग्न में सब ग्रह होवें, तो हंसयोग होता है, इस योग में उत्पन्न हुआ पुरुष अपने वंश का पालन करनेवाला होता है ॥ ६७ ॥

सर्वग्रहैर्यदा चन्द्रो विनालिं च निरीक्षितः ।
षष्ठेऽष्टमे च यामित्रे स दीर्घायुर्धरापतिः ॥ ६८ ॥

यदि वृश्चिक राशि को छोड़कर अन्य किसी राशि का चन्द्रमा छठे, आठवें किंवा सातवें घर में स्थित एवं सब ग्रहों करके देखा जाता हो, तो इस योग में उत्पन्न पुरुष बड़ी आयुवाला राजा होता है ॥६८॥

षष्ठेऽष्टमे द्वादशे च द्वितीये च यदा ग्रहाः ।
सिंहासनाख्ययोगेऽस्मिन् राजसिंहासने वसेत् ॥६९॥

छठे, आठवें, बारहवें और दूसरे घर में यदि ग्रह पड़े हों, तो सिंहासनयोग होता है । इस योग में उत्पन्न पुरुष सिंहासन (राजगद्दी) में बैठता है ॥ ६९ ॥

लग्ने शुक्रबुधौ न स्तः केन्द्रे नास्ति बृहस्पतिः ।
दशमेऽङ्गारको नास्ति स जातः किं करिष्यति ॥ ७० ॥

जिसके लग्न में शुक्र और बुध न हो और केन्द्र में बृहस्पति न हो और दशवें में मंगल भी न हो, तो वह पुरुष उत्पन्न होकर क्या करेगा अर्थात् कुछ भी न कर सकेगा ॥ ७० ॥

अष्टमस्था यदा क्रूराः सौम्या लग्ने स्थिता ग्रहाः ।
ध्वजयोगेऽत्र यो जातः स पुमान्नायको भवेत् ॥ ७१ ॥

जिसके आठवें घर में क्रूरग्रह और लग्न में शुभग्रह होवें, तो ध्वजयोग होता है । और इस योग में उत्पन्न हुआ पुरुष श्रेष्ठ होता है ॥७१॥

रन्ध्रस्थाने[1] यदा पापाः केन्द्रस्थाने शुभग्रहाः ।
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य राजसन्मानमेव च ॥ ७२ ॥

१—'रन्ध्रस्थाने' के स्थान में 'षष्ठस्थाने' पाठांतर है ।

जिसके अष्टम स्थान में पापग्रह और केन्द्र में शुभग्रह हों, उसकी सब सिद्धियाँ हों, और राजाओं में मान होवे ॥ ७२ ॥

मेषलग्ने यदा भानुश्चतुर्थे च बृहस्पतिः।
दशमे च कुजो जातो विश्वस्याधिपतिर्भवेत् ॥ ७३ ॥

जिसके मेष-लग्न में सूर्य, चौथे घर में बृहस्पति और दशवें मंगल हों तो इसमें उत्पन्न हुआ पुरुष संसार का स्वामी होता है ॥ ७३ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ।
कर्मस्थाने भवेद्भौमो राजयोगोऽभिधीयते ॥ ७४ ॥

जिसके लग्न में शनैश्चर तथा चन्द्रमा, त्रिकोण अर्थात् नवें पाँचवें में बृहस्पति और सूर्य और दशवें स्थान में मंगल हो, तो भी राजयोग होता है ॥ ७४ ॥

केन्द्रे स्वोच्चस्थिते सौम्ये राजलक्ष्मीपतिर्भवेत्।
केन्द्रे पापे स्वोच्चसंस्थे राजा स्याद्दुहितुर्गृहे[1] ॥ ७५ ॥

उच्चराशि के शुभग्रह केन्द्र में होवें, तो राजलक्ष्मी का स्वामी होता है। और उच्चराशि के पापग्रह केन्द्र में बैठे हों, तो भी कन्या के घर में राजा होता है ॥ ७५ ॥

बली सौम्यग्रहो लग्नं केन्द्रस्थो यदि वीक्षते।
तदा निहन्त्यरिष्टानि तमः सूर्योदयो यथा ॥ ७६ ॥

बली शुभग्रह केन्द्र में बैठा हो और लग्न को देखता हो, तो अरिष्टों को अर्थात् संपूर्ण दुःखादिकों को नाश कर दें, जैसे सूर्य का उदय अन्धकार को नाश कर देता है ॥ ७६ ॥

चतुष्केन्द्रगताः सौम्याः पापा द्वादशषष्ठगाः।
स राजा विश्वविख्यातो ध्वजच्छत्रविभूषितः ॥ ७७ ॥

जिसके चारों केन्द्र स्थानों में शुभग्रह हों और पापग्रह बारहवें वा

१—'दुहितुर्गृहे' के स्थान में 'धनवर्जितः' पाठांतर है।

छठे हों, तो संसार में विख्यात ध्वजा और छत्र करके शोभित राजा होवे ॥ ७७ ॥

लग्नादष्टमगो भौमस्त्रिकोणे जीवगो रविः ।
धार्मिको जायते राजा धनवानपि जायते ॥ ७८ ॥

लग्न से आठवें स्थान में जिसके मंगल हो और नवें वा पाँचवें स्थान में बृहस्पति वा सूर्य हो, तो धर्मवान् और धनी राजा होवे ॥७८॥

लग्नात्तु पञ्चमस्थाने यदा सूर्यबृहस्पती ।
तदा विद्याधनैः पूर्णो जायते जातकोत्तमः ॥ ७९ ॥

जिसके लग्न से पाँचवें स्थान में सूर्य और बृहस्पति हों, तो श्रेष्ठ हो, एवं विद्या और धन करके परिपूर्ण उत्तम मनुष्य हो ॥ ७९ ॥

एकोऽपि यदि केन्द्रस्थः शुक्रो जीवोऽथवा बुधः ।
जायते च तदा बालो धनाढ्यो वेदपारगः ॥ ८० ॥

जिस बालक के शुक्र, बृहस्पति अथवा बुध इनमें से एक कोई भी केन्द्रस्थान में स्थित हो, तो वह बालक धनी और वेद के पार का जानेवाला होता है ॥ ८० ॥

द्वित्रिसौम्याः खगा नीचा व्ययभावेऽथवा पुनः ।
भवन्ति धनिनः षष्ठे निधने चैव भिक्षुकाः ॥ ८१ ॥

जिसके दो या तीन शुभग्रह नीच राशि के हों, अथवा बारहवें घर में स्थित हों, अथवा छठे और आठवें घर में स्थित हों, तो धनी लोग भी भिक्षुक हो जाते हैं ॥ ८१ ॥

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्
तद्राशिनाथश्च तदुच्चनाथः ।
भवेत्त्रिकोणे यदि केन्द्रवर्ती
राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती ॥ ८२ ॥

जन्म समय में जो ग्रह नीच राशि का हो, उस ग्रह के राशि का

स्वामी, या उच्च राशि का स्वामी यदि त्रिकोण (९-५) में अथवा केन्द्र में बैठा हो, तो वह मनुष्य धर्मवान् चक्रवर्ती राजा होता है॥८२॥

षष्ठे क्रूरे नरो जातः पापशत्रुविमर्दकः[1]।
षष्ठे सौम्ये सदा रोगी षष्ठे चन्द्रस्तु मृत्युदः॥ ८३॥

जिसके छठे घर में क्रूर ग्रह पड़ा हो, तो वह मनुष्य पाप और शत्रुओं का नाश करनेवाला हो, और छठे घर में शुभग्रह हो, तो सदा रोगी रहे, और छठे घर में चन्द्रमा हो, तो मृत्यु का देनेवाला होता है॥ ८३॥

लग्नात्तृतीयभवने यदि सोमसुतो भवेत्।
द्वौ पुत्रौ कन्यकास्तिस्रो जायन्ते नात्र संशयः॥ ८४॥

जिसके लग्न से तीसरे स्थान में बुध होवे, उस पुरुष के दो पुत्र और तीन कन्याएँ होवें, इसमें संशय नहीं है॥ ८४॥

लग्नात्तृतीयभवने बली वाचस्पतिर्यदा।
पञ्च पुत्रास्तदा तस्य जायन्ते मानवस्य वै॥ ८५॥

जिसके लग्न से तीसरे स्थान में बली बृहस्पति होवे, उस पुरुष के पाँच पुत्र होवें॥ ८५॥

लग्नात्तृतीयभवने बली शुक्रो यदा भवेत्।
कन्याद्वयं त्रयः पुत्रा जायन्ते तस्य निश्चितम्॥ ८६॥

जिसके लग्न से तीसरे स्थान में बली शुक्र हो, उसके दो कन्याएँ और तीन पुत्र अवश्य होवें॥ ८६॥

लग्नात्तृतीयभवने शनिचन्द्रौ यदा स्थितौ।
श्यामवर्णस्तदा बालो भ्रातृहीनस्तु जायते॥ ८७॥

लग्न से तीसरे स्थान में जिसके शनैश्चर और चन्द्रमा स्थित हो, तो उसके श्यामवर्ण का एकही बालक होवे॥ ८७॥

१—'पापशत्रुविमर्दकः' के स्थान में 'शत्रुपक्षविमर्दकः' पाठांतर मिलता है।

लग्नात्तृतीयभवने राहुयुक्तो यदा शशी ।
भ्रातृहीनो भवेद्बालो लक्ष्मीवानपि जायते ॥ ८८ ॥

लग्न से तीसरे स्थान में राहु-युक्त चन्द्रमा होवे, उसके लक्ष्मी-युक्त और भाई करके रहित बालक होवे ॥ ८८ ॥

लग्नात्तृतीयभवने पञ्चमे वा धरासुतः ।
म्रियते पुत्रदुःखेन नारी वा पुरुषोऽपि वा ॥ ८९ ॥

जिसके लग्न से तीसरे वा पाँचवें स्थान में मंगल हो, उसकी स्त्री अथवा स्वयं पुत्र के दुःख से मर जावे ॥ ८९ ॥

लग्नात्सप्तमगेहस्थो यदि शुक्रो बली भवेत् ।
कन्याद्वयं त्रयः पुत्रा धनवन्तो भवन्ति हि ॥ ९० ॥

जिसके लग्न से सप्तमस्थान में बली शुक्र हो, उसके दो कन्याएँ और तीन पुत्र बड़े धनी होवें ॥ ९० ॥

सिंहलग्ने यदा शुक्रः शनिर्वापि व्यवस्थितः ।
तत्र जातस्य बालस्य नेत्रनाशो हि जायते ॥ ९१ ॥

जिसके सिंह लग्न में शुक्र अथवा शनैश्चर स्थित हो, उस बालक के नेत्र का नाश हो जावे ॥ ९१ ॥

सूर्योऽष्टमे रिपौ चन्द्रो धने भौमो व्यये शनिः ।
ग्रहदोषेण नेत्राणामन्धतां जनयन्त्यमी ॥ ९२ ॥

जिसके आठवें सूर्य, छठे चन्द्रमा, दूसरे मंगल, बारहवें घर में शनैश्चर हो, तो ग्रहदोष करके बालक के नेत्रों का नाश कर दें॥९२॥

शुभवर्गोत्तमे जन्म व्ययस्थाने च सद्ग्रहे ।
अशून्येषु च केन्द्रेषु कारकाख्यग्रहेषु च ॥ ९३ ॥

शुभवर्गोत्तम लग्न में जिसका जन्म हो और बारहवें स्थान में शुभग्रह हो और अशून्य केन्द्र अर्थात् केन्द्रस्थान ग्रहों से युक्त हों, कारकसंज्ञक ग्रह हो, तो राजयोग होता है ॥ ९३ ॥

सूर्ये केन्द्रे राजसेवी वैश्यवृत्तिर्निशाकरे ।
शस्त्रवृत्तिः कुजे शूरो बुधे चाध्यापको भवेत् ॥ ६४ ॥

केन्द्र में सूर्य के होने से राजा का सेवक, चन्द्रमा केन्द्र में हो तो वैश्यवृत्ति करनेवाला, मंगल केन्द्र में हो तो शूर वीर और शस्त्र की वृत्ति करनेवाला, बुध केन्द्र में हो, तो पढ़ानेवाला होवे ॥ ६४ ॥

स्वानुष्ठानरतो नित्यं दिव्यबुद्धिर्नरो गुरौ ।
शुक्रे विद्यार्थसम्पन्नो नीचसेवी शनैश्चरे ॥ ६५ ॥

इति पुरुषराजयोगाः ।

बृहस्पति केन्द्र में हो, तो अपने अनुष्ठान में रत अच्छी बुद्धिवाला हो, और शुक्र केन्द्र में हो, तो विद्या और द्रव्य-युक्त और शनैश्चर केन्द्र में हो, तो नीच की सेवा करनेवाला हो ॥ ६५ ॥

पुरुषराजयोग समाप्त ।

स्त्री-राजयोग ।

केन्द्रे च सौम्या यदि पृष्ठभाजः
पापाः कलत्रे च मनुष्यराशौ ।
राज्ञी भवेत् स्त्री बहुकोशयुक्ता
नित्यं प्रशान्ता च सुपुत्रिणी च ॥ ६६ ॥

जिस स्त्री के केन्द्रस्थान में शुभग्रह पृष्ठोदय संज्ञक राशि के हों और पापग्रह मनुष्यराशि के होकर सातवें स्थान में हों, तो वह स्त्री शांत स्वभाव और खजाना और पुत्रों करके युक्त रानी होवे ॥ ६६ ॥

बुधे विलग्ने यदि तुंगसंस्थे
लाभस्थितो देवपुरोहितश्च ।
नरेन्द्रपत्नी वनिताप्रसङ्गे
तदा प्रसिद्धा भवतीह भूमौ ॥ ६७ ॥

जिस स्त्री के उच्च का बुध लग्न में हो और ग्यारहवें घर में बृहस्पति हो, तो वह स्त्री रानी और स्त्री-प्रसंग में पृथ्वी पर प्रसिद्ध होवे ॥ ९७ ॥

एकोऽपि जीवो रसवर्गशुद्धः
केन्द्रे यदा चन्द्रनिरीक्षितश्च ।
राज्ञी भवेत् स्त्री सधना सपुत्रा
रूपान्विता पीननितम्बबिम्बा ॥ ९८ ॥

जिसके एक केवल षड्वर्ग में शुद्ध बृहस्पति ही केन्द्र में हो और चन्द्रमा करके देखा गया हो वह रानी और धन, पुत्र, रूप और मोटे नितंबवाली हो ॥ ९८ ॥

कर्कोदये सप्तमगे पतंगे
जीवेन दृष्टे परिपूर्णदेहा ।
विद्याधरी चात्र भवेत्प्रधाना
राज्ञी गतारिर्बहुपुत्रपौत्रा ॥ ९९ ॥

जिसके कर्क लग्न के उदय में सप्तमस्थान में बृहस्पति करके देखे हुए सूर्य हों उस रानी के परिपूर्ण देह हो और विद्यायुक्त, प्रधान, शत्रुरहित, बहुत पुत्र-पौत्रों करके युक्त होवे ॥ ९९ ॥

षड्वर्गशुद्धैस्त्रिभिरेव राज्ञी
चतुर्भिरंशैश्च तथैकपत्नी ।
पञ्चादिभिर्देवविमानभाजा
त्रैलोक्यनाथप्रमदा तदा स्यात् ॥ १०० ॥

षड्वर्ग शुद्ध में से जिसके तीन वर्ग शुद्ध हों, वह रानी हो, और चार वर्गों से पृथ्वी में एक ही स्त्री एवं पाँच आदि वर्ग शुद्ध से देवविमान में बैठनेवाली त्रैलोक्यनाथ की स्त्री हो ॥ १०० ॥

लाभस्थितः शीतकरो भृगुश्च
कलत्रगः सोमसुतेन युक्तः ।
जीवेन दृष्टो भवतीह राज्ञी
ख्याता धरण्यां सकलैः स्तुता च ॥ १ ॥

जिसके ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा और सप्तम में बुध-युक्त शुक्र बृहस्पति करके देखा जाता हो, तो पृथ्वी में प्रसिद्ध सब करके स्तुति की गई रानी हो ॥ १ ॥

स्त्रीपुंसयोः फलं तुल्यं जातके किन्तु सप्तमे ।
सौभाग्यं चन्द्रलग्नाभ्यां वपुराकृतिरुच्यते ॥ २ ॥

जातक ग्रंथों में सातवें घर के ग्रह से स्त्री पुरुषों का फल तुल्य ही कहा गया है । और चंद्रमा और लग्न से सौभाग्य और शरीर की आकृति, ये सब कहे जाते हैं ॥ २ ॥

स्त्री-राजयोग समाप्त ।

कर्मस्थाने निजक्षेत्रे[1] भौमशुक्रबुधैर्युतः ।
यदि राहुर्भवेत्तस्य क्षणे वृद्धिः क्षणे क्षयः ॥ ३ ॥

जिसके अपने क्षेत्र दशवें स्थान में मंगल, शुक्र और बुध करके युक्त राहु होवे, तो वह क्षण में वृद्धि और क्षण में नाश हो ॥ ३ ॥

होरायां द्वादशे राशौ स्थितो यदि दिवाकरः ।
करोति दक्षिणे काणं वामनेत्रे च चन्द्रमाः ॥ ४ ॥

होरा में, बारहवीं राशि में जिसके सूर्य स्थित हो, तो दाहिने नेत्र को काना करे और जो चन्द्रमा स्थित हो, तो बाएँ नेत्र का विनाश करे ॥ ४ ॥

१—' निजक्षेत्रे ' के स्थान में ' च लग्ने वा ' पाठ भी मिलता है ।

भौमक्षेत्रे यदा जीवो जीवक्षेत्रे च[1] भूसुतः ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ५ ॥

जिस बालक के मंगल के स्थान में बृहस्पति हो और बृहस्पति के स्थान में मंगल हो, तो उस बालक की मृत्यु निःसंदेह बारहवें वर्ष में हो ॥ ५ ॥

धनस्थाने यदा भौमः शनैश्चरसमन्वितः ।
सहजे च भवेद्राहुर्भ्राता तस्य न जीवति ॥ ६ ॥

जिसके दूसरे स्थान में शनैश्चर-युक्त मंगल और तीसरे में राहु हो, तो उसके भाई नहीं जीते हैं ॥ ६ ॥

चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चन्द्रोऽष्टमेऽपि वा ।
सद्य एव भवेन्मृत्युः शङ्करो यदि रक्षिता ॥ ७ ॥

जिसके चौथे स्थान में राहु और छठे वा आठवें स्थान में चन्द्रमा हो, तो उसकी यदि महादेव भी रक्षा करें, तो भी शीघ्र मृत्यु हो जावे ॥ ७ ॥

अष्टमस्थो निशानाथः केन्द्रे पापेन संयुतः ।
चतुर्थे च यदा राहुर्वर्षमेकं स जीवति ॥ ८ ॥

जिसके अष्टम स्थान में चन्द्रमा हो, अथवा पापग्रह करके संयुक्त केन्द्र में हो, चौथे में राहु हो, तो वह बालक एकही वर्ष जीवे ॥ ८ ॥

पाताले चाम्बरे पापो द्वादशे च यदा स्थितः ।
पितरं मातरं हन्ति देशाद्देशान्तरं व्रजेत् ॥ ९ ॥

जिसके चौथे, दशवें वा बारहवें पापग्रह स्थित हों, तो वह बालक पिता और माता का नाश करके अपने देश से दूसरे देश में चला जावे ॥ ९ ॥

१—'च भूसुतः' के स्थान में 'भृगोः सुतः' पाठांतर है ।

पञ्चमस्थो निशानाथस्त्रिकोणे च बृहस्पतिः ।
दशमे च महीसूनुः परमायुः स जीवति ॥ १० ॥

जिसके पाँचवें स्थान में चन्द्रमा, नवें पाँचवें में बृहस्पति और दशवें स्थान में मंगल हो, तो बालक बहुत काल तक जीवे ॥ १० ॥

धनस्थाने[1] यदा क्रूरः सहजे सप्तमे तथा ।
पञ्चमे भवने जीवो नीचजातस्तदा भवेत् ॥ ११ ॥

जिसके दूसरे स्थान में क्रूरग्रह हो, तीसरे, सातवें तथा पाँचवें स्थान में बृहस्पति हो, तो वह बालक नीच से उत्पन्न हो ॥ ११ ॥

लग्ने धने व्यये क्रूरो तदा मृत्यौ च जायते ।
विष्ठया मार्गबन्धोऽस्य द्वादशाष्टमवासरे ॥ १२ ॥

जिसके लग्न, दूसरे, बारहवें और आठवें स्थान में क्रूरग्रह हों, तो बारहवें या आठवें दिन में विष्ठा का मार्ग रुक करके उसकी मृत्यु होजावे ॥ १२ ॥

षष्ठे च भवने भौमः सप्तमे सिंहिकासुतः ।
अष्टमे च यदा सौरिर्भार्या तस्य न जीवति ॥ १३ ॥

जिसके छठे स्थान में मंगल, सातवें राहु और आठवें शनैश्चर हो, तो उसकी स्त्री न जीवे ॥ १३ ॥

तिथ्यन्ते च दिनान्ते च लग्नस्यान्ते तथैव च ।
चरराशौ यदा जातः सोऽन्यजातः शिशुर्भवेत् ॥ १४ ॥

जो बालक तिथि के अंत में वा दिन के अंत में और लग्न के अंत में चर-राशि में उत्पन्न हो, तो उसे और से उत्पन्न हुआ जानो ॥१४॥

१—पुस्तकांतर में इसके पूर्व एक श्लोक है —
धनस्थाने यदा शुक्रः क्रूरग्रहसमन्वितः ।
न पश्यति निजक्षेत्रमल्पपुत्रस्तदा भवेत् ॥

रिपुस्थाने यदा चन्द्रो लग्नस्थाने शनैश्चरः ।
कुजश्च सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ १५ ॥

जिसके छठे स्थान में चन्द्रमा, लग्न स्थान में शनैश्चर और सप्तम स्थान में मंगल हो, तो उसका पिता नहीं जीवे ॥ १५ ॥

बालस्य जन्मकाले चेदष्टमस्थः शनैश्चरः ।
पापदृष्टो नाशकः स्यादन्यथा क्लेशदायकः ॥ १६ ॥

बालक के जन्मसमय में यदि पापग्रहों करके देखा हुआ आठवें स्थान में शनैश्चर हो तो बालक का नाश होजावे और जो अन्य प्रकार से हो, तो क्लेश का देनेवाला हो ॥ १६ ॥

क्रूरैर्दृष्टो जन्मलग्नात् षष्ठे वाप्यष्टमे बुधः ।
चतुर्वर्षे भवेन्मृत्युः शङ्करो यदि रक्षति ॥ १७ ॥

जिसके जन्मलग्न से छठे वा आठवें क्रूरग्रहों करके देखे हुए बुध हो, तो उसकी चार वर्ष में, जो महादेव भी रक्षा करें, तो भी मृत्यु होजावे ॥ १७ ॥

क्रूरश्चतुर्षु केन्द्रेषु तथा क्रूरो धनेऽपि वा ।
दारिद्र्ययोगं जानीयात्स्ववंशस्य क्षयङ्करः ॥ १८ ॥

जिसके क्रूरग्रह चारों केन्द्रों में तथा दूसरे स्थान में हो, तो दारिद्र्ययोग जानिए और यह बालक अपने वंश का विनाश करनेवाला होवे ॥ १८ ॥

लग्नस्थाने यदा जीवो धनस्थाने शनैश्चरः ।
राहुश्च सहजस्थाने माता तस्य न जीवति ॥ १९ ॥

जिसके लग्नस्थान में बृहस्पति और दूसरे स्थान में शनैश्चर तथा तीसरे में राहु हो, तो उसकी माता नहीं जीवे ॥ १९ ॥

सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमे भार्गवो यदा ।
नवमे भवने सूर्यः स्वल्पायुस्तस्य जायते ॥ २० ॥

जिसके सातवें स्थान में मंगल, आठवें शुक्र और नवें सूर्य हो, तो उसकी थोड़ी आयु होवे ॥ २० ॥

क्षीणचन्द्रो यदा लग्ने पापाश्चाष्टमकेन्द्रगाः ।
स्मरे लग्नपतिः पापयुक्तो नश्येत्तदा शिशुः ॥ २१ ॥

जिसके क्षीण चन्द्रमा लग्न में और पापग्रह आठवें केन्द्रस्थानों में तथा सातवें लग्न का स्वामी पापग्रह करके युक्त हो, तो अवश्य ही बालक मर जावे ॥ २१ ॥

क्षीणचन्द्रो द्वादशस्थः पापा लग्ने स्मरेऽष्टमे ।
शुभैश्च रहिते केन्द्रे शीघ्रं नश्यति जातकः ॥ २२ ॥

जिसके क्षीण चन्द्रमा बारहवें हो, और पापग्रह लग्न तथा सातवें वा आठवें में हो, एवं शुभग्रहों करके रहित केन्द्र हो, तो शीघ्र ही बालक मर जावे ॥ २२ ॥

दशमस्थो दिवानाथः पापैर्बहुभिरीक्षितः ।
मेषवृश्चिककर्कस्य सद्यो मृत्युप्रदो भवेत् ॥ २३ ॥

जिसके मेष वा वृश्चिक या कर्क का दशवाँ सूर्य बहुत पापग्रहों करके देखा जाता हो, तो शीघ्र ही मृत्यु करनेवाला हो ॥ २३ ॥

राहुजीवौ रिपुक्षेत्रे लग्ने वाथ चतुर्थगौ ।
त्रयोविंशे तदा वर्षे पुत्रस्तातं विनाशयेत् ॥ २४ ॥

जिसके राहु तथा बृहस्पति छठे स्थान में, या लग्न तथा चौथे स्थान में हो, तो वह बालक तेईसवें वर्ष में पिता का नाश कर देवे ॥ २४ ॥

अष्टमस्थो यदा भौमस्त्रिकोणे नीचगो रविः ।
स शीघ्रमेव जातः स्याद्भिक्षाजीवी च दुःखितः ॥२५॥

जिसके आठवें स्थान में मंगल हो और नवें या पाँचवें नीच का सूर्य हो, ऐसा बालक शीघ्र ही दुःखयुक्त, भिक्षा से जीविका करनेवाला होवे ॥ २५ ॥

सिंहे भौमस्तुले सौरिः कन्यायां च यदा सितः ।
मिथुने च यदा राहुर्जननी तस्य नश्यति ॥ २६ ॥

जिसके सिंह का मंगल, तुला का शनैश्चर, कन्या का शुक्र, मिथुन का राहु हो, तो उस बालक की माता का नाश होजावे ॥ २६ ॥

लग्ने क्रूरः स्वभवने क्रूरः पातालगो यदि ।
दशमे भवने क्रूरः कष्टं जीवति बालकः ॥ २७ ॥

जिसके लग्न में अपने ही स्थान में क्रूरग्रह और क्रूरग्रह ही चौथे या दशवें हों तो ऐसा बालक कष्ट से जीवे ॥ २७ ॥

सप्तमे भवने भानुः कर्मस्थो भूमिनन्दनः ।
राहुर्व्यये च तस्यैव पिता कष्टेन जीवति ॥ २८ ॥

जिसके सातवें स्थान में सूर्य, दशवें मंगल और बारहवें राहु हो, तो उसका पिता कष्ट से जीता है ॥ २८ ॥

त्रिकोणकेन्द्रगाः पापाः शुभा रन्ध्रव्ययारिगाः ।
सूर्योदये प्रसूतस्य हरन्ति खलु जीवनम् ॥ २९ ॥

जिसके त्रिकोण (नवें-पाँचवें) और केन्द्रस्थानों में पापग्रह और आठवें, बारहवें, छठे शुभग्रह हों, तो उसे ये ग्रह उसी दिन सूर्य के उदय होते ही प्राण हर लेवें ॥ २९ ॥

स्मरे व्यये च सहजे मध्ये क्रूरा यदा ग्रहाः ।
तदा जातस्य बालस्य शरीरे कष्टमादिशेत् ॥ ३० ॥

जिसके सातवें, बारहवें, तीसरे और दशवें क्रूरग्रह हों, तो उस उत्पन्न हुए बालक के शरीर में कष्ट होवे ॥ ३० ॥

कन्यायां च यदा राहुः शुक्रो भौमः शनिस्तथा ।
तत्र जातस्य जायेत कुबेरादधिकं धनम् ॥ ३१ ॥

जिसके कन्या में राहु, शुक्र, मंगल और शनैश्चर हो, तो उस बालक के कुबेर से भी अधिक धन होवे ॥ ३१ ॥

क्रूरलग्ने यदा जातस्तत्स्वामी क्रूरवेष्टितः ।
आमवातो भवेत्तस्य शरीरे कष्टमादिशेत् ॥ ३२ ॥

जिसका क्रूरलग्न में जन्म हो और उसी का स्वामी क्रूरग्रहों करके युक्त हो तो उसके आमवात होकर शरीर में कष्ट होवे ॥ ३२ ॥

सहजे सहजाधीशो लग्ने पुत्रे धनेऽपि वा ।
जायते न तदा बालो यदि जातो न जीवति ॥ ३३ ॥

जिसके तीसरी राशि का स्वामी तीसरे लग्न, पाँचवें या दूसरे में हो, तो वह बालक उत्पन्न होकर नहीं जीवे ॥ ३३ ॥

कन्यामिथुनगो राहुः केन्द्रे षष्ठे व्यये यदा ।
त्रिकोणे वा यदा जातो दाता भोक्ता निरामयः ॥३४॥

जिसके कन्या या मिथुन का राहु केन्द्र, छठे, बारहवें या त्रिकोण में हो, तो वह बालक दानी, भोगी और रोगरहित होवे ॥ ३४ ॥

एकः पापोऽष्टमस्थोऽपि शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत् ।
पापेन वीक्षितो वर्षान्मारयत्येव बालकम् ॥ ३५ ॥

जिसके एक पापग्रह ही अष्टम में स्थित होकर पापग्रहों करके देखा जाता हुआ शत्रुक्षेत्र में हो, तो यह पापग्रह वर्ष ही भर में बालक को मार डालता है ॥ ३५ ॥

भौमभास्करमन्दाश्च शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे यदा ।
यमेन रक्षितोऽप्येवं वर्षमात्रं न जीवति ॥ ३६ ॥

जिसके मंगल, सूर्य और शनैश्चर छठे या आठवें हो, तो उसकी यदि यमराज भी रक्षा करें, तो भी वर्षभर न जीवे ॥ ३६ ॥

वक्री शनिर्भौमगेहे केन्द्रे षष्ठेऽष्टमेऽपि वा ।
कुजेन बलिना दृष्टो हन्ति वर्षद्वये शिशुम् ॥ ३७ ॥

जिसके वक्री शनैश्चर भौम के स्थान या केन्द्र तथा छठें और आठवें स्थान में बली मंगल करके देखा हुआ हो, तो ऐसा ग्रह बालक को दो ही वर्ष में नाश कर देवे ॥ ३७ ॥

राहौ वृषे त्रिभिर्दृष्टे केतुदृष्टे चतुष्टये ।
दृष्टे च गुरुशुक्राभ्यां दीर्घकालं स जीवति ॥ ३८ ॥

जिसके वृषराशि में राहु तीन ग्रहों करके देखा हुआ, और चौथे केतु करके भी देखा गया, तथा बृहस्पति शुक्र करके भी देखा हुआ हो तो उसकी बड़ी आयु होवे ॥ ३८ ॥

चन्द्रेण मंगलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत् ।
तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीर्नैव विमुञ्चति ॥ ३९ ॥

जिसके जन्म-समय में चन्द्रमा करके मंगल युक्त हो, तो उसके घर को लक्ष्मीजी नहीं छोड़ती हैं ॥ ३९ ॥

षष्ठाष्टमगश्चन्द्रः सद्यो मरणाय पापसंदृष्टः ।
अष्टाभिः शुभसंदृष्टे वर्षैर्मिश्रैस्तदर्द्धेन ॥ ४० ॥

जिसके पापग्रहों करके देखा हुआ छठें या आठवें चन्द्रमा हो, तो वह शीघ्र ही बालक का मरण करे, और जो आठ शुभग्रहों करके देखा हुआ हो, तो वर्ष भर में बालक को मार डाले ॥ ४० ॥

शुक्लपक्षे निशायां च कृष्णे जातो दिवा यदा ।
षष्ठाष्टमगतश्चन्द्रो न शिशुं हन्ति तातवत् ॥ ४१ ॥

शुक्लपक्ष में, रात्रि में, कृष्णपक्ष में, दिनमें जिसका जन्म हो, और उसके छठे या आठवें घर में स्थित चन्द्रमा पिता के तुल्य पुत्र का नाश न करे ॥ ४१ ॥

लग्ने त्रिकोणे द्यूने च व्यये पापयुतः शशी ।
शिशुं हन्ति न दृष्टश्चेद्बलवद्भिः शुभैर्ग्रहैः ॥ ४२ ॥

लग्न, त्रिकोण, सातवें और बारहवें घर में पापग्रह करके युक्त चन्द्रमा यदि बलवान् शुभग्रहों करके न देखा हुआ हो, तो बालक को नाश कर देवे ॥ ४२ ॥

सप्तमे चतुरस्रे च पापयुग्मान्तरे स्थितः ।
करोति चन्द्रमा नाशं बालकस्य न संशयः ॥ ४३ ॥

जिसके सातवें या चौथे में दो पापग्रहों के बीच में स्थित जो चन्द्रमा हो, तो वह बालक का निस्सन्देह नाश कर देवे ॥ ४३ ॥

क्षीणचन्द्रो यदा लग्ने पापाः केन्द्रेषु संस्थिताः ।
अष्टमे भवने वापि तदा मृत्युः शिशोर्भवेत् ॥ ४४ ॥

जिसके क्षीण चन्द्रमा लग्न में हो और पापग्रह केन्द्र या आठवें में हों, तो उस बालक की मृत्यु होजावे ॥ ४४ ॥

शनिराहुकुजैर्युक्तः सप्तमे भवने शशी ।
सप्तमे दिवसे हन्ति मासे वा सप्तमे शिशुम् ॥ ४५ ॥

जिसके शनैश्चर, राहु और मंगल करके युक्त सातवें घर में चन्द्रमा हो, ऐसा चन्द्रमा बालक को सात मास या सात दिन में ही नाश कर देवे ॥ ४५ ॥

न पश्यति शशी लग्नं मध्ये वा सौम्यशुक्रयोः ।
ताते परोक्षे जन्मास्य भौमेऽस्ते वा यमे तनौ ॥ ४६ ॥

जिसके चन्द्रमा, बुध और शुक्र के बीच में लग्न को न देखता हो, और मंगल और शनैश्चर लग्न में हो, तो पिता के पीछे बालक का जन्म जानिए ॥ ४६ ॥

लग्नस्थश्च यदा भानुः पञ्चमस्थो निशाकरः ।
अष्टमस्था यदा पापास्तदा जातो न जीवति ॥ ४७ ॥

जिसके लग्न में सूर्य, पाँचवें घर में चन्द्रमा और आठवें घर में पापग्रह हो, तो उस समय उत्पन्न हुआ बालक नहीं जीवे ॥ ४७ ॥

त्रिकोणकेन्द्रगाः पापाः सौम्याः षष्ठव्ययाष्टगाः ।
सूर्योदये संप्रसूतः प्राणांस्त्यजति बालकः ॥ ४८ ॥

जिसके त्रिकोण और केन्द्र में पापग्रह हों, और छठे, बारहवें तथा आठवें घर में शुभग्रह हों तो ऐसा सूर्योदय में उत्पन्न हुआ बालक प्राणों को त्याग देवे ॥ ४८ ॥

लग्ने षष्ठेऽष्टमे द्यूने शनियुक्तो यदा कुजः ।
शुभग्रहैरदृष्टश्च शिशुं हन्ति न संशयः ॥ ४९ ॥

यदि लग्न, छठे, आठवें और सातवें में शनैश्चर-युक्त मंगल शुभ-ग्रहों करके न देखा हुआ हो, तो बालक को निःसंदेह नाश कर देवे ॥ ४९ ॥

षष्ठाष्टमे कर्कराशौ चन्द्रदृष्टो भवेद्बुधः ।
चतुर्भिर्वत्सरैर्बालं मारयत्येव निश्चितम् ॥ ५० ॥

जो छठे या आठवें कर्क-राशि में चन्द्रमा करके देखा हुआ बुध हो, तो चार साल में बालक को निश्चय मार डाले ॥ ५० ॥

दृष्टः सूर्येन्दुमन्दारैर्न दृष्टो भृगुणा गुरुः ।
वर्षैस्त्रिभिः शिशुं हन्ति भौमगेहेऽष्टमे स्थितः ॥५१॥

जो बृहस्पति सूर्य, चन्द्रमा, शनैश्चर और मंगल से देखा गया हो, और शुक्र करके न देखा हुआ हो, और आठवें भौम के घर में स्थित हो, तो बालक को तीस वर्ष में मार डाले ॥ ५१ ॥

कर्के सिंहेऽष्टमे षष्ठे व्यये च भृगुनन्दनः ।
सर्वैर्दृष्टो शुभैर्बालं षड्भिर्वर्षैर्विनाशयेत् ॥ ५२ ॥

जिसके कर्क या सिंह में आठवें, छठे, बारहवें सब अशुभ ग्रहों

करके देखे हुए शुक्र हों, तो बालक को छः वर्ष में नाश कर देवें ॥ ५२ ॥

लग्ने शनिः पापदृष्टो हन्ति षोडशवासरैः ।
पापयुक्ताश्च मासेन शुद्धो वर्षेण बालकम् ॥ ५३ ॥

जिसके लग्न में शनैश्चर पापग्रहों करके देखा हुआ हो, तो वह बालक को सोलह दिन के भीतर ही नाश करे और पापग्रहों करके युक्त हो, तो महीने में, और जो शुद्ध हो, तो एक वर्ष में बालक का नाश करे ॥ ५३ ॥

स्वगेहे गुरुगेहे वा तुलालग्ने शनिः स्थितः ।
सूर्ये मङ्गलमध्ये वा नायुर्हन्ति कदाचन ॥ ५४ ॥

जिसके अपने घर में या बृहस्पति के स्थान में या तुला लग्न में शनैश्चर स्थित हो, और सूर्य मंगल के बीच में हो, तो कभी आयु का नाश न करे ॥ ५४ ॥

केन्द्रे राहुः पापदृष्टो दशभिर्हन्ति वत्सरैः ।
बालं द्वादशभिः कश्चित् कश्चित् षोडशभिर्वदेत् ॥५५॥

जिसके पापग्रहों करके देखा हुआ राहु केन्द्र में स्थित हो, तो बालक को दश ही वर्ष में नाश करे । कोई आचार्य बारह और कोई सोलह वर्ष में कहते हैं ॥ ५५ ॥

जन्मलग्नपतिः षष्ठे व्यये मृत्यौ च तिष्ठति ।
अस्तंगतो मृत्युकरो राशितुल्यैश्च वत्सरैः ॥ ५६ ॥

जिसके जन्मलग्न का स्वामी छठे या आठवें अथवा बारहवें घर में अस्त हो, तो राशि-तुल्य वर्षों करके मृत्यु को करता है ॥ ५६ ॥

सौम्याः षष्ठेऽष्टमे पापैर्वक्रीभूतैर्विलोकिताः ।
शुभैरदृष्टा मासेन मारयन्त्येव बालकम् ॥ ५७ ॥

जिसके शुभ ग्रह छठे, आठवें, वक्री पापग्रहों करके देखे हुए हों, और शुभग्रहों करके न देखे हुए हों, तो बालक को महीने भर में मार डालते हैं ॥ ५७ ॥

उदितो यत्र नक्षत्रे केतुर्यस्तत्र जायते ।
रौद्रे मुहूर्ते सोऽप्येव स च प्राणैर्वियुज्यते ॥ ५८ ॥

जिस नक्षत्र में केतु उदय हो, उसी में, रौद्र मुहूर्त में जिसका जन्म हो, वह प्राणों से रहित होजावे ॥ ५८ ॥

मेषे वृषे च कर्के च सर्वापद्भ्यो हि रक्षति ।
सिंहिकातनयो बालं प्रियं पुत्रं यथा पिता ॥ ५९ ॥

जिसके मेष या वृष अथवा कर्क में राहु हो, तो सब आपदाओं से रक्षा किया जावे, जैसे प्यारे पुत्र की पिता रक्षा करता है, ऐसे ही राहु भी उस बालक की रक्षा करे ॥ ५९ ॥

षष्ठे तृतीये लाभे च स्थितः सम्पत्तिकारकः ।
राहुः सर्वापदां हन्ता स्वगृहे च विशेषतः ॥ ६० ॥

जिसके छठे या तीसरे अथवा ग्यारहवें घर में राहु हो, तो सम्पत्ति का देनेवाला और सब आपदाओं का नाश करनेवाला होता है, और अपने स्थान में तो यह विशेष फल करता है ॥ ६० ॥

चन्द्रः पापग्रहैर्युक्तश्चन्द्रो वा पापमध्यगः ।
चन्द्रात्सप्तमगः पापस्तदा मातृवधो भवेत् ॥ ६१ ॥

जिसके चन्द्रमा पापग्रहों करके युक्त वा पापग्रहों के बीच में हो, अथवा चन्द्रमा से सातवें पापग्रह हो तो उसकी माता का नाश होजावे ॥ ६१ ॥

सूर्यः पापेन संयुक्तस्तदा पितृवधो भवेत् ।
लग्नं पापेन संयुक्तं लग्नं वा पापमध्यगम् ॥ ६२ ॥

जिसके पापग्रह करके संयुक्त सूर्य हों, और लग्न भी पापग्रह

करके युक्त हो, अथवा पापग्रहों के बीच में हो, तो पिता का नाश हो जावे ॥ ६२ ॥

लग्नात्सप्तमगाः पापास्तदा चात्मवधो भवेत् ।
अपकर्मा तदा जातः सप्तवर्षाणि जीवति ॥ ६३ ॥

जिसके लग्न से सातवें स्थान में पापग्रह हों, वह बालक कुकर्मी होकर सात वर्ष में मर जावे ॥ ६३ ॥

अष्टमे च यदा सौरिर्जन्मस्थाने च चन्द्रमाः ।
मन्दाग्न्युदररोगी च गात्रहीनश्च जायते ॥ ६४ ॥

जिसके आठवें स्थान में शनैश्चर, और जन्मस्थान में चन्द्रमा हो, तो उस बालक के मन्दाग्नि और पेट में रोग हो, तथा देह से हीन हो जावे ॥ ६४ ॥

शनिक्षेत्रे यदाभानुर्भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युस्तस्य जातस्य जायते ॥ ६५ ॥

जिसके शनैश्चर के स्थान में सूर्य, और सूर्य के स्थान में शनैश्चर हो, तो उस बालक की बारह वर्ष में मृत्यु होजावे ॥ ६५ ॥

बुधभौमौ यदा लग्ने षष्ठे वा यदि तिष्ठतः ।
तस्करो घोरकर्मा च हस्तपादौ विनश्यतः ॥ ६६ ॥

जिसके बुध और मंगल लग्न में या छठे स्थान में हों, तो वह चोर और कुकर्मी हो, और हाथ-पैर भी नष्ट हो जावें ॥ ६६ ॥

षष्ठेऽष्टमे च मूर्त्तौ च शनिक्षेत्रे यदा बुधः ।
पापाक्रान्तश्चतुर्वर्षे मारयत्येव बालकम् ॥ ६७ ॥

छठे, आठवें या मूर्ति ही में पापग्रहों करके युक्त जिसके शनैश्चर के स्थान में बुध हों, तो बालक को मार डालें ॥ ६७ ॥

अष्टमस्थो यदा राहुः केन्द्रस्थाने च चन्द्रमाः ।
सद्य एव भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ६८ ॥

जिसके आठवें स्थान में राहु और केन्द्रस्थान में चन्द्रमा हो, तो उस बालक की निःसंदेह शीघ्र मृत्यु हो जावे ॥ ६८ ॥

सप्तमे नवमे राहुः शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत् ।
प्राप्ते च षोडशे वर्षे तस्य मृत्युर्न संशयः ॥ ६९ ॥

जिसके सातवें और नवें स्थान में शत्रु के घर में राहु हो, तो उसकी निःसंदेह सोलहवें वर्ष में मृत्यु होजावे ॥ ६९ ॥

द्वादशस्थो यदा चन्द्रः पापः स्यादष्टमे गृहे ।
एकमासे भवेन्मृत्युस्तस्य बालस्य निश्चितम् ॥ ७० ॥

जिसके बारहवें घर में चन्द्रमा हो और पापग्रह आठवें घर में हो, तो उस बालक की एक महीने में निश्चय मृत्यु हो जावे ॥ ७० ॥

जन्मस्थाने यदा राहुः षष्ठस्थाने च चन्द्रमाः ।
अपस्मारी तदा बालो जायते नात्र संशयः ॥ ७१ ॥

जिसके जन्मस्थान में राहु और छठे स्थान में चन्द्रमा हो, तो उस बालक के निःसंदेह अपस्मार रोग हो ॥ ७१ ॥

भार्गवेण युतश्चन्द्रः षष्ठाष्टमगतो भवेत् ।
मन्दाग्निः कुक्षिरोगी च हीनाङ्गोऽपि च बालकः ॥७२॥

जिसके शुक्रयुक्त चन्द्रमा छठे या आठवें स्थान में हो, तो वह बालक मन्दाग्नि, कुक्षिरोगी और हीनांग होवे ॥ ७२ ॥

षष्ठेऽष्टमे यदा चन्द्रो बुधयुक्तस्तु तिष्ठति ।
विषदोषेण बालस्य तदा मृत्युश्च जायते ॥ ७३ ॥

जिसके छठे या आठवें बुधयुक्त चन्द्रमा हो, तो उस बालक की विष से मृत्यु होवे ॥ ७३ ॥

भानुना संयुतश्चन्द्रः षष्ठाष्टमगतो यदा ।
राजदोषेण मृत्युर्वा सिंहदोषेण वा भवेत् ॥ ७४ ॥

जिसके सूर्ययुक्त चन्द्रमा छठें या आठवें घर में हो, तो उसकी राजदोष या सिंह से मृत्यु होवे ॥ ७४ ॥

एकोऽपि यदि मूर्तौ स्याज्जन्मकाले दिवाकरः ।
स्थानहीनो भवेद्बालः शोकसन्तापपीडितः ॥ ७५ ॥

जिसके केवल सूर्य ही मूर्त्ति में हो, तो उस बालक के घर भी न हो, और शोक-संताप से पीड़ित ही रहे ॥ ७५ ॥

दशमस्थो यदा भौमः शत्रुक्षेत्रस्थितो भवेत् ।
म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥ ७६ ॥

जिसके दशम में मंगल शत्रु के स्थान में हो, तो उस बालक का पिता शीघ्र ही मर जावे ॥ ७६ ॥

लग्नेऽष्टमे यदा राहुश्चन्द्रयुक्तो हि तिष्ठति ।
दशाहे जायते तस्य बालस्य मरणं ध्रुवम् ॥ ७७ ॥

जिसके लग्न या आठवें स्थान में चन्द्रमा-सहित राहु हों, तो उस बालक की दश दिन में निश्चय मृत्यु हो जावे ॥ ७७ ॥

शनैश्चरस्तुलाकुम्भमकरे यदि जायते ।
लग्नेऽष्टमे तृतीये वा तदारिष्टं न जायते ॥ ७८ ॥

जिसके शनैश्चर तुला, कुम्भ या मकर में या लग्न में तथा आठवें अथवा तीसरे हो, तो अरिष्ट नहीं होवे ॥ ७८ ॥

लग्नाच्च नवमे सूर्ये सूर्यपुत्रे तथाऽष्टमे ।
एकादशे भार्गवे च मासमेकं न जीवति ॥ ७९ ॥

लग्न से जिसके नवें सूर्य और आठवें शनैश्चर तथा ग्यारहवें शुक्र हों, तो वह बालक एक महीना भी न जीवे ॥ ७९ ॥

धने गुरुः सैंहिकेयो भौमः शुक्रश्च सप्तमे ।
अष्टमे रविचन्द्रौ च म्लेच्छः स्याद्यौवने हि सः ॥ ८० ॥

जिसके दूसरे बृहस्पति और राहु, मंगल और शुक्र सातवें घर में हों तथा आठवें में सूर्य और चन्द्रमा हों, तो जवानी में वह मुसल्मान होजावे ॥ ८० ॥

नवमे दशमे चन्द्रः सप्तमे च यदा सितः ।
पापे पातालसंस्थे च वंशक्षयकरो नरः ॥ ८१ ॥

जिसके नवें या दशवें घर में चन्द्रमा, सातवें में शुक्र और पापग्रह चौथे घर में हों, तो वह मनुष्य वंश का नाश करनेवाला हो ॥ ८१ ॥

भ्रातृस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने यदा शशी ।
स लोके गृहमध्यस्थो जायते कुलदीपकः ॥ ८२ ॥

जिसके तीसरे स्थान में बृहस्पति और ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा हो, तो वह बालक लोक में, घर के मध्य में स्थित ही कुलदीपक होवे ॥ ८२ ॥

सिंहलग्ने यदा भौमः पञ्चमे च निशाकरः ।
व्ययस्थाने यदा राहुः स जातः कुलदीपकः ॥ ८३ ॥

जिसके सिंहलग्न में मंगल पाँचवें घर में चन्द्रमा और बारहवें घर में राहु हो, तो वह बालक कुलदीपक होवे ॥ ८३ ॥

एकः पापो यदा लग्ने पापश्चैको रसातले ।
जायते च द्विनालाभ्यां स जातः कुलदीपकः ॥ ८४ ॥

एक पापग्रह जिसके लग्न में और एक ही पापग्रह चौथे में हो, तो वह बालक दो नाल से उत्पन्न होकर कुलदीपक होवे ॥ ८४ ॥

लग्ने वा सप्तमे भौमः पञ्चमे च दिवाकरः ।
जीवेदरण्यमध्येऽपि विख्यातः स न संशयः ॥ ८५ ॥

जिसके लग्न या सातवें में मंगल और पाँचवे घर में सूर्य हों, तो वह बालक वन के बीच में भी जीवे और निःसंदेह प्रसिद्ध होवे ॥ ८५ ॥

गण्डयोग-विचार ।

आदौ मूलमघाश्विन्यां तिस्रः स्युर्गण्डनाडिकाः ।
ज्येष्ठाश्लेषारेवतीनामन्ते च पञ्च नाडिकाः ॥ ८६ ॥

मूल, मघा और अश्विनी की पहले की तीन-तीन नाड़ी गण्ड-नाडिका होती हैं । ज्येष्ठा, आश्लेषा और रेवती की अंत की पाँच नाड़ियाँ गंडनाड़िका होती हैं ॥ ८६ ॥

गण्ड-शान्ति ।

सन्ध्यारात्रिदिवाभागे गण्डयोगे ध्रुवं शिशुः ।
आत्मानं मातरं तातं विनिहन्ति यथाक्रमम् ॥ ८७ ॥

संध्या, रात्रि और दिन में गंडयोग निश्चय करके उत्पन्न हुए बालक को या क्रम ही से माता या पिता को नाश करता है ॥ ८७ ॥

यात्रायां स्याच्चौरभयं विवाहे मृत्युरेव च ।
जननीपितरौ हन्ति वदत्येवं बृहस्पतिः ॥ ८८ ॥

गंडयोग में यात्रा करे, तो चोरों से डर हो, विवाह में मृत्यु हो जावे एवं बृहस्पतिजी कहते हैं कि यह योग माता और पिता को भी नाश करता है ॥ ८८ ॥

गण्ड की शान्ति का प्रकार ।

गण्डारिष्टं चन्दनं च कुष्ठं गोरोचनं तथा ।
घृतेन मिश्रितं कृत्वा चतुर्भिः कलशैस्ततः ॥ ८९ ॥
सहस्रशीर्षामन्त्रेण बालकं स्नापयेद्बुधः ।
पितृयुक्तं दिवाजातं मातृयुक्तं च रात्रिकम् ॥ ९० ॥
स्नापयेत् पितृमातृभ्यां सन्ध्ययोरुभयोरपि ।
कांस्यपात्रं घृतैः पूर्णं दद्याद्गण्डोपशान्तये ॥ ९१ ॥
कृष्णां धेनुं सुवर्णं च ग्रहजाप्यं च कारयेत् ।
आश्लेषायां च मूलेऽपि शान्तिरेवं विधीयते ॥ ९२ ॥

अरिष्ट, चंदन, कुष्ठ, गोरोचन इनको घी में मिला लेवे, और चार कलशों में रक्खे । फिर पंडित 'सहस्त्रशीर्षा' इस मन्त्र द्वारा दिन में जो बालक पैदा हुआ हो, तो पिता-सहित, और रात्रि में पैदा हुआ हो, तो माता-सहित स्नान करावे एवं जो दोनों सन्ध्याओं में उत्पन्न हुआ हो, तो माता-पिता-सहित बालक को स्नान करावे और गण्ड की शान्ति के लिये घी से पूर्ण काँसे का बर्तन देवे । काली गौ और सोना भी देवे । ग्रह का जप भी करावे, इसी तरह से आश्लेषा और मूल में भी शान्ति करे ॥ ८९-९२ ॥

शुभाशुभयोग

न लग्नमिन्दुं च गुरुर्निरीक्षते
न वा शशाङ्को रविणा समागतः ।
सपापकोऽर्केण युतोऽथवा शशी
परेण जातं प्रवदन्ति निश्चयम् ॥ ९३ ॥

जिसके बृहस्पति न लग्न को और न चन्द्रमा को देखते हों, और चन्द्रमा सूर्ययुक्त भी न हो, और पापग्रह और सूर्ययुक्त चन्द्रमा हो, उसको आचार्य लोग पराये से पैदा हुआ निश्चय रूप से कहते हैं ॥९३॥

गुरुक्षेत्रगते चन्द्रे तद्युक्ते वान्यवेश्मनि ।
न द्रेष्काणे नवांशे वा जायते च परेण सः ॥ ९४ ॥

जिसके बृहस्पति के स्थान में चन्द्रमा हो वा बृहस्पति युक्त चन्द्रमा और ही घर में हो, और न द्रेष्काण वा नवांश में हो, तो उस बालक को पराये से पैदा हुआ जानिए ॥ ९४ ॥

भौमक्षेत्रे यदा जाते मूर्तौ क्रूरग्रहो भवेत् ।
वर्षमध्ये भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ९५ ॥

जिसके मंगल के स्थान में बृहस्पति हो, और मूर्ति में क्रूरग्रह हो, उस बालक की वर्षभर में निःसन्देह मृत्यु हो जावे ॥ ९५ ॥

क्षीणचन्द्रो द्वादशस्थो दुःखदः पापवीक्षितः ।
करोति विपुलं क्लेशमष्टमस्थो यदा शनिः ॥ ६६ ॥

जिसके क्षीण चन्द्रमा बारहवें, पापग्रह करके देखा हुआ हो, तो वह दुःख को देता है, और आठवें घर में शनैश्चर भी बड़े क्लेश को देता है ॥ ६६ ॥

द्वादशे च यदा चन्द्रः षष्ठे पापग्रहो भवेत् ।
अल्पायुश्च सदा रोगी जायते जातको ध्रुवम् ॥ ६७ ॥

जिसके बारहवें घर में चन्द्रमा और छठे में पापग्रह हो, तो वह बालक निश्चय थोड़ी आयुवाला और रोगी हो ॥ ६७ ॥

दशमे भवने राहुः पितृमात्रोः प्रपीडकः ।
द्वादशे वत्सरे तस्य जातको मरणं ध्रुवम् ॥ ६८ ॥

जिसके दशवें घर में राहु हो, तो पिता और माता को पीड़ा देनेवाला है, निश्चय करके ऐसे बालक की बारहवर्ष में मृत्यु हो जावे ॥६८॥

रिपुस्थाने यदा पापो व्ययस्थाने च चन्द्रमाः ।
चतुर्थे मंगलो यस्य माता तस्य न जीवति ॥ ६९ ॥

जिसके छठे स्थान में पापग्रह और बारहवें स्थान में चन्द्रमा और चौथे में मंगल हो, उसकी माता न जीवे ॥ ६९ ॥

लग्नस्थाने यदा शौरिः शत्रुस्थाने च चन्द्रमाः ।
कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ २०० ॥

जिसके लग्नस्थान में शनैश्चर और छठे स्थान में चन्द्रमा और सातवें स्थान में मंगल हो, तो उसका पिता न जीवे ॥ २०० ॥

चतुर्थे मातृहा पापो दशमे पितृहा भवेत् ।
सप्तमे भवने पापः पितृमात्रोर्विनाशकः ॥ १ ॥

चौथे में पापग्रह माता को, दशवें में पिता को और सातवें स्थान में पिता और माता, दोनों को नाश करता है ॥ १ ॥

द्वादशे रिपुभावे वा यदा क्रूरो व्यवस्थितः ।
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥ २ ॥

जिसके बारहवें वा छठे घर में क्रूरग्रह हों, तो चौथे वर्ष माता को डर जानिए और दशवें वर्ष में पिता को भी डर जानिए ॥ २ ॥

उच्चो वा यदि वा नीचः सप्तमस्थो यदा रविः ।
तदा जातो निहन्त्याशु मातरं नात्र संशयः ॥ ३ ॥

उच्च वा नीच जिस किसी के सातवें सूर्य हो, तो बालक निःसंदेह शीघ्र ही माता को नाश करे ॥ ३ ॥

वर्ष-क्रम से नाश-विचार ।

नाग[८] गो[९] सिद्ध[२४] जाती[१२] षु[५] क्ष्मा[१]ऽब्ध्य[४] शिव[११] नखा[२०] धृतिः[१८] ।
धरा[२१]शिव दिक्[१०] चेष्वजाद्यंशैस्तुल्याब्दैश्च विधौ व्यसुः ४॥

श्लोक के ऊपर संख्या द्वारा अंकित हुए वर्षों में मेषादि के चन्द्रमा में नाश जानिए । जैसे मेष के चन्द्रमा में आठवें वर्ष में, वृष में नवें वर्ष में, ऐसे ही सब जानिए ॥ ४ ॥

लग्ने शनिर्यदा भौमो राहुः सूर्यश्च संस्थितः ।
सन्तापो रक्तदोषस्य सर्वसौम्येष्वरोगिता ॥ ५ ॥

जिसके लग्न में शनैश्चर, मङ्गल, राहु और सूर्य स्थित हों, उसके संताप और रक्त-दोष हो, और जो लग्न में सब शुभग्रह ही हों, तो नीरोग करे ॥ ५ ॥

केन्द्रे शुभो यदैकोऽपि बली विश्वप्रकाशकः ।
सर्वे दोषाः क्षयं यान्ति दीर्घायुश्च भवेन्नरः ॥ ६ ॥

जिसके केन्द्र में एक भी संसार में प्रकाश करनेवाला बली शुभ ग्रह हो, उस मनुष्य के सब दोष नष्ट हो जावें, और बड़ी आयुवाला हो ॥६॥

अर्कः केन्द्रे यदा चन्द्रो मित्रांशे गुरुणेक्षितः ।
वित्तवाञ्ज्ञानसम्पन्नो जायते च तदा नरः ॥ ७ ॥

जिसके सूर्य केन्द्र में हो, और चन्द्रमा बृहस्पति करके देखा हुआ मित्र के अंश में हो, वह मनुष्य द्रव्यवान् और ज्ञानयुक्त हो ॥ ७ ॥

बुधो वा भार्गवो वापि केन्द्रे वा यदि संस्थितः ।
बलिनानुदितो रिष्टं सर्वं नाशयति ध्रुवम् ॥ ८ ॥

जिसके बुध वा शुक्र बली होकर केन्द्र में हो, तो संपूर्ण अरिष्टों को निश्चय करके नाश कर देवे ॥ ८ ॥

शुभाशुभयोग समाप्त ।

वारायु

विपदः प्रथमे मासे द्वात्रिंशे च त्रयोदशे ।
षष्ठेऽपि च यदा सूर्ये जातो जीवति षष्टिकम् ॥ ९ ॥

जिसका रविवार के दिन जन्म हो, तो उसको पहले महीने में पीड़ा हो, और बत्तीसवें, तेईसवें और छठे वर्ष में भी पीड़ा होकर साठ वर्ष जीवे ॥ ९ ॥

एकादशेऽष्टमे मासे चन्द्रे पीडा च षोडशे ।
सप्तविंशतिमे वर्षे चतुर्युक्ताशितौ मृतिः ॥ १० ॥

जिसका सोमवार के दिन जन्म हो, उसको ग्यारहवें, आठवें महीने में और सोलहवें तथा सत्ताईसवें वर्ष में पीड़ा हो, और चौरासी वर्ष तक जीवे ॥ १० ॥

द्वात्रिंशे च द्वितीये च वर्षे पीडा च मंगले ।
चतुःसप्ततिवर्षाणि सदा रोगी स जीवति ॥ ११ ॥

जिसका मंगल के दिन जन्म हो, उसको बत्तीसवें और दूसरे वर्ष में पीड़ा हो, और सदा रोगी रहता हुआ चौहत्तर वर्ष जीवे ॥ ११ ॥

बुधवारेऽष्टमे मासे पीडा वर्षे तथाष्टमे ।
पूर्णे चतुःषष्टिवर्षे ततो मृत्युर्भविष्यति ॥ १२ ॥

जिसका बुधवार के दिन जन्म हो, उसको आठवें महीना और आठवें ही वर्ष में पीड़ा होकर चौंसठ वर्ष तक जीवे ॥ १२ ॥

गुरौ च सप्तमे मासे षोडशे च त्रयोदशे ।
पीडा ततश्चतुर्युक्ताशीति वर्षाणि जीवति ॥ १३ ॥

जिसका बृहस्पति के दिन जन्म हो, उसको सातवें महीने में और सोलहवें तथा तेरहवें वर्ष में पीड़ा हो, और चौरासी वर्ष तक जीवे ॥१३॥

शुक्रवारे च जातस्तु देहो रोगविवर्जितः ।
षष्टिवर्षे च सम्पूर्ण म्रियते मानवो ध्रुवम् ॥ १४ ॥

जिसका शुक्रवार के दिन जन्म हो उसके रोग नहीं हो और निश्चय करके पूरे साठ वर्ष में मरे ॥ १४ ॥

शनौ च प्रथमे मासे पीडाष्टादशवत्सरे ।
दृढदेहस्तदा जातः शतं वर्षाणि जीवति ॥ १५ ॥

जिसका शनैश्चर के दिन जन्म हो उसके पहले महीने और अठारहवें वर्ष में पीड़ा हो फिर पुष्ट-देह होके सौ वर्ष तक जीता है ॥१५॥

जन्म-वार फल

मिष्टान्नभोगी मानी च क्रोधी च रतिलालसः ।
पित्ताधिको रवेर्वारे धनकामी भवेन्नरः ॥ १६ ॥

जिसका रविवार के दिन जन्म हो, वह मीठा अन्न भोजन करनेवाला, भोगी, अभिमानी, क्रोधी, रति (मैथुन) की लालसावाला, पित्त अधिकवाला और धन की कामनावाला हो ॥ १६ ॥

भोगी कामी शास्त्रवेत्ता गुणी मानी जितेन्द्रियः ।
विद्याधिकः शीलयुक्तो जायते सोमवासरे ॥ १७ ॥

जिसका सोमवार के दिन जन्म हो, वह भोगी, कामी, शास्त्र का जाननेवाला, गुणी, अभिमानी, जितेन्द्रिय, अधिक विद्या जाननेवाला और शीलयुक्त हो ॥ १७ ॥

मूर्खप्रियो धनी क्रूरः श्रुतिस्मृतिविनिन्दकः।
नास्तिको वेदहीनश्च भौमे भोगी भवेन्नरः॥ १८॥

जिसका जन्म मङ्गल के दिन हो, वह मूर्खों का प्यार करनेवाला, धनी, क्रूर, वेद और स्मृतियों की निंदा करनेवाला, नास्तिक, वेदहीन और भोगी हो॥ १८॥

वेदशास्त्रक्रियायुक्तो दयालुश्च बहुश्रुतः।
भयानको योगयुक्तो जायते बुधवासरे॥ १९॥

जिसका जन्म बुधवार के दिन हो, वह वेद-शास्त्र की क्रिया में युक्त, दयावान्, बहुत पुराणादिकों का सुननेवाला, भयानक और योग-युक्त हो॥ १९॥

वेदविज्ञोऽग्निहोत्री च पुत्रपौत्रधनान्वितः।
पूर्णवेत्ता गुरौ वारे सर्वलक्षणसंयुतः॥ २०॥

जिसका बृहस्पति के दिन जन्म हो, वह वेद का जाननेवाला, अग्निहोत्र-यज्ञ का करनेवाला, पुत्र, पौत्र और धन करके युक्त, पूर्ण विद्वान् और सब लक्षणों से संयुक्त हो॥ २०॥

पुत्री भोगी धनी शूरः कृपालुर्बहुसेवकः।
दैवज्ञोऽपि जनः शुक्रे दिने यदि च जायते॥ २१॥

जिसका शुक्रवार के दिन जन्म हो, वह पुत्रवाला, भोगी, धनी, वीर, दयालु, बहुत नौकरवाला और ज्योतिषी होवे॥ २१॥

नीचसक्तः कृतघ्नश्च कुटिलो बन्धुपीडकः।
कृतकार्यहरो रोषी जायते शनिवासरे॥ २२॥

जिसका शनैश्चर के दिन जन्म हो, वह नीच में आसक्त, कृतघ्न, कुटिल, भाइयों को पीड़ा देनेवाला, किये कार्य का नाश करनेवाला और क्रोधी हो॥ २२॥

जन्मवार फल समाप्त।

मेषादिराशिस्थ फल

लोलनेत्रः सदा रोगी धर्मार्थकृतनिश्चयः ।
पृथुजङ्घः कृतज्ञश्च विक्रान्तो राजपूजितः ॥ २३ ॥
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि ।
चण्डकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः ॥ २४ ॥

जिसका मेषराशि में जन्म हो, वह चंचल नेत्रोंवाला, सदा रोगी, धर्म और द्रव्य में निश्चय करनेवाला, मोटी जंघावाला, कृतज्ञ, बलवान्, राजाओं में पूजित, स्त्री के हृदय को आनंद देनेवाला, दानी, जल से डरनेवाला, घोर कर्म करनेवाला, अंत में कोमल होनेवाला होता है ॥ २३-२४ ॥

भोगी दाता शुचिर्दक्षो महागर्वो महाबलः ।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत् ॥ २५ ॥
मिष्टवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालुर्मैथुनप्रियः ।
गान्धर्ववित् कण्ठरोगी कीर्तिभागी धनी गुणी ॥२६॥
गौरो दीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः ।
समर्थो ह्यतिवादी च जायते मिथुने नरः ॥ २७ ॥

जिसका वृषराशि में जन्म हो, वह भोगी, दानी, पवित्र, चतुर, अति अभिमानी, महाबली, धनी, विलासी, तेजस्वी और सुंदर मित्रोंवाला, मीठी वाणी बोलनेवाला, चंचल दृष्टिवाला, दयावान्, मैथुन करने की प्रीतिवाला, गानेवाला, कंठरोगी, यश का भागी, धनी, गुणी, गोरे रंगवाला, लंबा, प्रवीण, वक्ता, बुद्धिमान्, दृढ़-संकल्प करनेवाला, समर्थ और अतिवादी ऐसा मनुष्य मिथुनराशि में जन्म लेनेवाला होता है ॥ २५-२७ ॥

कार्यकारी धनी शूरो धर्मिष्ठो गुरुवत्सलः ।
शिरोरोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृतवित्तमः ॥ २८ ॥

प्रवासशीलः कोपान्धो बाल्ये दुःखी सुमित्रकः ।
अनासक्तो गृहे वक्ता कर्कराशौ भवेन्नरः ॥ २९ ॥

जिसका कर्क राशि में जन्म हो, वह कार्य करनेवाला, धनी, शूर, धर्मवान्, गुरु का प्यारा, शिर का रोगी, महाबुद्धिमान्, दुर्बल देह-वाला, किए काम को भलीभाँति जाननेवाला, परदेश में रहनेवाला क्रोध से अंधा, बाल्यावस्था में दुःखी और सुंदर मित्रोंवाला, घर में अनासक्त और वक्ता होता है ॥ २८-२९ ॥

क्षमायुक्तस्त्रपायुक्तो मद्यमांसरतः सदा ।
देशभ्रमणशीलश्च शीतभीतः सुमित्रकः ॥ ३० ॥
विनयी शीघ्रकोपश्च जननीजनवल्लभः ।
व्यसनी प्रकटो लोके सिंहे राशौ नरो भवेत् ॥ ३१ ॥

जिसका सिंहराशि में जन्म हो, वह क्षमायुक्त, लज्जावाला, मदिरा और मांस में सदारत, देश में घूमनेवाला, जाड़े से डरनेवाला और सुंदर मित्रोंवाला तथा नम्रतावाला, जल्दी क्रोधवाला, माता को प्यारा और संसार में प्रसिद्ध होता है ॥ ३०-३१ ॥

विलासी सुजनाह्लादी शुभलक्षणपूरितः ।
दाता दक्षः कविर्वृद्धो वेदमार्गपरायणः ॥ ३२ ॥
सर्वलोकप्रियो नाट्यगन्धर्वव्यसने रतः ।
प्रवासशीलः स्त्रीदुःखी कन्याजातो भवेन्नरः ॥ ३३ ॥

जिसका कन्याराशि में जन्म हो, वह विलासी, सज्जन जनों को आनंद देनेवाला, शुभलक्षण करके पूरित, दानी, निपुण, कवि, वृद्ध वेद के मार्ग में परायण, सब संसार को प्यारा, गाने और बजाने में रत, परदेश में प्रीति रखनेवाला और स्त्रीदुःखी होता है ॥ ३२-३३ ॥

स्वस्थानरोषणो दुःखी पटुभाषी कृपान्वितः ।
चञ्चलाक्षश्च लक्ष्मीको गृहमध्येऽतिविक्रमः ॥ ३४ ॥

वाणिज्यदक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः ।
प्रवासी सुहृदामिष्टस्तुले जातो भवेन्नरः ॥ ३५ ॥

जिसका तुलाराशि में जन्म हो, वह अपने घर में क्रोधी, दुःखी, बोलने में प्रवीण, दयायुक्त, चंचल नेत्रोंवाला, लक्ष्मीयुक्त, घर में ही बड़ा बली, वाणिज्य में निपुण, देवों का पूजनेवाला, मित्रों का प्यारा, परदेशी और सज्जनों को प्रिय होता है ॥ ३४-३५ ॥

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिङ्गललोचनः ।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने जने ॥ ३६ ॥
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्टधीः ।
धूर्तश्चौरः कलारम्भी वृश्चिके जायते नरः ॥ ३७ ॥

जिसका वृश्चिक राशि में जन्म हो, वह बाल्यावस्था से ही परदेशी, क्रूर आत्मावाला, वीर, पिंगल नेत्रवाला, पराई स्त्री में रत, अभिमानी, अपने बंधुओं में निठुर, साहस से लक्ष्मी का पानेवाला, माता में भी दुष्ट बुद्धिवाला, धूर्त, चोर, कलाओं का आरम्भ करनेवाला मनुष्य होवे ॥ ३६-३७ ॥

शूरः समधिया युक्तः सात्त्विको जननन्दनः ।
शिल्पविज्ञानसम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः ॥ ३८ ॥
मानी चरित्रसम्पन्नो ललिताक्षरभाषकः ।
तेजस्वी स्थूलदेहश्च धनुर्जातः कुलान्तकः ॥ ३९ ॥

जिसका धनुराशि में जन्म हो, वह वीर, सम बुद्धिवाला, सात्त्विक जनों को आनंद देनेवाला, शिल्प-विद्या में निपुण, धन करके युक्त, सुंदर भार्यावाला, अभिमानी, चरित्रयुक्त, मनोहर अक्षरों का बोलनेवाला, तेजस्वी, स्थूल देहवाला होकर कुल का नाश करनेवाला होता है ॥ ३८-३९ ॥

कुले नेष्टो वशः स्त्रीणां पण्डितः परिवारकः ।
गीतज्ञो लालसी गुह्यः पुत्राढ्यो मातृवत्सलः ॥ ४० ॥
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः ।
परिचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः ॥ ४१ ॥

जिसका मकर राशि में जन्म हो, वह कुल में नेष्ट, स्त्रियों के वश में रहनेवाला, पण्डित, परिवारवाला, गान का जाननेवाला, लालची, गुप्त रहनेवाला, पुत्रों करके युक्त, माता का प्यारा, धनी, दानी, अच्छे नौकरवाला, दयावान्, बहुत भाइयोंवाला और सुख की चिन्तना करनेवाला होता है ॥ ४०-४१ ॥

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनेश्वरः ।
शुभदृष्टिः सदा सौम्यो मानी विद्याकृतोद्यमः ॥ ४२ ॥
धनाढ्यः स्नेहहीनश्च धनी भोगी स्वशक्तितः ।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः ॥ ४३ ॥

जिसका कुम्भराशि में जन्म हो, वह दानी, आलसी, कृतज्ञ, हाथी, घोड़े और धन का स्वामी, अच्छी दृष्टिवाला, सदा सौम्य, अभिमानी, विद्या में उद्यम करनेवाला, धनवान्, स्नेह-रहित, धनी, भोगी, बली, शालूरपक्षी के तुल्य कोखिवाला और निर्भय होता है ॥ ४२-४३ ॥

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुर्वाग्मी नरोत्तमः ।
कोपनः कृपणो ज्ञानी कुलश्रेष्ठः कुलप्रियः ॥ ४४ ॥
नित्यसेवी शीघ्रगामी गान्धर्वकुशलः शुभः ।
मीनराशौ समुत्पन्नो जायते बन्धुवत्सलः ॥ ४५ ॥

जिसका मीनराशि में जन्म हो, वह गहरी चेष्टावाला, वीर, प्रवीण, मीठी वाणीवाला, मनुष्यों में श्रेष्ठ, क्रोधी, कृपण, ज्ञानी, कुल में श्रेष्ठ, कुल का प्यारा, सदा सेवा करनेवाला, जल्द चलनेवाला, गाने में निपुण, शुभ और भाइयों का प्यारा होता है ॥ ४४-४५ ॥

संक्षेपतः जन्म-राशि-फल

मेषे दीनो वृषे मानी पटुबुद्धिश्च मन्मथे ।
क्रूरः कर्के धृतिः सिंहे कन्यायां बहुमायिता ॥ ४६ ॥
जूके स्त्रीत्वमलौ मानी चापे पापाशयो नरः ।
मुखरो मकरे कुम्भे चतुरः स्थिरधीर्झषे ॥ ४७ ॥

संक्षेप से मेषादिक राशियों में जिसका जन्म हो, वह नीचे लिखे हुए लक्षणों करके युक्त होगा । जैसे मेष में दीन, वृष में अभिमानी, मिथुन में प्रवीण बुद्धिवाला, कर्क में क्रूर, सिंह में धैर्यवाला, कन्या में बहुत माया करनेवाला, तुला में स्त्री के भाववाला, वृश्चिक में अभिमानी, धन में पापी, मकर में मुखर, कुम्भ में चतुर, मीन में स्थिर बुद्धिवाला होता है ॥ ४६-४७ ॥

जन्मराशिफल समाप्त ।

जन्म-लग्न-फल

मेषलग्ने समुत्पन्नश्चण्डो मानी सकोपकः ।
सुधीः स्वजनहन्ता च विक्रमी परवत्सलः ॥ ४८ ॥

जिसका मेषलग्न में जन्म हो, वह कठोर, अभिमानी, क्रोधयुक्त, अच्छी बुद्धिवाला, भाइयों का नाश करनेवाला, पराक्रमी और पराये को प्यारा हो ॥ ४८ ॥

वृषलग्नभवो बाल्ये गुरुभक्तः प्रियंवदः ।
गुणी कृती धनी लुब्धः शूरः सर्वजनप्रियः ॥ ४९ ॥

जिसका वृषलग्न में जन्म हो, वह गुरुभक्त, प्रिय बोलनेवाला, गुणी, कृती (पण्डित), धनी, लोभी, वीर और सबका प्यारा हो ॥ ४९ ॥

मिथुनोदयसञ्जातो मानी स्वजनवत्सलः ।
त्यागी भोगी धनी कामी दीर्घसूत्र्यरिमर्दकः ॥ ५० ॥

मिथुन के उदय में जिसका जन्म हो, वह अभिमानी, भाइयों का प्यारा, दानी, भोगी, धनी, कामी, दीर्घसूत्री (धीरे काम करनेवाला) और शत्रुओं का मारनेवाला हो ॥ ५० ॥

कर्कलग्ने समुत्पन्नो भोगी धर्मी जनप्रियः ।
मिष्टान्नपानभोगी च सौभाग्यः स्वजनप्रियः ॥ ५१ ॥

कर्कलग्न में उत्पन्न होनेवाला भोगी, धर्मवान्, जनों का प्यारा, मिष्टान्न आदि का भोजन करनेवाला, सौभाग्यवाला और भाइयों का प्यारा हो ॥ ५१ ॥

सिंहलग्नोदये जातो भोगी शत्रुविमर्दकः ।
स्वल्पोदरोऽल्पपुत्रश्च सोत्साही रणविक्रमः ॥ ५२ ॥

सिंह के लग्न में जिसका जन्म हो, वह भोगी, शत्रुओं का मारनेवाला, छोटे पेटवाला, थोड़ी संतानवाला, उत्साह करनेवाला और रण में पराक्रम करनेवाला हो ॥ ५२ ॥

कन्यालग्नभवो बालो नानाशास्त्रविशारदः ।
सौभाग्यगुणसम्पन्नः सुन्दरः सुरतप्रियः ॥ ५३ ॥

जिसका कन्यालग्न में जन्म हो, वह बालक अनेक शास्त्रों में निपुण, सौभाग्य और गुणों करके युक्त, सुंदर और सुरतप्रिय हो ॥ ५३ ॥

तुलालग्नोदये जातः सुधीः सत्कर्मजीवनः ।
विद्वान्सर्वकलाभिज्ञो धनाढ्यो जनपूजितः ॥ ५४ ॥

जिसका तुलालग्न में जन्म हो, वह अच्छी बुद्धिवाला, अच्छे कर्मों से जीविका करनेवाला विद्वान्, सब कलाओं का जाननेवाला; धनवान् और जनों करके पूजित हो ॥ ५४ ॥

वृश्चिकोदयसञ्जातः शौर्यवानतिदुष्टधीः ।
विज्ञानज्ञानसम्पन्नः सुखी सुविग्रहः सुधीः ॥ ५५ ॥

वृश्चिकलग्न के उदय में जिसका जन्म हो, वह वीर, बड़ी दुष्ट बुद्धिवाला, ज्ञान विज्ञान करके युक्त, सुखी, सुंदर देहवाला और अच्छी बुद्धिवाला हो ॥ ५५ ॥

धनुर्लग्नोदये जातो नीतिमान्धर्मवान् सुधीः ।
कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञः सर्वस्य पोषकः ॥ ५६ ॥

धनुलग्न के उदय में जिसका जन्म हो, वह नीतिमान्, धर्मवान्, सुन्दर बुद्धिवाला, कुलश्रेष्ठ, बुद्धिमान् और सबका पालन करनेवाला हो ॥ ५६ ॥

मकरोदयसञ्जातो नीचकर्मबहुप्रजः ।
लुब्धो विनष्टोऽलसश्च स्वकार्येषु कृतोद्यमः ॥ ५७ ॥

मकरलग्न के उदय में उत्पन्न हुआ बालक नीच कर्म करनेवाला, बहुत संतानवाला, लोभी, नष्ट, आलसी और अपने काम में उद्यम करनेवाला हो ॥ ५७ ॥

कुम्भलग्नोदये जातश्चलचित्तोऽतिसौहृदः ।
परदाररतो नित्यं मृदुकायो महासुखी ॥ ५८ ॥

कुम्भलग्न के उदय में उत्पन्न हुआ बालक चलायमान चित्त-वाला, बहुत मित्रोंवाला, सदा पराई स्त्री में रत, कोमल देहवाला और महासुखी हो ॥ ५८ ॥

मीनलग्नोदये जातो रत्नकाञ्चनपूरितः ।
अल्पकामोऽतिरक्तश्च दीर्घकालविचिन्तकः ॥ ५९ ॥

जन्मलग्नफल समाप्त ।

मीनलग्न के उदय में उत्पन्न हुआ बालक रत्न और सोने से पूरित थोड़ी कामनावाला, बहुत दुर्बल और बहुत देर तक चिन्तन करने वाला हो ॥ ५९ ॥

जन्मलग्नफल समाप्त ।

क्रूरसंगी धनैर्हीनः कुलसन्तापकारकः ।
व्यसनासक्तचित्तश्च प्रतिपत्तिथिजो नरः ॥ ६० ॥

परवा तिथि में जिसका जन्म हो, वह क्रूर संगवाला, धनहीन, कुल में संताप करनेवाला और व्यसन में आसक्त चित्तवाला हो ॥ ६० ॥

परदाररतो नित्यं सत्यशौचविवर्जितः ।
तस्करः स्नेहहीनश्च द्वितीयासम्भवो नरः ॥ ६१ ॥

द्वितीया तिथि में जिसका जन्म हो, वह पराई स्त्री में सदा रत, सत्य और पवित्रतारहित, चोर और स्नेहरहित हो ॥ ६१ ॥

अचेतनोऽतिविकलो निर्द्रव्यो दुर्बलः सदा ।
परद्वेषरतो नित्यं तृतीयायां भवेन्नरः ॥ ६२ ॥

तृतीया तिथि में उत्पन्न हुआ पुरुष चैतन्यरहित, बहुत विकल, द्रव्यहीन, सदा दुर्बल और दूसरे से द्वेष करने में सदा ही रत हो ॥ ६२ ॥

महाभोगी च दाता च मित्रस्नेहविचक्षणः ।
धनसन्तानयुक्तश्च चतुर्थ्यां यदि जायते ॥ ६३ ॥

जिसका चतुर्थी तिथि में जन्म हो, वह महाभोगी, दानी, मित्र के स्नेह में निपुण और धन तथा सन्तान करके युक्त हो ॥ ६३ ॥

व्यवहारी गुणग्राही मातृपित्रोश्च रक्षकः ।
दाता भोक्ता तनुप्रीतिः पञ्चमीसम्भवो नरः ॥ ६४ ॥

पञ्चमी तिथि में उत्पन्न हुआ पुरुष व्यवहारी, गुणों का ग्रहण करनेवाला, माता और पिता की रक्षा करनेवाला, दानी, भोगी और थोड़ी प्रीति करनेवाला होता है ॥ ६४ ॥

नानादेशाभिगामी च सदा कलहकारकः ।
नित्यं जठरदोषी च षष्ठीजातो भवेन्नरः ॥ ६५ ॥

जिसका षष्ठी तिथि में जन्म हो, वह अनेक देशों में जानेवाला, सदा लड़ाई करनेवाला और सदैव पेट में दोषवाला होवे ॥ ६५ ॥

अल्पतोषी च तेजस्वी सौभाग्यगुणसुन्दरः ।
पुत्रवान् धनसम्पन्नः सप्तम्यां जायते नरः ॥ ६६ ॥

सप्तमी तिथि में पैदा हुआ पुरुष थोड़े में संतुष्ट होनेवाला, तेजस्वी, सौभाग्य और गुणों में सुंदर, पुत्रवान् और धनी होता है ॥ ६६ ॥

धर्मिष्ठः सत्यवादी च दाता भोक्ता च वत्सलः ।
गुणज्ञः सर्वकालज्ञश्चाष्टमीसम्भवो नरः ॥ ६७ ॥

अष्टमी तिथि में उत्पन्न हुआ पुरुष धर्मवान्, सत्य बोलनेवाला, दानी, भोगी, सबका प्रिय, गुणी और सब कार्यों का जाननेवाला होता है ॥ ६७ ॥

देवताराधकः पुत्री धनी स्त्रीमग्नमानसः ।
शास्त्राभ्यासरतो नित्यं नवम्यां यदि जायते ॥ ६८ ॥

नवमी तिथि में जिसका जन्म हो, वह देवताओं की आराधना करनेवाला, पुत्रवान्, धनी, स्त्री में आसक्त चित्तवाला और शास्त्र के अभ्यास में सदा रत होता है ॥ ६८ ॥

दशम्यां सर्वधर्मज्ञो देवसेवी च जापकः ।
गुणी धनी वेदविज्ञो बन्धुविप्रप्रियो जनः ॥ ६९ ॥

दशमी तिथि में जिसका जन्म हो, वह सब धर्मों का जाननेवाला, देवताओं की सेवा और जप करनेवाला, गुणी, धनी, वेद को जाननेवाला और बन्धु तथा ब्राह्मणों का सदा प्रिय हो ॥ ६९ ॥

एकादश्यां नरेन्द्रस्य गेहगामी शुचिर्भवेत् ।
धर्मज्ञश्च विवेकी च गुरुशुश्रूषको गुणी ॥ ७० ॥

एकादशी तिथि में उत्पन्न हुआ पुरुष राजा के घर का जानेवाला

पवित्र, धर्म का जाननेवाला, विवेकी, गुरु की सेवा करनेवाला और गुणी होता है ॥ ७० ॥

चपलश्चञ्चलज्ञानः सदा क्षीणः स्वरूपतः ।
देशभ्रमणशीलश्च द्वादश्यां जायते नरः ॥ ७१ ॥

द्वादशी तिथि में जो उत्पन्न हो, वह चपल, चंचल, ज्ञानवाला, सदा क्षीण स्वरूपवाला और परदेश में घूमनेवाला होता है ॥ ७१ ॥

महासिद्धो महाप्राज्ञः शास्त्राभ्यासी जितेन्द्रियः ।
परकार्यरतो नित्यं त्रयोदश्यां प्रजायते ॥ ७२ ॥

जो त्रयोदशी तिथि में उत्पन्न हो, वह महासिद्ध, महाबुद्धिमान्, शास्त्र में अभ्यास करनेवाला इंद्रियों को जीतनेवाला और सदा पराये कार्य में रत होता है ॥ ७२ ॥

धनाढ्यो धर्मशीलश्च शूरः सद्वाक्यपालकः ।
राजमान्यो यशस्वी च चतुर्दश्यां नरो भवेत् ॥ ७३ ॥

चतुर्दशी तिथि में जिसका जन्म हो, वह धनी, धर्मशील, शूरवीर, अच्छे वचनों की पालना करनेवाला, राजाओं में पूज्य और यशस्वी होवे ॥ ७३ ॥

श्रीयुतो मतियुक्तश्च महाभोजनलालसः ।
उज्ज्वलः परदारेषु रतो ना पूर्णिमाभवः ॥ ७४ ॥

पौर्णमासी तिथि में जो उत्पन्न हो, वह लक्ष्मी और बुद्धि करके युक्त, महाभोजन में लालसा करनेवाला, उज्ज्वल और पराई स्त्री में रमण करनेवाला होता है ॥ ७४ ॥

स्थिरारम्भः परद्वेषी वक्रो मूर्खः पराक्रमी ।
गूढमन्त्री च संज्ञानी ह्यमावास्याभवो जनः ॥ ७५ ॥

जन्मतिथि फल समाप्त ।

अमावास्या में उत्पन्न हुआ पुरुष, स्थिर कार्य का आरंभ करनेवाला, शत्रुओं से वैर करनेवाला, कुटिल, मूर्ख, पराक्रमी, गूढ़ मंत्री और ज्ञानवान् होता है ॥ ७५ ॥

जन्मतिथिफल समाप्त ।

जन्म-योग-फल ।

विष्कुम्भजातो मनुजो रूपवान् भाग्यवान् भवेत् ।
नानालङ्कारसम्पूर्णो महाबुद्धिविशारदः ॥ ७६ ॥

विष्कुभयोग में उत्पन्न हुआ पुरुष रूपवान्, भाग्यवान्, अनेक प्रकार के अलंकारों से पूर्ण, महाबुद्धिमान् और चतुर होवे ॥ ७६ ॥

प्रीतियोगे समुत्पन्नो योषितां वल्लभो भवेत् ।
तत्त्वज्ञश्च महोत्साही स्वार्थी नित्यं कृतोद्यमः ॥७७॥

प्रीति योग में उत्पन्न हुआ पुरुष स्त्रियों को प्यारा, तत्त्व का जाननेवाला, बड़े उत्साहवाला, स्वार्थी और सदा उद्यम करनेवाला हो ॥७७॥

आयुष्मान्नाम्नि योगे च जातो मानी धनी कविः ।
दीर्घायुः सत्त्वसम्पन्नो युद्धे चाप्यपराजितः ॥ ७८ ॥

आयुष्मान् योग में उत्पन्न हुआ पुरुष अभिमानी, धनी, कवि, बड़ी आयुवाला, सत्त्व करके युक्त और युद्ध में न हारनेवाला होता है ॥ ७८ ॥

सौभाग्ये यः समुत्पन्नो राजमन्त्री च जायते ।
निपुणः सर्वकार्येषु वनितानां च वल्लभः ॥ ७९ ॥

सौभाग्य योग में जो उत्पन्न हुआ हो, वह राजा का मन्त्री, सब कामों में निपुण और स्त्रियों का प्यारा होता है ॥ ७९ ॥

शोभने शोभनो बालो बहुपुत्रकलत्रवान् ।
आतुरः सर्वकार्येषु युद्धभूमौ सदोत्सुकः ॥ ८० ॥

शोभन योग में जिसका जन्म हो, वह बालक स्वरूपवान्, बहुत

पुत्र तथा स्त्रियों से युक्त, सब कार्यों में आतुर और संग्राम में सदा तत्पर रहे ॥ ८० ॥

अतिगण्डे च यो जातो मातृहन्ता भवेच्च सः ।
गण्डान्तेषु च जातस्तु कुलहन्ता प्रकीर्तितः ॥ ८१ ॥

अतिगंड योग में जिसका जन्म हो, वह अपनी माता का मारनेवाला, हो और यदि अतिगंड के अंत में जन्म हो तो कुल का नाशक हो ८१॥

सुकर्मणि च यो जातः सुकर्मा जायते नरः ।
सर्वैः प्रीतः सुशीलश्च रागी भोगी गुणाधिकः ॥ ८२ ॥

जिसका सुकर्म योग में जन्म हो, वह मनुष्य अच्छे कर्म करनेवाला सबसे प्रीति करनेवाला, सुशील, रागी, भोगी और अधिक गुणोंवाला हो ॥ ८२ ॥

धृतिमान्धृतियोगे च कीर्तिपुष्टिधनान्वितः ।
भाग्यवान् रूपसम्पन्नो विद्यावान् गुणवान्भवेत् ॥८३॥

जिसका धृति योग में जन्म हो, वह धैर्यवाला, यश, पुष्टि और धन करके युक्त, भाग्यवान्, रूप, विद्या और गुणों से युक्त हो ॥८३॥

शूले शूलव्यथायुक्तो धार्मिकः शास्त्रपारगः ।
विद्यार्थकुशलो यज्वा जायते मनुजः सदा ॥ ८४ ॥

शूल योग में उत्पन्न हुआ पुरुष शूल की व्यथा करके युक्त, धर्मवान्, शास्त्र के पार को जानेवाला, विद्या और द्रव्य में कुशल और सदा यज्ञ करनेवाला हो ॥ ८४ ॥

गण्डे गण्डव्यथायुक्तो बहुक्लेशो महाशिराः ।
ह्रस्वकायो महास्थूलो बहुभोगी दृढव्रतः ॥ ८५ ॥

गंडयोग में जिसका जन्म हो, वह गंड करके युक्त, बहुत क्लेशवाला, बड़े शिरवाला, ठेंगना, बहुत मोटा, बहुत भोगी और दृढ़व्रत करनेवाला हो ॥ ८५ ॥

वृद्धियोगे च दीर्घायुर्बहुपुत्रकलत्रवान् ।
धनवानतिभोक्ता च सत्त्ववानपि जायते ॥ ८६ ॥

वृद्धि योग में जन्मवाला पुरुष बड़ी आयुवाला, बहुत पुत्र-स्त्रियों से युक्त, धनवान्, अतिभोगी और बलवान् भी हो ॥ ८६ ॥

ध्रुवयोगे च दीर्घायुः सर्वेषां प्रियदर्शनः ।
स्थिरकर्मातिसक्तश्च ध्रुवबुद्धिश्च जायते ॥ ८७ ॥

ध्रुव योग में जन्मवाला मनुष्य बड़ी आयुवाला, सबको प्रियदर्शनवाला, स्थिर कर्म करनेवाला, अतिसक्त और निश्चय बुद्धिवाला हो ॥ ८७ ॥

व्याघातयोगे जातस्तु सर्वज्ञः सर्वपूजितः ।
सर्वकर्मकरो लोके व्याख्यातः सर्वकर्मसु ॥ ८८ ॥

जिसका व्याघात योग में जन्म हो, वह सब जाननेवाला, सबसे पूजित, सब कर्म करनेवाला और संसार में सब कामों में प्रसिद्ध हो ॥ ८८ ॥

हर्षणे जायते लोके महाभोगी नृपप्रियः ।
हृष्टः सदा धनैर्युक्तो वेदशास्त्रविशारदः ॥ ८९ ॥

हर्षण योग में जन्मवाला मनुष्य संसार में महाभोगी, राजा को प्यारा, सदा प्रसन्न रहनेवाला, धनी और वेद-शास्त्र में निपुण हो ॥८९॥

वज्रयोगे वज्रमुष्टिः सर्वविद्यासु पारगः ।
धनधान्यसमायुक्तो मनुजो वज्रविक्रमः ॥ ९० ॥

जिसकी वज्र योग में उत्पत्ति हो, वह पुरुष वज्रमुष्टि अर्थात् वज्र के समान मुष्टिवाला, सब विद्याओं के पार को जानेवाला, धन-धान्य से युक्त और बड़ा बली हो ॥ ९० ॥

सिद्धियोगे समुत्पन्नः सर्वसिद्धियुतो भवेत् ।
दाता भोक्ता सुखी कान्तः शोकी रोगी च मानवः ॥९१॥

सिद्धि योग में जो मनुष्य उत्पन्न हो, वह सब सिद्धियों से युक्त, दानी, भोगी, सुखी, सुंदर, शोक और रोग-युक्त हो ॥ ९१ ॥

व्यतीपाते नरो जातो महाकष्टेन जीवति।
जीवेच्चेद्भाग्ययोगेन स भवेदुत्तमो नृणाम् ॥ ९२ ॥

व्यतीपात योग में उत्पन्न पुरुष, बड़े कष्ट से जीता है। यदि भाग्य से जीता है, तो मनुष्यों में उत्तम होता है ॥ ९२ ॥

वरीयान्नाम्नि योगे च वरिष्ठो जायते नरः।
शिल्पकाव्यकलाभिज्ञो गीतनृत्यादिकोविदः ॥ ९३ ॥

वरीयान् योग में जिसकी उत्पत्ति हो, वह अति श्रेष्ठ, कारीगरी, काव्य आदि कला को जाननेवाला और गीत-नृत्यादि का जाननेवाला हो ॥ ९३ ॥

परिघे च नरो जातः स्वकुलोन्नतिकारकः।
शास्त्राभिज्ञः कविर्वाग्मी दाता भोक्ता प्रियंवदः ॥९४॥

परिघ योग में उत्पन्न हुआ पुरुष, अपने कुल की वृद्धि करनेवाला, शास्त्र का जाननेवाला, कवि, विलक्षण बुद्धिवाला, दानी, भोगी और प्रिय बोलनेवाला होता है ॥ ९४ ॥

शिवयोगे नरो जातः सर्वकल्याणभाजनः।
महादेवसमो लोके महाबुद्धिर्वरप्रदः ॥ ९५ ॥

शिव योग में उत्पन्न हुआ पुरुष सब कल्याणों का भाजन, महाबुद्धि और वर का देनेवाला, संसार में महादेव के समान हो ॥ ९५ ॥

सिद्धियोगे सिद्धिदाता मन्त्रसिद्धिप्रवर्तकः।
दिव्यनारी समेतश्च सर्वसम्पद्युतो भवेत् ॥ ९६ ॥

सिद्धि योग में उत्पन्न मनुष्य सिद्धि का देनेवाला, मन्त्र-सिद्धि करनेवाला, सुंदर नारी और सम्पदाओं से युक्त हो ॥ ९६ ॥

साध्ये मानसिका सिद्धिर्यशोऽशेषः सुखागमः।
दीर्घसूत्रः प्रसिद्धश्च जायते सर्वसम्मतः ॥ ९७ ॥

साध्य योग में उत्पन्न पुरुष मानसी-सिद्धि से युक्त, यशस्वी, सुखी, दीर्घसूत्री (देरी में काय करनेवाला) एवं प्रसिद्ध और सबका मित्र हो ॥९७॥

शुभे शुभशतैर्युक्तो धनवानपि जायते ।
विज्ञानशास्त्रसम्पन्नो दाता ब्राह्मणपूजकः ॥ ९८ ॥

शुभ योग में उत्पन्न पुरुष सैकड़ों शुभ कामों से युक्त, धनी, विज्ञान-शास्त्र से युक्त, दानी और ब्राह्मण की पूजा करनेवाला हो ॥ ९८ ॥

शुक्ले सर्वकलायुक्तः सर्वार्थज्ञानवान्भवेत् ।
क्वचित्प्रतापी शूरश्च धनी सर्वजनप्रियः ॥ ९९ ॥

शुक्ल योग में उत्पन्न हुआ पुरुष सब कलाओं से युक्त, सब प्रयोजनों के ज्ञानवाला कहीं-कहीं प्रताप और वीरता करनेवाला, धनी और सब मनुष्यों को प्यारा हो ॥ ९९ ॥

ब्रह्मयोगे महाविद्वान् वेदशास्त्रपरायणः ।
ब्रह्मज्ञानरतो नित्यं सर्वकार्येषु कोविदः ॥ ३०० ॥

ब्रह्म योग में उत्पन्न मनुष्य विद्वान्, वेद-शास्त्र को जाननेवाला सदैव ब्रह्मज्ञान में रत और सब कामों में निपुण होवे ॥ ३०० ॥

ऐन्द्रे भूपकुले जातो राजा भवति विश्रुतः ।
अल्पायुश्च सुखी भोगी गुणवानपि जायते ॥ १ ॥

ऐन्द्र योग में उत्पन्न पुरुष राजा के कुल में उत्पन्न होकर थोड़ी आयुवाला, सुखी, भोगी और गुणवान् राजा होवे ॥ १ ॥

वैधृतौ जायमानस्तु निरुत्साहो बुभुक्षितः ।
कुर्वाणोऽपि जनैः प्रीतिं प्रयात्यप्रियतां नरः ॥ २ ॥

जन्मयोग-फल समाप्त ।

वैधृति योग में उत्पन्न मनुष्य उत्साह-हीन, बुभुक्षित (कंगाल) मनुष्यों से प्रीति करता हुआ भी अप्रिय होता है ॥ २ ॥

जन्मयोगफल समाप्त ।

अथ जन्मकरणफल ।

ववाख्ये करणे जातो मानी धर्मरतः सदा ।
शुभमंगलकर्मा च स्थिरकर्मा च जायते ॥ ३ ॥

बव करण में उत्पन्न हुआ पुरुष अभिमानी, सदा धर्म में रत, शुभ मंगल-कर्म और स्थिर-कर्म करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

बालवाख्ये नरो जातस्तीर्थदेवादिसेवकः ।
विद्यार्थशौर्यसम्पन्नो राजमान्यश्च जायते ॥ ४ ॥

बालव करण में उत्पन्न मनुष्य तीर्थ और देवतादिकों की सेवा करनेवाला, विद्या, द्रव्य और शूरता से युक्त और राजाओं में पूज्य हो ॥ ४ ॥

कौलवे च नरो जातः प्रीतिः सर्वजनैः सह ।
संगतिर्मित्रवर्गैश्च मानवैश्च प्रजायते ॥ ५ ॥

कौलव करण में उत्पन्न हुआ पुरुष सब मनुष्यों से प्रीति करनेवाला और मित्रजनों से संगति करनेवाला हो ॥ ५ ॥

तैतिले करणे जातः सौभाग्यगुणसंयुतः ।
स्नेहः सर्वजनैः सार्द्धं विचित्राणि गृहाणि च ॥ ६ ॥

तैतिल करण में उत्पन्न मनुष्य सौभाग्य और गुण-संयुक्त, सब मनुष्यों से स्नेह करनेवाला और सुन्दर घरवाला हो ॥ ६ ॥

गराख्ये कृषिकर्मा च गृहकार्यपरायणः ।
यद्वस्तु वाञ्छितं तच्च लभ्यतेऽत्र महोद्यमैः ॥ ७ ॥

गर करण में उत्पन्न पुरुष खेती करनेवाला, घर के काम में निपुण और जिस वस्तु की अभिलाषा करे, वह वस्तु बड़े उपायों से मिल जावे ॥ ७ ॥

वणिजे करणे जातो वाणिज्येनैव जीवति ।
वाञ्छितं लभते लोके देशान्तरगमागमैः ॥ ८ ॥

वणिज् करण में उत्पन्न पुरुष वाणिज्य से जीविका और परदेश के आने-जाने से वाञ्छित (मन चाहे पदार्थ) को प्राप्त करे ॥ ८ ॥

विष्ट्याख्ये करणे जातो ह्यशुभारंभशीलवान् ।
कुशलो विषकार्येषु परघातरतः सदा ॥ ९ ॥

विष्टि करण में उत्पन्न मनुष्य अशुभ कार्य आरम्भ करनेवाला, विष के कामों में निपुण और सदा पराये घात में रत रहे ॥ ९ ॥

शकुनौ करणे जातः पौष्टिकादिक्रियाकृती ।
औषधादिषु दक्षश्च भिषग्वृत्तिश्च जायते ॥ १० ॥

शकुनि करण में उत्पन्न पुरुष पुष्टि-कारक क्रिया में निपुण और औषधादिकों में निपुण और वैद्य की जीविका करनेवाला होता है ॥१०॥

करणे च चतुष्पादे देवद्विजरतः सदा ।
गोकर्मा गोप्रभुर्लोके चतुष्पादचिकित्सकः ॥ ११ ॥

चतुष्पाद करण में उत्पन्न मनुष्य सदा देव और ब्राह्मणों में रत, गौओं के कार्य का करनेवाला, गौओं का ही रक्षक और चौपायों की औषध करनेवाला हो ॥ ११ ॥

नागाख्ये करणे जातः स्थावरप्रीतिकारकः ।
कुरुते दारुणं कर्म दुर्भगो लोललोचनः ॥ १२ ॥

नाग करण में उत्पन्न हुआ पुरुष स्थावरों (वृक्ष आदिकों) से प्रीति करनेवाला, दारुण कर्म करनेवाला, अभागी और चंचलनेत्रों-वाला हो ॥ १२ ॥

किंस्तुघ्ने करणे जातः शुभकर्मरतो नरः ।
तुष्टिं पुष्टिं च माङ्गल्यं सिद्धिं च लभते सदा ॥ १३ ॥

करण-फल समाप्त ।

किंस्तुघ्न करण में उत्पन्न हुआ मनुष्य शुभ कर्म में रत, तुष्टि, पुष्टि, मांगल्य और सिद्धि को प्राप्त होवे ॥ १३ ॥

अथ जन्मराशिनवांशकफल ।

पिशुनश्चपलो दुष्टः पापकर्मा निराकृतिः ।
परेषां व्यसने सक्तश्चौरश्च प्रथमांशके ॥ १४ ॥

जन्मराशि के पहले नवांशक में जिसका जन्म हो, वह चुगलखोर, चंचल बुद्धिवाला, दुष्ट, पापी, कुरूप, शत्रुओं के व्यसन में आसक्त और चोर होता है ॥ १४ ॥

उत्पन्नविभवो भोक्ता संग्रामे विगतस्पृहः ।
गन्धर्वप्रमदासक्तो द्वितीयांशे च जायते ॥ १५ ॥

दूसरे नवांशक में उत्पन्न पुरुष ऐश्वर्यवान्, भोगी, लड़ाई की इच्छा करनेवाला, और गानेवाले पुरुष की स्त्री में आसक्त हो ॥ १५ ॥

धर्मिष्ठः सततं व्याधिः सर्वसारज्ञ एव च ।
सर्वज्ञो देवताभक्तस्तृतीयांशे च जायते ॥ १६ ॥

तीसरे नवांशक में उत्पन्न पुरुष धर्मवान्, सदा व्याधि-युक्त, सब सार को जाननेवाला, सर्वज्ञ और देवों का भक्त हो ॥ १६ ॥

चतुर्थांशेऽभिजातस्तु दीक्षितो गुरुभक्तिमान् ।
यत्किञ्चिद्भूमिगं वस्तु तत्सर्वं लभते च सः ॥ १७ ॥

चौथे नवांशक में उत्पन्न मनुष्य दीक्षित, गुरु की भक्ति करनेवाला और जितनी वस्तु पृथ्वी में हैं उन सबको प्राप्त हो ॥ १७ ॥

सर्वलक्षणसम्पन्नो राजा भवति विश्रुतः ।
दीर्घायुर्बहुपुत्रश्च जायते पञ्चमांशके ॥ १८ ॥

पाँचवें नवांशक में उत्पन्न पुरुष बड़ी आयुवाला, बहुत पुत्रों से युक्त, सब लक्षणों से सम्पन्न और प्रसिद्ध राजा होता है ॥ १८ ॥

स्त्रीनिर्जितः शुभैर्हीनो बहुभाषी नपुंसकः ।
अर्थध्वंसः प्रमादी च षष्ठांशे जायते नरः ॥ १९ ॥

छठे नवांशक में उत्पन्न पुरुष स्त्री के वश में रहनेवाला, शुभ कर्मों से हीन, बहुत बोलनेवाला, नपुंसक, द्रव्य-हीन और प्रमादी हो ॥१९॥

विक्रान्तो मतिमाञ्छूरः सङ्ग्रामेष्वपराजितः ।
महोत्साही च सन्तोषी जायते सप्तमांशके ॥ २० ॥

सातवें नवांशक में उत्पन्न मनुष्य पराक्रमी, बुद्धिमान्, शूर-वीर, लड़ाई में जीतनेवाला, बड़ा उत्साही और सन्तोषी हो ॥ २० ॥

कृतघ्नो मत्सरी क्रूरः क्लेशभोक्ता बहुप्रजः ।
फलकालपरित्यागी जायते चाष्टमांशके ॥ २१ ॥

आठवें नवांशक में उत्पन्न पुरुष कृतघ्न, ईर्षा करनेवाला, क्रूर, क्लेश भोगनेवाला, बहुत संतानवाला और फलकाल में त्याग करनेवाला हो ॥ २१ ॥

क्रियासु कुशलो दक्षः सुप्रतापी जितेन्द्रियः ।
भृत्यैश्चावेष्टितो नित्यं जायते नवमेंऽशके ॥ २२ ॥

जन्मराशिनवांशकफल समाप्त ।

नवें अंश में उत्पन्न पुरुष क्रियाओं में निपुण, प्रवीण, अच्छे प्रताप-वाला, जितेन्द्रिय और सदा नौकरों से युक्त हो ॥ २२ ॥

जन्मराशिनवांशकफल समाप्त ।

गण-फल ।

सुन्दरो दानशीलश्च मतिमान्सबलः सदा ।
अल्पभोगी महाप्राज्ञो नरो देवगणोद्भवः ॥ २३ ॥

देवता गण में जिसका जन्म हो वह सुंदर, दानशील, बुद्धिमान्, सदा बली, थोड़ा भोग करनेवाला और बड़ा बुद्धिमान् मनुष्य हो ॥ २३ ॥

मानी धनी विशालाक्षो लक्ष्यवेधी धनुर्द्धरः ।
गौरः पौरजनाह्लादी नरो मर्त्यगणोद्भवः ॥ २४ ॥

मनुष्य गण में जिसका जन्म हो, वह अभिमानी, धनी, सुंदर नेत्रों-वाला, निशाना बेधनेवाला धनुर्धारी, गोरे रंगवाला और पुरवासियों को आनंद देनेवाला हो ॥ २४ ॥

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदा कलिवल्लभः ।
पुरुषं दुस्सहं ब्रूते प्रमेही राक्षसे गणे ॥ २५ ॥

जन्म-गण-फल समाप्त ।

राक्षस गण में जिसका जन्म हो, वह उन्मादी, भयानक-स्वरूप, सदा कलह (लड़ाई) करनेवाला, अन्य पुरुषों से दुःसह बोलनेवाला और प्रमेह रोगी हो ॥ २५ ॥

जन्म-गण-फल समाप्त ।

अथ ऋतुफल ।

महोद्यमी मनस्वी च तेजस्वी बहुकार्यकृत् ।
नाना देशरतोऽभिज्ञो वसन्ते जायते नरः ॥ २६ ॥

वसन्त ऋतु में जिसका जन्म हो, वह बड़ा उद्यमी, मनस्वी, तेजस्वी, बहुत कार्य करनेवाला, अनेक देशों में रत और सर्वज्ञ हो ॥ २६ ॥

बह्वारम्भो जितक्रोधः क्षुधालुः कामुको नरः ।
दीर्घः शूरो बुद्धिमांश्च ग्रीष्मे जातः सदा शुचिः ॥२७॥

ग्रीष्मऋतु में उत्पन्न पुरुष बहुत वस्तुओं का आरम्भ करनेवाला, अक्रोधी (क्रोध हीन), क्षुधालु, कामुक, लंबा, शूर-वीर, बुद्धिमान् और सदा पवित्र रहता है ॥ २७ ॥

गुणवान्भोगयुक्तश्च राजपूज्यो जितेन्द्रियः ।
कुशलः सत्यवादी च वर्षाकाले भवेन्नरः ॥ २८ ॥

वर्षाऋतु में उत्पन्न पुरुष गुणी, भोग-युक्त, राज-पूज्य, जितेन्द्रिय, प्रवीण और सत्यवादी होता है ॥ २८ ॥

वाणिज्यकृषिवृत्तिश्च धनधान्यसमृद्धिमान् ।
तेजस्वी बहुमान्यश्च शरज्जातो भवेन्नरः ॥ २९ ॥

शरद् ऋतु में उत्पन्न मनुष्य वाणिज्य और खेती करनेवाला, धन-धान्य और समृद्धियों से युक्त, तेजस्वी और बहुत पूज्य हो ॥ २९ ॥

बहुवीर्यो नीतिविज्ञो ग्रामयुक्तः सदोद्यमी ।
ह्रस्वपादगलो भीरुर्हेमन्ते जायते नरः ॥ ३० ॥

जिसका हेमन्त ऋतु में जन्म हो, वह बड़ा पराक्रमी, नीतिज्ञ, ग्रामयुक्त, सदा उद्यम करनेवाला, छोटे पैर और गलेवाला हो ॥३०॥

रूपयौवनसम्पन्नो दीर्घसूत्री मदोत्कटः ।
क्षुधायुक्तः कामुकश्च शिशिरे जायते नरः ॥ ३१ ॥

जिसका शिशिर ऋतु में जन्म हो, वह रूप और यौवन से सम्पन्न, दीर्घसूत्री (देरी में काम करनेवाला), मदान्ध, क्षुधा-युक्त और कामुक हो ॥ ३१ ॥

ऋतुफल समाप्त ।

पक्ष-फल ।

पूर्णचन्द्रनिभः श्रीमान् सोद्यमी बहुशास्त्रवित् ।
कुशलो ज्ञानसम्पन्नः शुक्लपक्षे भवेन्नरः ॥ ३२ ॥

जिसका शुक्लपक्ष में जन्म हो, वह पूर्ण चन्द्रमा के तुल्य कांति-वाला, लक्ष्मीवान्, उद्यमी, अनेक शास्त्रों को जाननेवाला, चतुर और ज्ञान-युक्त हो ॥ ३२ ॥

निष्ठुरो दुर्मुखो मूर्खः स्त्रीद्वेषी च जनोज्झितः ।
जायते च परप्रेष्यः कृष्णपक्षे भवेन्नरः ॥ ३३ ॥

जिसका कृष्णपक्ष में जन्म हो, वह निष्ठुर, दुर्मुख, मूर्ख, स्त्री का वैरी, मनुष्यों से छोड़ा हुआ और शत्रु का नौकर हो ॥ ३३ ॥

पक्षफल समाप्त ।

अयनफल ।

रूपवान् गुणशीलश्च सप्रतापी जनेश्वरः ।
सर्वसौख्यं समाप्नोति जायते चोत्तरायणे ॥ ३४ ॥

उत्तरायण सूर्य में जिसका जन्म हो, वह रूपवान, गुणी, प्रतापी, मनुष्यों का स्वामी और सब सुख को प्राप्त हो । ३४ ॥

कृषिकर्मरतो नित्यं गोमहिष्यादिसंयुतः ।
कामी सर्वजनो वादी जायते दक्षिणायने ॥ ३५ ॥

जिसका दक्षिणायन में जन्म हो वह खेती के कर्म में सदा लगा रहनेवाला, गौ, भैंसी इत्यादि से युक्त, कामी, बहुत जनों से युक्त और वादी हो ॥ ३५ ॥

अयनफल समाप्त ।

तुङ्गफल ।

महाधनी महोग्रश्च तुङ्गस्थे भास्करे नरः ।
सुभूषणो महाभोगी धनी चन्द्रे च जायते ॥ ३६ ॥

उच्च के सूर्य में जिसका जन्म हो वह महाधनी और बड़ा उग्र हो । उच्च चन्द्रमा में जिसका जन्म हो, वह सुंदर भूषणवाला, महाभोगी और धनी हो ॥ ३६ ॥

उच्चभौमे सुपुत्रश्च तेजस्वी गर्वितो नरः ।
मेधावी दृढवाक्यश्च बलाढ्यश्च बुधे भवेत् ॥ ३७ ॥

उच्च के मंगल में जिसका जन्म हो, वह सुंदर पुत्रवाला, तेजस्वी

और अभिमानी मनुष्य हो । उच्च के बुध में बुद्धिमान्, दृढ़ वचन बोलनेवाला और बली हो ॥ ३७ ॥

राजपूज्यश्च विख्यातो विद्वानार्यो गुरौ नरः ।
उच्चे शुक्रे विलासी च हास्यगीतादिसंयुतः ॥ ३८ ॥

उच्च के बृहस्पति में राजाओं में पूज्य, विख्यात, विद्वान् और श्रेष्ठ हो । उच्च के शुक्र में विलासी और हास्यगीतादि संयुक्त हो ॥ ३८ ॥

तुङ्गस्थे भानुपुत्रे च चक्रवर्त्ती धनी भवेत् ।
राजलब्धानियोगश्च राहुः शनिसमो मतः ॥ ३९ ॥

तुङ्गफल समाप्त ।

उच्च के शनैश्चर में चक्रवर्ती, धनी और राजाओं का सम्मत हो जैसा कि शनैश्चर का फल है, वैसा ही उच्च के राहु का भी होता है ॥ ३९ ॥

तुङ्गफल समाप्त ।

मूल-त्रिकोणगतग्रह फल ।

धनी सुखी कार्यविज्ञो रवौ मूलत्रिकोणगे[1] ।
चन्द्रे धनी सुभोक्ता च भौमे शूरोदयः खलः ॥ ४० ॥

सूर्य मूल त्रिकोण में हो, तो धनी, सुखी और कार्य का जाननेवाला होवे । चन्द्रमा मूलत्रिकोण में हो, तो धनी और सुभोगी हो । मङ्गल हो, तो शूर और दुष्ट हो ॥ ४० ॥

१—मूल त्रिकोण-लक्षण ।

सिंहवृषाजप्रमदाकार्मुकभृत्तौलिकुम्भधराः ।
मूलत्रिकोणानि रविग्लौभौमज्ञेज्यशुक्रसौरीणाम् ॥ १ ॥

अर्थ—सिंह, वृष, मेष, कन्या, धन, तुला और कुम्भ ये राशियाँ क्रम से सूर्य, चंद्र, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि, इन ग्रहों की स्थिति से मूलत्रिकोण कहलाती हैं ।

बुधे त्रिकोणे विज्ञश्च विनोदी विजयी नरः ।
गुरौ ग्रामपुरादीनां मठस्य च पतिर्भवेत् ॥ ४१ ॥

बुध मूलत्रिकोण में स्थित हो, तो पण्डित आनन्दी और विजयी मनुष्य हो । बृहस्पति मूल त्रिकोण में हो, तो गाँव, पुर और मठों का स्वामी हो ॥ ४१ ॥

शुक्रे त्रिकोणे सुज्ञश्च सुखयुक्तो महत्तमः ।
मन्दे नरो धनैः पूर्णो महाशूरः कुलन्धरः ॥ ४२ ॥

मूलत्रिकोणफल ।

शुक्र मूलत्रिकोण में हो, तो पण्डित सुखी और बड़ा उत्तम हो । शनैश्चर मूलत्रिकोण में हो, तो धनी, महाशूर और कुल को बढ़ानेवाला हो ॥ ४२ ॥

मूलत्रिकोणफल समाप्त ।

स्वगृहस्थ ग्रहफल ।

स्वगृहस्थे रवौ लोके महोग्रश्च सदोद्यमी ।
चन्द्रे धर्मरतः साधुर्मनस्वी रूपवानपि ॥ ४३ ॥

सूर्य अपने घर में स्थित हो, तो उत्पन्न हुआ पुरुष महोग्र और सदा उद्यम करनेवाला हो । चन्द्रमा स्थित हो, तो धर्म में रत, साधु, मनस्वी और रूपवान् हो ॥ ४३ ॥

स्वगृहस्थे कुजे वापि चपलो धनवानपि ।
बुधे नानाकलाभिज्ञः पण्डितो धनपूरितः ॥ ४४ ॥

अपने घर में मंगल हो, तो चंचल और धनवान् हो । बुध हो, तो नाना कलाओं का जाननेवाला, पण्डित और धनी हो ॥ ४४ ॥

धनी काव्यश्रुतिज्ञश्च सुचेष्टः स्वगृहे गुरौ ।
स्फीतः कृषीबलः शुक्रे शनौ मान्यः खलो जनः ॥ ४५ ॥

बृहस्पति अपने घर में हो, तो धनी, काव्य और वेद का जाननेवाला और अच्छी चेष्टावाला हो। शुक्र हो, तो स्फीत (उज्ज्वल स्वरूपवाला) और खेती करनेवाला हो। शनैश्चर हो, तो वह दुष्ट मनुष्य और पूज्य हो॥ ४५॥

स्वगृहस्थफल समाप्त।

मित्रगृहस्थफल।

सूर्ये मित्रगृहे ख्यातः शास्त्रज्ञः स्थिरसौहृदः।
चन्द्रे नरो भाग्ययुक्तश्चतुरो धनवानपि॥ ४६॥

सूर्य मित्र के घर में हो, तो प्रसिद्ध, शास्त्रों का जाननेवाला और स्थिर मित्रतावाला हो। चन्द्रमा हो, तो भाग्य-युक्त चतुर और धनी हो॥ ४६॥

भौमे शस्त्रोपजीवी च बुधे रूपधनान्वितः।
गुरौ मित्रगृहे पूज्यः सतां सत्कर्मसंयुतः॥ ४७॥

मंगल मित्र के घर में स्थित हो, तो शस्त्रों से जीविका करनेवाला हो। बुध हो, तो रूपवान् और धनवान् हो। बृहस्पति मित्र के घर में हो, तो सज्जनों का पूज्य और सत्कर्म-संयुक्त हो॥ ४७॥

शुक्रे मित्रगृहे लोके धनी बन्धुजनप्रियः।
शनौ परान्नभोगी च कुकर्मनिरतो भवेत्॥ ४८॥

शुक्र मित्र के घर में हो, तो धनी और बंधुजनों का प्यारा हो। शनैश्चर हो, तो पराया अन्न भोजन करनेवाला और कुकर्म में युक्त हो॥४८॥

मित्रगृहस्थफल समाप्त।

नीचगृहस्थरव्यादि फल।

नीचे सूर्ये भवेत्प्रेष्यो बान्धवैर्वर्जितो नरः।
चन्द्रे रोगी स्वल्पपुण्यो दुर्भगो नीचराशिगे॥ ४९॥

सूर्य नीच का हो, तो भाइयों करके वर्जित दास हो । चन्द्रमा नीच का हो, तो रोगी, थोड़ी पुण्यवाला और अभागी हो ॥ ४९ ॥

नीचे भौमे भवेन्नीचः कुत्सितो व्यसनातुरः ।
बुधे क्षुद्रो बन्धुवैरी गुरौ दीनो मलान्वितः ॥ ५० ॥

मंगल नीच का हो, तो नीच, कुत्सित और व्यसन में आतुर हो । बुध नीच का हो, तो क्षुद्र और भाइयों का वैरी हो । बृहस्पति नीच का हो, तो दुःखी और पापी हो ॥ ५० ॥

शुक्रे नीचे नष्टदारः स्वतन्त्रः शीलवर्जितः ।
शनौ काणो दरिद्रश्च गताचारोऽतिगर्हितः ॥ ५१ ॥

शुक्र नीच का हो, तो नष्ट स्त्री हो जावे, स्वतन्त्र और शील करके वर्जित हो । शनैश्चर नीच का हो, तो काना, दरिद्री, आचार-हीन और अति निंदित हो ॥ ५१ ॥

नीचगृहस्थफल समाप्त ।

रिपुगृहस्थग्रहफल ।

सूर्ये रिपुगृहे निःस्वो विषयैः पीडितो नरः ।
चन्द्रे हृदयरोगी च भौमे जायाजडोऽधनः ॥ ५२ ॥

सूर्य शत्रु के घर में हो, तो दरिद्री और विषयों से पीड़ित मनुष्य हो । चन्द्रमा हो, तो हृदय-रोगी हो । मंगल हो, तो मूर्ख स्त्रीवाला और दरिद्री हो ॥ ५२ ॥

बुधे रिपुगृहे मूर्खो वागधनी दुःखपीडितः ।
जीवेऽरिभे नरः क्लीबो नाप्तवृत्तिर्बुभुक्षितः ॥ ५३ ॥

बुध शत्रु के घर में हो, तो मूर्ख, वाणी का धनी और दुःख

से पीड़ित हो । बृहस्पति हो, तो नपुंसक, जीविका-हीन और बुभुक्षित हो ॥ ५३ ॥

शुक्रे शत्रुगृहे भृत्यः कुबुद्धिर्दुःखितो नरः ।
शनौ व्याध्यर्थशोकेन सन्तप्तो मलिनो भवेत् ॥ ५४ ॥

शुक्र शत्रु के घर में हो, तो दास, कुबुद्धि और दुःखित मनुष्य हो । शनैश्चर हो, तो व्याधि, अर्थ और शोक से सन्तप्त और मलिन हो ॥ ५४ ॥

रिपुगृहस्थफल समाप्त ।

जन्मनक्षत्रफल ।

सुरूपः सुभगो दक्षः स्थूलकायो महाधनी ।
अश्विनीसम्भवो लोके जायते जनवल्लभः ॥ ५५ ॥

अश्विनी नक्षत्र में जिसका जन्म हो, वह स्वरूपवान्, भाग्यवाला, निपुण, मोटी देहवाला, बड़ा धनी और मनुष्यों का प्यारा हो ॥ ५५ ॥

अरोगी सत्यवादी च सप्राणश्च दृढव्रतः ।
भरण्यां जायते लोके सुखी च मतिमानपि ॥ ५६ ॥

भरणी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य रोग-हीन, सत्य बोलनेवाला, प्राणों सहित दृढ़व्रत करनेवाला, सुखी और बुद्धिमान् हो ॥ ५६ ॥

कृपणः पापकर्मा च क्षुधालुर्नित्यपीडितः ।
अकर्म कुरुते नित्यं कृत्तिकायां भवेन्नरः ॥ ५७ ॥

कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न पुरुष कृपण, पापकर्म करनेवाला, क्षुधालु, नित्य ही पीडित और सदैव कुकर्म करनेवाला हो ॥ ५७ ॥

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः ।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः ॥ ५८ ॥

रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान्, राजा का पूज्य, प्रिय बोलनेवाला, सत्यवादी और स्वरूपवान् हो ॥ ५८ ॥

चपलश्चतुरो धीरः क्रूरकर्माप्यकर्मकृत् ।
अहङ्कारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः ॥ ५९ ॥

मृगशिरा नक्षत्र में उत्पन्न पुरुष चंचल, चतुर, धीर, क्रूर कर्म करनेवाला, कुकर्मी, अहंकारी और शत्रुओं से वैर करनेवाला हो ॥ ५९ ॥

कृतज्ञो गर्वितो हीनो नरः पापरतः शठः ।
आर्द्रानक्षत्रसम्भूतो धनधान्यविवर्जितः ॥ ६० ॥

आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य कृतज्ञ, अभिमानी, हीन, पापी, मूर्ख और धन-धान्य से हीन हो ॥ ६० ॥

शान्तः सुखी च भोगी च सुभगो जनवल्लभः ।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ ॥ ६१ ॥

पुनर्वसु नक्षत्र में उत्पन्न पुरुष शान्त, सुखी, भोगी, भाग्यवान् और मनुष्यों का प्यारा और पुत्र-मित्रादिकों से युक्त हो ॥ ६१ ॥

देवधर्मधनैर्युक्तो बुद्धियुक्तो विचक्षणः ।
पुष्ये च जायते लोके शान्तात्मा सुभगः सुखी ॥ ६२ ॥

पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य देव, धर्म और धन से युक्त, बुद्धि-युक्ति, निपुण, शान्त आत्मा, भाग्यवान् और सुखी हो ॥ ६२ ॥

सर्वभक्षः कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः ।
कृतघ्नश्च कुकर्मा च श्लेषायां जायते नरः ॥ ६३ ॥

श्लेषा में उत्पन्न हुआ पुरुष सर्वभक्षी, कृतान्त, विश्वासघाती, छलनेवाला, दुष्ट और कुकर्मी हो ॥ ६३ ॥

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी ।
चमूनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः ॥ ६४ ॥

मघा नक्षत्र में उत्पन्न पुरुष बहुत नौकरोंवाला, धनी, भोगी, पिता का भक्त, बड़ा उद्यमी, सेनापति और राजा की सेवा करनेवाला हो ॥६४॥

सर्पाख्ये प्रथमे भद्रं द्वितीये च धनक्षयः ।
मातुः पीडा तृतीये च चतुर्थे चरणे पितुः ॥ ६५ ॥

अश्लेषा के पहले चरण में उत्पन्न हुआ बालक कल्याण करनेवाला, दूसरे में धन का नाश करनेवाला, तीसरे में माता को पीड़ा देनेवाला, चौथे चरण में पिता को पीड़ा देनेवाला होता है ॥ ६५ ॥

विद्यागोधनसंयुक्तो गम्भीरः प्रमदाप्रियः ।
पूर्वाफाल्गुनिकाजातः सुखी पण्डितपूजितः ॥ ६६ ॥

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न पुरुष विद्या और गौओं से युक्त, गंभीर, स्त्री-प्रिय, सुखी और पंडितों से पूजित हो ॥ ६६ ॥

दाता शूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थपण्डितः ।
उत्तराफाल्गुनीजातो महायोधा जनप्रियः ॥ ६७ ॥

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य दानी, वीर, कोमल, वक्ता, धनुर्वेद के अर्थ में पंडित, बड़ा योधा और जनों का प्यारा हो ॥६७॥

असत्यवचनो धृष्टः सुरापो बन्धुवर्जितः ।
हस्ते जातो नरश्चौरो जायते परदारकः ॥ ६८ ॥

हस्त नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य झूठा, धृष्ट, मदिरा पीनेवाला, भाइयों से वर्जित, चोर और परस्त्रीगामी हो ॥ ६८ ॥

पुत्रदारयुतस्तुष्टो धनधान्यसमन्वितः ।
देवब्राह्मणभक्तश्च चित्रायां जायते नरः ॥ ६९ ॥

चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न पुरुष पुत्र और स्त्रियों से युक्त, प्रसन्न, धन-धान्य से युक्त और देव ब्राह्मणों का भक्त हो ॥ ६९ ॥

विदग्धो धार्मिकोऽल्पार्थः कृपणः प्रियवल्लभः ।
सुखी स्वदेवभक्तश्च स्वातीजातो भवेन्नरः ॥ ७० ॥

स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य विदग्ध, धर्मवान्, थोड़ी द्रव्यवाला, कृपण, प्रिय स्त्रीवाला, सुखी और अपने देवता का भक्त हो ॥ ७० ॥

अति लुब्धोऽतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातो वेश्याजनरतो भवेत् ॥ ७१ ॥

विशाखा नक्षत्र में अति लोभी, अभिमानी, निष्ठुर, कलह करनेवाला और वेश्याओं में रत हो ॥ ७१ ॥

पुरुषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यमी।
अनुराधाभवो लोकः सदा हृष्टश्च जायते ॥ ७२ ॥

अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न पुरुष पुरुषार्थी, प्रवासी, भाइयों के काम में सदा उद्यमी और सदा ही प्रसन्नचित्त रहता है ॥ ७२ ॥

बहुमित्रः प्रधानश्च कविर्दानी विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्रपूजितः ॥ ७३ ॥

ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न हुआ पुरुष बहुत मित्रोंवाला, प्रधान, कवि, दानी, निपुण, धर्म में रत और शूद्रों से पूजित ॥ ७३ ॥

स्थिरभोगी च मानी च धनवांश्च सुखी भवेत्।
तृतीयपादे तुर्ये च मूलाद्येऽर्धे परित्यजेत् ॥ ७४ ॥

स्थिर भोग करनेवाला, अभिमानी, धनी और सुखी हो, तीसरे या चौथे और मूल के पहले च ण के आधे को परित्याग कर दे ॥ ७४ ॥

आद्यपादे पितुः पीडा मूले मातुर्द्वितीयके।
तृतीये धनहानिश्च चतुर्थे सुखसम्पदः ॥ ७५ ॥

मूल नक्षत्र के पहले चरण में उत्पन्न हुआ बालक पिता को पीड़ा, दूसरे में माता को, तीसरे में धन की हानि करे और चौथे में सुख सम्पदाओं का देनेवाला होता है ॥ ७५ ॥

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढे नरो जातः सकलार्थविचक्षणः ॥ ७६ ॥

पूर्वाषाढ़ में उत्पन्न हुआ बालक देखनेमात्र से उपकार करनेवाला, भाग्यवान्, सज्जनों को प्रिय और सब कार्यों में निपुण हो ॥ ७६ ॥

बहुमित्रो महाकायो धार्मिको विनयी सुखी ।
उत्तराषाढसम्भूतः शूरश्च विजयी रणे ॥ ७७ ॥

उत्तराषाढ़ में उत्पन्न बालक बहुत मित्रोंवाला, बड़ी देहवाला, धर्मवान्, विनयवाला, सुखी, शूरवीर और संग्राम में जीतनेवाला हो ॥७७॥

कृतज्ञः विनयी दाता सर्वदारोग्यसंयुतः ।
लक्ष्मीवान्बलसंयुक्तः श्रवणे जायते नरः ॥ ७८ ॥

श्रवण में उत्पन्न हुआ पुरुष कृतज्ञ, विनयी, दानी, सदा आरोग्य, लक्ष्मीवान् और बल-संयुक्त हो ॥ ७८ ॥

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः ।
जातो नरो धनिष्ठायामेकः शतपतिर्भवेत् ॥ ७९ ॥

धनिष्ठा में जिसका जन्म हो, वह गीतों में अनुराग रखनेवाला, भाइयों में पूज्य, सोने और रत्नों से अलंकृत और अकेला ही सैकड़ों का स्वामी हो ॥ ७९ ॥

कृपणो धनपूर्णश्च परदारोपसेवकः ।
नरः शतभिषायां च विदेशगमने रतः ॥ ८० ॥

शतभिषा में उत्पन्न मनुष्य कृपण, धनवान्, पराई स्त्री से रमण करनेवाला और परदेश में गमन करनेवाला होता है ॥ ८० ॥

वक्ता सुखी प्रजायुक्तो बहुनिद्रो निरर्थकः ।
पूर्वाभाद्रपदाजातो नरो भवति दुःखितः ॥ ८१ ॥

पूर्वाभाद्रपद में उत्पन्न पुरुष वक्ता, सुखी, संतान-युक्त, बहुत निद्रावाला, निरर्थक रहनेवाला और दुःखी हो ॥ ८१ ॥

गौरः समस्तधर्मज्ञः शत्रुघाती च पामरः ।
उत्तराभाद्रनक्षत्रजातः साहसिको भवेत् ॥ ८२ ॥

उत्तराभाद्रपद में उत्पन्न मनुष्य गोरे रंगवाला, सब धर्मों का जानने-वाला, शत्रुओं का मारनेवाला, पामर और साहसी हो ॥ ८२ ॥

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः ।
रेवतीसम्भवो लोके धनधान्यैरलंकृतः ॥ ८३ ॥

रेवती में उत्पन्न पुरुष संपूर्ण अंगोंवाला, पवित्र, निपुण, साधु, वीर और प्रवीण तथा धन-धान्य से अलंकृत हो ॥ ८३ ॥

जन्मनक्षत्रफल समाप्त ।

नन्दादितिथि-जन्मफल ।

नन्दातिथौ नरो जातो महामानी च कोविदः ।
देवता भक्तिनिष्ठश्च ज्ञानी च प्रियवत्सलः ॥ ८४ ॥

नन्दातिथि अर्थात् १ । ६ । ११ इन तिथियों में उत्पन्न पुरुष अत्यंत अभिमानी विद्वान् देवता की भक्ति में तत्पर, ज्ञानी और प्रिय जनों का हित करनेवाला हो ॥ ८४ ॥

भद्रातिथौ बन्धुमान्यो राजसेवी धनान्वितः ।
संसारभयभीतश्च परमार्थमतिर्नरः ॥ ८५ ॥

भद्रातिथि अर्थात् २ । ७ । १२ इन तिथियों में उत्पन्न मनुष्य भाइयों में पूज्य, राजा की सेवा करनेवाला, धनी, संसार के डर से डरनेवाला और परमार्थ की बुद्धि रखनेवाला होता है ॥ ८५ ॥

जयातिथौ राजपूज्यः पुत्रपौत्रादिसंयुतः ।
शूरः शान्तश्च दीर्घायुर्महाविज्ञश्च जायते ॥ ८६ ॥

जया तिथि अर्थात् ३ । ८ । १३ इन तिथियों में उत्पन्न पुरुष राजा का पूज्य, पुत्र और पौत्रों से युक्त, वीर, शान्त, बड़ी आयुवाला और महाविद्वान् होता है ॥ ८६ ॥

रिक्तातिथौ वित्तहीनः प्रमादी गुरुनिन्दकः ।
शास्त्रज्ञमतिहन्ता च कामुकश्च नरो भवेत् ॥ ८७ ॥

रिक्तातिथि अर्थात् ४ । ९ । १४ इन तिथियों में उत्पन्न मनुष्य द्रव्य-हीन, प्रमादी, गुरु की निंदा करनेवाला, शास्त्रवेत्ताओं की बुद्धि को नष्ट करनेवाला और कामुक हो ॥ ८७ ॥

पूर्णातिथौ धनैः पूर्णो वेदशास्त्रार्थतत्त्ववित् ।
सत्यवादी शुद्धचेता जातो भवति मानवः ॥ ३८८ ॥

इति श्रीसर्वशास्त्रविशारदश्रीकाशिनाथकृतलग्न-
चन्द्रिकायां प्रथमः परिच्छेदः ॥ १ ॥

पूर्णा तिथि अर्थात् ५ । १० । १५ इन तिथियों ये उत्पन्न पुरुष धनी, वेद-शास्त्र के अर्थ और तत्त्व का जाननेवाला, सत्यवादी और शुद्ध चित्तवाला होता है ॥ ३८८ ॥

नन्दातिथि-जन्मफल समाप्त ।

इति श्रीउन्नावप्रदेशान्तर्गततारगाँवनिवासिपण्डितरामविहारिसुकुलकृत-
लग्नचन्द्रिकाभाषाटीकायां प्रथमः परिच्छेदः ॥ १ ॥

——:०:——

दूसरा परिच्छेद ।

सूर्यद्वादशभाव फल ।

लग्ने सूर्येऽतितीव्रश्च चञ्चलात्मा स्मरातुरः ।
नेत्ररोगी पीडिताङ्गो जायते चारुणाकृतिः ॥ १ ॥

जिसके लग्न में सूर्य हों, वह अति तीव्र, चंचल आत्मावाला, काम से व्याकुल, नेत्र-रोगी, पीड़ा-युक्त अंगोंवाला और रक्तवर्ण की आकृति हो ॥ १ ॥

सूर्ये धने विवादी च बहुशत्रुश्च निर्धनः ।
परापवादी सेर्ष्यश्च कृतघ्नश्च भवेन्नरः ॥ २ ॥

जिसके दूसरे सूर्य हों, वह विवादी, बहुत शत्रुओंवाला, निर्धन, दूसरों का अपवाद करनेवाला, ईर्षा-युक्त और कृतघ्न हो ॥ २ ॥

तृतीयस्थे दिवानाथे प्रसिद्धो रोगवर्जितः ।
भूपतिश्च सुशीलश्च दयालुश्च भवेन्नरः ॥ ३ ॥

जिसके तीसरे सूर्य हों, वह प्रसिद्ध, रोग-रहित, राजा, सुशील और दयालु हो ॥ ३ ॥

सूर्ये चतुर्थे दुर्बुद्धिः कृशाङ्गः सुखवर्जितः ।
अप्रभावो निष्ठुरश्च दुष्टसंगी भवेन्नरः ॥ ४ ॥

जिसके सूर्य चौथे हों, वह दुर्बुद्धि, दुर्बल अंगोंवाला, सुख-रहित, अप्रभाव (प्रभाव-रहित) निठुर और दुष्ट-संगी हो ॥ ४ ॥

पञ्चमेऽर्के कोपयुक्तः कुरूपः शीलवर्जितः ।
कुसंगलब्धवृत्तिश्च गतमानश्च जायते ॥ ५ ॥

पाँचवें जिसके सूर्य हों, वह क्रोधी, कुरूप, शील-वर्जित, कुसंग से वृत्ति प्राप्त करनेवाला और गतमान हो ॥ ५ ॥

षष्ठे सूर्ये गतारिश्च ख्यातमानः सुखी शुचिः ।
शूरोऽनुरागी भूपालसम्मतश्च भवेन्नरः ॥ ६ ॥

छठवें जिसके सूर्य हों, वह शत्रु-रहित प्रसिद्ध मानवाला, सुखी, पवित्र, वीर, अनुरागी और राजा का सलाही हो ॥ ६ ॥

सप्तमेऽर्के कुदारश्च दुष्टप्रीतोऽल्पपुत्रकः ।
गुह्यरोगी सपापश्च जातको हि प्रजायते ॥ ७ ॥

सातवें जिसके सूर्य हों, वह दुष्ट स्त्रीवाला, दुष्टों से प्रसन्न, थोड़े पुत्रवाला, गुह्यरोगी और पाप-सहित हो ॥ ७ ॥

अष्टमस्थे दिवानाथे कृतघ्नो हीनमानसः ।
शत्रुदग्धो वृथागामी बन्धुहीनश्च जायते ॥ ८ ॥

आठवें जिसके सूर्य हों, वह कृतघ्न, हीनमानस, शत्रुओं से जराया हुआ, वृथा चलनेवाला और बंधुहीन हो ॥ ८ ॥

नवमस्थे रवौ जातः कुकर्मा भाग्यवर्जितः ।
विद्याविवेकहीनश्च कुशीलश्च प्रजायते ॥ ९ ॥

नवें सूर्यवाला कुकर्मी, भाग्य-रहित, विद्या और ज्ञानहीन एवं कुशीलवाला हो ॥ ९ ॥

दशमेऽर्के बन्धुहीनः कुकर्मा शीलवर्जितः ।
स्त्रीचञ्चलो हीनतेजा हीनकोशश्च जायते ॥ १० ॥

दशवें सूर्य में बंधुहीन, कुकर्मी, शीलरहित, चंचल स्त्रीवाला, तेज-हीन और खजाना-रहित हो ॥ १० ॥

लाभे सूर्ये समुत्पन्नो नानालाभसमन्वितः ।
सात्त्विको धार्मिको ज्ञानी रूपवानपि जायते ॥ ११ ॥

ग्यारहवें सूर्य में उत्पन्न मनुष्य अनेक लाभों से युक्त, सात्विक, धर्म-वान्, ज्ञानी और रूपवान् हो ॥ ११ ॥

व्यये सूर्ये नरो रोगी सत्त्वहीनो वृथाटनः ।
असद्व्ययी पुत्रदारभक्तिहीनश्च जायते ॥ १२ ॥

बारहवें सूर्यवाला मनुष्य रोगी, सत्व-हीन, वृथा चलनेवाला असत्काम में खर्च करनेवाला, पुत्र, स्त्री और भक्ति से हीन हो ॥ १२ ॥

सूर्यद्वादशभावफल समाप्त ।

चन्द्रद्वादशभाव फल ।

लग्ने चन्द्रे जडः शुद्धः प्रसन्नो धनपूरितः ।
स्त्रीवल्लभो धार्मिकश्च कृतघ्नश्च नरो भवेत् ॥ १३ ॥

लग्न में जिसके चन्द्रमा हो, वह जड़, शुद्ध, प्रसन्न, धनी, स्त्री का प्यारा, धर्मवान् और कृतघ्न मनुष्य हो ॥ १३ ॥

धने चन्द्रे धनैः पूर्णो नृपपूज्यो गुणान्वितः ।
शास्त्रानुरागी सुभगो जनप्रीतश्च जायते ॥ १४ ॥

दूसरे चन्द्रमावाला धनी, राजाओं में पूज्य, गुणी, शास्त्रों में प्रेम करनेवाला, सौभाग्यवान् और मनुष्यों से प्रीति करनेवाला हो ॥ १४ ॥

तृतीये च निशानाथे धनविद्यादिभिर्युतः ।
कफाधिकः कामुकश्च वंशमुख्योऽपि जायते ॥ १५ ॥

तीसरे चन्द्रमा में धन और विद्यादिकों करके युक्त, कफयुक्त, कामुक और वंश में मुख्य हो ॥ १५ ॥

चतुर्थे च निशानाथे पुत्रदारसमन्वितः ।
धनी सुखी यशस्वी च विद्यावानपि जायते ॥ १६ ॥

चौथे चन्द्रमावाला पुत्र और स्त्री से युक्त, धनी, सुखी, यशस्वी और विद्यावान् हो ॥ १६ ॥

सुते चन्द्रे सुताढ्यश्च रोगी कामी भयानकः ।
कृषीमयै रसैर्युक्तो विनयी च भवेन्नरः ॥ १७ ॥

पाँचवें चन्द्रमा में पुत्रों से युक्त, रोगी, कामी, भयानक, खेती के रसों से युक्त और विनयी हो ॥ १७ ॥

षष्ठे चन्द्रे वित्तहीनो मृदुकायोऽतिलालसः ।
मन्दाग्निस्तीक्ष्णदृष्टिश्च शूरोऽपि मनुजो भवेत् ॥१८॥

छठें चन्द्रमावाला द्रव्यहीन, कोमल देहवाला, अतिलालसी, मन्दाग्नि, तीक्ष्ण दृष्टिवाला और वीर मनुष्य हो ॥ १८ ॥

चन्द्रे तु सप्तमे जातो दुःखी कुष्ठी च वञ्चकः ।
कृपणो बहुवैरी च जायते परदारकः ॥ १९ ॥

सातवें चन्द्रमावाला दुःखी, कुष्ठवाला, वंचक, कृपण, बहुत शत्रु-वाला और पराई स्त्रीवाला हो ॥ १९ ॥

अष्टमे तारकानाथे दीनोऽल्पायुः सकष्टकः ।
प्रगल्भश्च कृशाङ्गश्च पापबुद्धिर्भवेन्नरः ॥ २० ॥

आठवें चन्द्रमावाला दुःखी, थोड़ी आयुवाला, कष्टवाला, प्रगल्भ (धृष्ट), दुर्बल अंगवाला और पापबुद्धि हो ॥ २० ॥

धर्मे चन्द्रे चारुकान्तिः स्वधर्मनिरतः सदा ।
वीतरोगः सतां श्लाघ्यः पापहीनश्च जायते ॥ २१ ॥

नवें चन्द्रमावाला उत्तम कान्तिवाला, अपने धर्म में सदा निरत, रोगरहित, सज्जनों में निपुण और पापी हो ॥ २१ ॥

कर्मस्थाने सुधारश्मौ बहुभाग्यो महाधनी ।
मनस्वी च मनोज्ञश्च राजमान्यश्च जायते ॥ २२ ॥

दशवें चन्द्रमावाला बहुत भाग्यवाला, अति धनी, मनस्वी, मनोहर और राजाओं में पूज्य हो ॥ २२ ॥

लाभे चन्द्रे लाभयुक्तः प्रगल्भः सुभगो नरः ।
सुमार्गगामी लज्जालुः प्रतापी भाग्यवान् भवेत् ॥ २३ ॥

ग्यारहवें चन्द्रमा में लाभ-युक्त, प्रगल्भ (धृष्ट), ऐश्वर्यवान्, सुमार्ग-गामी, लज्जा-युक्त, प्रतापी और भाग्यवान् हो ॥ २३ ॥

व्यये चन्द्रे पापबुद्धिर्बहुभक्षी पराजितः ।
कुलाधमो मद्यपी च विकारी जातको भवेत् ॥ २४ ॥

बारहवें चन्द्रमावाला पापबुद्धिवाला, बहुत खानेवाला, हारनेवाला, कुल में अधम, मदिरा पीनेवाला और विकारी हो ॥ २४ ॥

चन्द्रफल समाप्त ।

मङ्गलफल ।

भौमे लग्ने कुरूपश्च रोगी बन्धुविवर्जितः ।
असत्यवादी निर्द्रव्यो जायते पारदारिकः ॥ २५ ॥

लग्न में मंगल हो, तो कुरूप, रोगी, बंधु-रहित, झूठ बोलनेवाला, द्रव्य-हीन और परस्त्रीगामी हो ॥ २५ ॥

धने कुजे धनैर्हीनः क्रियाहीनश्च जायते ।
दीर्घसूत्री सत्यवादी पुत्रवानपि मानवः ॥ २६ ॥

धन-स्थान में मंगल हो, तो धन-हीन, क्रिया-हीन, दीर्घसूत्री, सत्य-वादी और पुत्रवान् मनुष्य हो ॥ २६ ॥

तृतीये भूसुते जातः प्रतापी शीलसंयुतः ।
रणे शूरो राजमान्यो भुवि ख्यातश्च जायते ॥ २७ ॥

तीसरे स्थान में मंगल हो, तो प्रतापी, शील-संयुक्त, लड़ाई में शूर, राजाओं में पूज्य और पृथ्वी पर प्रसिद्ध होता है ॥ २७ ॥

चतुर्थे भूसुते कृष्णः पित्ताधिक्योऽरिनिर्जितः ।
वृथाटनो हीनपुत्रो महाकामी च जायते ॥ २८ ॥

चौथे घर में मंगल हो, तो श्याम-वर्ण, अधिक पित्तवाला, शत्रु से हारनेवाला, वृथा घूमनेवाला, पुत्र-रहित और महाकामी हो ॥ २८ ॥

पञ्चमे च धरापुत्रे कुसन्तानः सदा रुजः ।
बन्धुवर्गे विरक्तश्च नरो बुद्धिविवर्जितः ॥ २९ ॥

पाँचवें घर में मंगल हो, तो कुत्सित पुत्रोंवाला, सदा रोगी, भाइयों में विरक्त और बुद्धिहीन होता है ॥ २९ ॥

षष्ठे भौमे शत्रुहीनो नानार्थैः परिपूरितः ।
स्त्रीलालसः पुष्टदेहः शुद्धचित्तश्च जायते ॥ ३० ॥

छठें घर में मंगल हो, तो शत्रु-हीन, अनेक द्रव्यों से युक्त, स्त्री में लालसा करनेवाला, पुष्ट देहवाला और शुद्धचित्त हो ॥ ३० ॥

सप्तमे भूमिपुत्रे च रुधिराक्तोऽपि कोपवान् ।
नीचसेवी वञ्चकश्च निष्ठुरोऽपि भवेन्नरः ॥ ३१ ॥

सातवें घर में मंगल हो, तो रुधिर से भरा हुआ, क्रोधी, नीचों की सेवा करनेवाला, ठग और निष्ठुर हो ॥ ३१ ॥

अष्टमे मङ्गले कुष्ठी स्वल्पायुः शत्रुपीडितः ।
अल्पद्रव्यः सरोगश्च निर्गुणोऽपि भवेन्नरः ॥ ३२ ॥

जिसके आठवें मंगल हो, तो वह कुष्ठी, थोड़ी आयुवाला, शत्रुओं से पीड़ित, थोड़ी द्रव्यवाला, रोग-युक्त और निर्गुणी हो ॥ ३२ ॥

धर्मस्थे धरणीपुत्रे कुकर्मा गतपौरुषः ।
नीचानुरागी क्रूरश्च संकष्टश्च प्रजायते ॥ ३३ ॥

नवें घर में मंगल हो, तो कुकर्मी, पौरुष-हीन, नीचों में प्रेम करनेवाला, क्रूर और कष्ट-युक्त हो ॥ ३३ ॥

कर्मस्थाने महीपुत्रे शुभकर्मा शुभान्वितः ।
सुपुत्री स्यात्सुखी शूरो गर्विष्ठोऽपि भवेन्नरः ॥ ३४ ॥

दशवें घर में मंगल हो, तो शुभकर्म करनेवाला, आनंद-युक्त, अच्छे पुत्रोंवाला, सुखी, शूर-वीर और अभिमानी हो ॥ ३४ ॥

लाभे भौमे भूरिलाभो नानापक्वान्नभक्षकः ।
नीरोगो नृपमान्यश्च देवद्विजरतो भवेत् ॥ ३५ ॥

ग्यारहवें घर में मंगल हो, तो अधिक लाभयुक्त, अनेक प्रकार के पक्वान्नों का खानेवाला, नीरोगी, राजाओं में पूज्य तथा देवता और ब्राह्मणों की भक्ति करनेवाला हो ॥ ३५ ॥

असद्व्ययी व्यये भौमे नास्तिको निष्ठुरः शठः ।
बहुवादी विदेशे च सदा गच्छति मानवः ॥ ३६ ॥

बारहवें घर में मंगल हो, तो बुरे काम में द्रव्य खर्च करनेवाला, नास्तिक, कठोर, मूर्ख, बकवादी और सदा परदेश में रहनेवाला हो ॥३६॥

मङ्गलफल समाप्त ।

बुधफल ।

लग्ने बुधे च गीतज्ञो निष्पापो भूपपूजितः ।
रूपज्ञानयशो युक्तः प्रगल्भो मानवो भवेत् ॥ ३७ ॥

लग्न में बुध हो, तो गान-विद्या का जाननेवाला, पाप-रहित, राजाओं में पूज्य, रूप, ज्ञान और यश करके युक्त और प्रगल्भ हो ॥ ३७ ॥

चन्द्रपुत्रे धनस्थाने धनधान्यादिपूरितः ।
शुभकर्मा सुखी नित्यं राजपूज्यश्च जायते ॥ ३८ ॥

दूसरे घर में बुध हो, तो धन-धान्य से युक्त, शुभकर्म करनेवाला, सदा सुखी और राजाओं में पूज्य हो ॥ ३८ ॥

तृतीये च बुधे जातः प्रशस्तो बन्धुमानितः ।
धर्मध्वजी यशस्वी च गुरुदेवार्चको भवेत् ॥ ३९ ॥

तीसरे घर में बुध हो, तो श्रेष्ठ मनुष्य, बंधुओं में पूज्य, धर्म की ध्वजारूप, यशस्वी और गुरु तथा देवता का पूजक हो ॥ ३९ ॥

चतुर्थे चन्द्रपुत्रे च बहुभृत्ययशोऽन्वितः ।
बहुवाक्यो भाग्ययुक्तः सत्यवादी च जायते ॥ ४० ॥

चौथे घर में बुध हो, तो बहुत नौकरोंवाला, यश से युक्त, अच्छा बोलनेवाला, भाग्यवान् और सत्यवादी हो ॥ ४० ॥

पञ्चमे रोहिणीपुत्रे पुत्रपौत्रसमन्वितः ।
सुबुद्धिः सत्त्वसम्पन्नः सुखी भवति मानवः ॥ ४१ ॥

पाँचवें घर में बुध हो, तो पुत्र और पौत्रों से युक्त, सुंदर बुद्धिवाला और सुखी हो ॥ ४१ ॥

षष्ठे बुधे नृशंसश्च विरोधी सर्वबन्धुषु ।
ईर्ष्याधिकः कामपरो विद्वानपि भवेन्नरः ॥ ४२ ॥

छठें बुध में क्रूर, सब भाइयों का विरोधी, अधिक ईर्षा करनेवाला, काम में तत्पर और विद्वान् हो ॥ ४२ ॥

सप्तमे सोमपुत्रे च रूपविद्याधिको नरः ।
सुशीलः कामशास्त्रज्ञो नारीमान्यश्च जायते ॥ ४३ ॥

सातवें बुधवाला अधिक रूप और अधिक विद्यावाला, सुशील, काम-शास्त्र का जाननेवाला और स्त्रियों में पूज्य हो ॥ ४३ ॥

बुधेऽष्टमे कृतघ्नश्च कुबुद्धिः पारदारिकः ।
कामातुरोऽसत्यवादी रोगयुक्तो भवेन्नरः ॥ ४४ ॥

आठवें बुध में कृतघ्न, कुबुद्धि, पराई स्त्री से भोग करनेवाला, कामातुर, असत्यवादी और रोगी मनुष्य हो ॥ ४४ ॥

धर्मे बुधे धार्मिकश्च कूपारामादिकारकः ।
सत्यवादी च दान्तश्च जायते पितृवत्सलः ॥ ४५ ॥

नवें बुध में धर्मवान्, कुआँ और बागीचा आदि का बनानेवाला, सत्य बोलनेवाला, दान्त (जितेन्द्रिय) और पिता का प्यारा हो ॥४५॥

दशमे च बुधे जातो धनधान्यसमन्वितः ।
बहुभाग्यश्च विजयी कान्तियुक्तश्च मानवः ॥ ४६ ॥

दशवें बुधवाला मनुष्य धनधान्य से युक्त, बहुत भाग्यवाला, विजयी तथा कान्तियुक्त हो ॥ ४६ ॥

लाभे सौम्ये नित्यलाभो नीरोगश्च सदा सुखी ।
जनानुरागीवृत्तिश्च कीर्त्तिमानपि जायते ॥ ४७ ॥

ग्यारहवें बुध में सदा लाभ हो, रोग-हीन, सदा सुखी, मनुष्यों में प्रेम करनेवाला और यश-युक्त हो ॥ ४७ ॥

बुधे व्यये व्ययी लोके रोगी बन्धुसमन्वितः ।
पापासक्तः पराधीनः परपक्षी च जायते ॥ ४८ ॥

बारहवें बुध में संसार में द्रव्य खर्च करनेवाला, रोगी, भाई-संयुक्त, पाप में रत, पराधीन और शत्रु का पक्ष करनेवाला हो ॥ ४८ ॥

बुधफल समाप्त ।

गुरुफल ।

लग्ने गुरौ सुशीलश्च प्रगल्भो रूपवानपि ।
नृपाभीष्टश्च नीरोगी ज्ञानी सौम्यश्च जायते ॥ ४९ ॥

लग्न में बृहस्पति हो, तो सुशील, प्रगल्भ, रूपवान्, राजा से मान्य, रोगहीन, ज्ञानी और सौम्य हो ॥ ४९ ॥

धने जीवे धनी लोकः कृतज्ञो बन्धुसंयुतः ।
गजाश्वमहिषीयुक्तः कान्तिमानपि जायते ॥ ५० ॥

दूसरे बृहस्पति हो, तो धनी, कृतज्ञ, भाइयों-सहित, हाथी, घोड़ा और भैंसीवाला और कान्ति-युक्त हो ॥ ५० ॥

जीवे तृतीये तेजस्वी कर्मदक्षो जितेन्द्रियः।
मित्राप्तसुखसम्पन्नस्तीर्थवार्त्ताप्रियो भवेत् ॥ ५१ ॥

तीसरे बृहस्पति हो, तो तेजस्वी, कर्म में निपुण, इन्द्रियों का जीतनेवाला, मित्रों से सुख को प्राप्त और तीर्थों की वार्ता में प्रसन्न होनेवाला हो ॥ ५१ ॥

सुखे जीवे सुखी लोके सुभगो राजपूजितः।
विजितारिः कुलाध्यक्षो गुरुभक्तश्च जायते ॥ ५२ ॥

चौथे बृहस्पति हो, तो संसार में सुखी, सौभाग्य युक्त, राजाओं में पूज्य, शत्रुओं का जीतनेवाला, कुल में मुख्य और गुरु का भक्त हो ॥ ५२ ॥

सुते जीवे सुतैर्युक्तो धार्मिकः पण्डितः सुखी।
शुद्धचेता दयायुक्तो विनयी च भवेन्नरः ॥ ५३ ॥

पाँचवें बृहस्पति हो, तो पुत्र-युक्त, धर्मवान्, पण्डित, सुखी, शुद्ध चित्तवाला, दया-युक्त और नम्रता-युक्त हो ॥ ५३ ॥

षष्ठे गुरौ विघ्नयुक्तो बहुशत्रुश्च निष्ठुरः।
उद्वेगी मतिहीनश्च कामुको जायते नरः ॥ ५४ ॥

छठें बृहस्पति हो, तो विघ्न-युक्त, बहुत शत्रुओंवाला, निठुर, उद्वेग-वाला, बुद्धिहीन और कामुक मनुष्य हो ॥ ५४ ॥

सप्तमस्थे सुराचार्ये कामचित्तो महाबलः।
धनी दाता प्रगल्भश्च चित्रकर्मा च जायते ॥ ५५ ॥

सातवें बृहस्पति हो, तो काम में चित्तवाला, बड़ा बली, धनी, दाता, प्रगल्भ और चित्रकर्म करनेवाला हो ॥ ५५ ॥

जीवेऽष्टमे सदा रोगी कृपणः शोकसंयुतः ।
बहुवैरी कुकर्मा च कुरूपश्च भवेन्नरः ॥ ५६ ॥

आठवें बृहस्पति हो, तो सदा रोगी, कृपण, शोक-संयुक्त, बहुत शत्रुओंवाला, कुकर्मी और कुरूप हो ॥ ५६ ॥

धर्मे जीवे धर्मकर्त्ता साधुसङ्गी च शास्त्रवित् ।
निरीहस्तीर्थसेवी च ब्रह्मज्ञश्च प्रजायते ॥ ५७ ॥

नवें बृहस्पति हो, तो धर्म करनेवाला, साधुओं का संग करनेवाला, शास्त्र का जाननेवाला, चेष्टा-रहित, तीर्थ की सेवा करनेवाला और ब्रह्म का भी जाननेवाला हो ॥ ५७ ॥

कर्मस्थिते सुराचार्ये पुण्यकीर्त्तिसुखान्वितः ।
राजतुल्यः सुरूपश्च दयालुर्जायते नरः ॥ ५८ ॥

दशवें बृहस्पति हो, तो वह मनुष्य पुण्य, यश और सुख से युक्त, राजाओं के समान, स्वरूपवाला और दयावान् हो ॥ ५८ ॥

लाभे गुरौ विवेकी स्याद्धस्त्यश्वादिधनैर्युतः ।
चञ्चलोऽपि सुरूपश्च गुणवानपि जायते ॥ ५९ ॥

ग्यारहवें बृहस्पति हो, तो विवेकी, हाथी, घोड़ा आदि धन से युक्त, चंचल, सुरूप और गुणवान् भी हो ॥ ५९ ॥

व्यये बृहस्पतौ रोगी व्यसनी परकर्मकृत् ।
बन्धुवैरी नीचसेवी गुरुद्वेषी च जायते ॥ ६० ॥

बारहवें बृहस्पति में रोगी, परिश्रमी, पराये कर्म का करनेवाला, बंधु-वैरी, नीचों की सेवा करनेवाला और गुरु से वैर करनेवाला हो ॥६०॥

गुरुफल समाप्त ।

शुक्रफल ।

लग्ने शुक्रे सुशीलश्च वित्तवानपि सुन्दरः ।
शुचिर्विद्वान् मनोज्ञश्च कृतज्ञश्च भवेन्नरः ॥ ६१ ॥

जिसके लग्न में शुक्र हो, वह सुशील, द्रव्यवान्, सुंदर, शुचि, विद्वान्, मनोज्ञ और कृतज्ञ हो ॥ ६१ ॥

धने शुक्रे धनी विद्वान् बन्धुमान्यो नृपार्चितः ।
यशस्वी गुरुभक्तश्च कृतज्ञश्च भवेन्नरः ॥ ६२ ॥

दूसरे घर में शुक्र हो, तो धनी, विद्वान्, भाइयों में पूज्य तथा राजा से भी पूजित, यशस्वी, गुरु का भक्त और कृतज्ञ हो ॥ ६२ ॥

भार्गवे सहजे जातो धनधान्यसुतान्वितः ।
नीरोगी राजमान्यश्च प्रतापी चापि जायते ॥ ६३ ॥

तीसरे घर में शुक्र हो, तो धन, धान्य और पुत्रों करके युक्त, नीरोग, राजाओं में पूज्य और प्रतापी हो ॥ ६३ ॥

सुखे शुक्रे सुखी विज्ञो बहुभार्यो धनान्वितः ।
ग्रामाधिपो यशस्वी स्याद्विवेकी च भवेन्नरः ॥ ६४ ॥

चौथे घर में शुक्र हो, तो सुखी, विद्वान्, बहुत स्त्रीवाला, बहुत धनी, गाँवों का स्वामी, यशस्वी और विवेकी हो ॥ ६४ ॥

सुते शुक्रे समृद्धश्च सुरूपश्च सदोन्नतः ।
पुत्रकन्यापौत्रयुतः सुभगोऽपि भवेन्नरः ॥ ६५ ॥

पाँचवें घर में शुक्र हो, तो समृद्ध, सुरूप, सदा उन्नत, पुत्र, कन्या और पौत्रों करके युक्त और सौभाग्यवाला हो ॥ ६५ ॥

षष्ठे शुक्रे भवेद्दम्भी जाड्यहानिभयान्वितः ।
दुःसङ्गी कलही तात द्वेषी चैव सदा नरः ॥ ६६ ॥

छठे घर में शुक्र हो, तो दम्भी, जड़, हानि और भय करके युक्त दुष्ट संगवाला, लड़ाई करनेवाला और पिता का बैरी हो ॥ ६६ ॥

सप्तमे भृगुपुत्रे च धनी दिव्याङ्गनायुतः ।
नीरोगः सुखसम्पन्नो बहुभाग्यः प्रजायते ॥ ६७ ॥

सातवें शुक्रवाला धनी, सुंदर, स्त्री-युक्त, नीरोग, सुखी और बहुत भाग्यवाला हो ॥ ६७ ॥

अष्टमस्थे दैत्यपूज्ये सरोगः कलहप्रियः ।
वृथाटनी कार्यहीनो जनानां च प्रियो भवेत् ॥ ६८ ॥

आठवें शुक्र में रोग-सहित, लड़ाई में प्रीति करनेवाला, वृथा चलनेवाला, कार्य-हीन और मनुष्यों में प्रिय हो ॥ ६८ ॥

धर्मे शुक्रे धर्मपूर्णो ज्ञानवृद्धः सुखी धनी ।
नरेन्द्रमान्यो विनयी नराणां च प्रियः सदा ॥ ६९ ॥

नवें शुक्र में धर्म से परिपूर्ण, ज्ञानी, सुखी, धनी, राजाओं में पूज्य, नम्रतावाला और सदैव मनुष्यों में प्रिय हो ॥ ६९ ॥

कर्मस्थिते भृगोः पुत्रे कर्मवान्निधिरत्नवान् ।
राजसेवी धार्मिकश्च जायते दयिताप्रियः ॥ ७० ॥

दशवें शुक्रवाला, कर्मवान्, निधि और रत्नों से युक्त, राजा की सेवा करनेवाला, धर्मवान् और स्त्री का प्यारा हो ॥ ७० ॥

लाभे शुक्रे सदा लाभो यशस्वी च गुणान्वितः ।
धनी भोगी क्रियाशुद्धो जायते मानवोत्तमः ॥ ७१ ॥

ग्यारहवें शुक्र में सदा लाभवाला, यशस्वी, गुणी, धनी, भोगी, क्रिया में शुद्ध और मनुष्यों में उत्तम हो ॥ ७१ ॥

व्यये शुक्रे व्ययाढ्यश्च गुरुमित्रविरोधवान् ।
मिथ्यावादी बन्धुवर्गे गुणहीनोऽपि जायते ॥ ७२ ॥

बारहवें शुक्र में व्यय करके युक्त, गुरु और मित्र का विरोध करनेवाला, भाइयों में झूठ बोलनेवाला और गुणहीन हो ॥ ७२ ॥

शुक्रफल समाप्त ।

शनिद्वादशभाव फल ।

लग्ने शनौ सदा रोगी कुरूपः कृपणो नरः ।
कुशीलः पापबुद्धिश्च शठश्च भवति ध्रुवम् ॥ ७३ ॥

लग्न में शनैश्चर हो, तो सदा रोगी, कुरूप, कृपण, कुशील, पापबुद्धि और निश्चय मूर्ख मनुष्य हो ॥ ७३ ॥

धने मन्दे धनैर्हीनो वातपित्तकफातुरः ।
देहास्थिपित्तरोगश्च गुणैः स्वल्पोऽपि जायते ॥ ७४ ॥

दूसरे शनैश्चर में धनहीन, वातपित्त और कफ से आतुर, देह में हाड़ और पित्त रोगवाला तथा थोड़े गुणवाला हो ॥ ७४ ॥

छायात्मजे तृतीयस्थे प्रसन्नो गुणवत्सलः ।
शत्रुमर्दी नृणां मान्यो धनी शूरश्च जायते ॥ ७५ ॥

तीसरे शनैश्चर में प्रसन्न, गुणवत्सल, शत्रुओं का मर्दन करनेवाला, मनुष्यों में पूज्य, धनी और वीर हो ॥ ७५ ॥

सुखे मन्दे सुखैर्हीनो हृतार्थो बान्धवैर्नरः ।
गुणस्वभावो दुःसंगी कुजनैश्चावृतः शठः ॥ ७६ ॥

चौथे शनैश्चर में सुख-हीन, भाइयों ने जिसका द्रव्य छीन लिया हो, गुणी, कुसंगी, दुर्जनों से युक्त और मूर्ख हो ॥ ७६ ॥

पुत्रे मन्दे पुत्रहीनः क्रियाकीर्त्तिविवर्जितः ।
हीनकोशो विरूपश्च मानवो भवति ध्रुवम् ॥ ७७ ॥

पाँचवें शनैश्चर में पुत्र-हीन, क्रिया और यश से वर्जित, द्रव्य-हीन और कुरूप मनुष्य हो ॥ ७७ ॥

शत्रुभावस्थिते मन्दे शत्रुहीनो महाधनी ।
पशुपुत्रयशोयुक्तो नीरोगी जायते नरः ॥ ७८ ॥

छठे शनैश्चर में शत्रु-हीन, महाधनी, पशु, पुत्र और यशयुक्त और नीरोग मनुष्य हो ॥ ७८ ॥

कलत्रस्थे मित्रपुत्रे सकलत्रो रुजान्वितः ।
बहुशत्रुर्विवर्णश्च कृशश्च मलिनो भवेत् ॥ ७९ ॥

सातवें शनैश्चर में स्त्री-सहित रोगी, बहुत शत्रुवाला, कुरूप, दुर्बल और मलिन हो ॥ ७९ ॥

क्रोधातुरोऽष्टमे मन्दे दरिद्रो बहुरोगवान् ।
मिथ्याविवादकर्त्ता स्याद्वातरोगी भवेन्नरः ॥ ८० ॥

आठवें शनैश्चर में क्रोधातुर, दरिद्र, बहुत रोगयुक्त, मिथ्या विवाद करनेवाला और वातरोगी पुरुष हो ॥ ८० ॥

धर्मे मन्दे धर्महीनो विवेकी च रिपोर्वशः ।
नृशंसो जायते लोकः परदाररतः सदा ॥ ८१ ॥

नवें शनैश्चर हो, तो धर्म-हीन, विवेकी, शत्रुओं के वश, झूँठा और सदा पराई स्त्री में रत होनेवाला हो ॥ ८१ ॥

कर्मस्थाने सूर्यपुत्रे कुकर्मा धनवर्जितः ।
दयासत्यगुणैर्हीनश्चञ्चलोऽपि भवेन्नरः ॥ ८२ ॥

दशवें शनैश्चर में कुकर्मी, धन-वर्जित, दया, सत्य और गुणों से हीन और चंचल मनुष्य हो ॥ ८२ ॥

छायात्मजे च लाभस्थे सर्वविद्याविशारदः ।
उष्ट्रगोमहिषैः पूर्णो राजमान्यः शुचिर्भवेत् ॥ ८३ ॥

ग्यारहवें शनैश्चर हो, तो सर्व विद्याओं में निपुण, ऊँट, गौ और भैंसे से पूर्ण, राजाओं में पूज्य और पवित्र हो ॥ ८३ ॥

असद्व्ययी व्यये मन्दे कृतघ्नो वित्तवर्जितः ।
बन्धुवैरः कुवेषः स्याच्चञ्चलोऽपि नरः सदा ॥ ८४ ॥

बारहवें शनैश्चर में असत् में खर्च करनेवाला, कृतघ्न, द्रव्य-हीन, भाइयों से वैर करनेवाला, कुवेष और चंचल मनुष्य हो ॥ ८४ ॥

शनिफल समाप्त ।

स्त्रीजन्मलग्न फल ।

लग्ने च सप्तमे पापे सप्तमे वत्सरे पतिः ।
म्रियते चाष्टमे वर्षे चन्द्रे षष्ठेऽष्टमे यदा ॥ ८५ ॥

जिस स्त्री के लग्न या सातवें स्थान में पापग्रह हो, तो उस स्त्री का पति सात वर्ष में मर जावे और जो चन्द्रमा छठे या आठवें स्थान में हो, तो आठ वर्ष में मरे ॥ ८५ ॥

गुरौ शुक्रे मृतापत्या मृतगर्भा च मङ्गले ।
अष्टमस्थो ग्रहो नूनं न स्त्रियाः शोभनो मतः ॥ ८६ ॥

आठवें में बृहस्पति या शुक्र हों, तो पुत्र न जीवे, आठवें मंगल हो, तो गर्भ ही नष्ट हो जावे एवं आठवें घर में स्त्री के कोई भी ग्रह अच्छा नहीं होता ॥ ८६ ॥

एकः पुत्रो भवेद्राजा पञ्चमस्थो यदा रविः ।
मङ्गले च त्रयः पुत्रा गुरौ पञ्च प्रकीर्त्तिताः ॥ ८७ ॥

जिसके पाँचवें घर में सूर्य हों, तो एकही पुत्र हो, परंतु राजाही होवे और मंगल हो, तो तीन पुत्र और बृहस्पति हो, तो पाँच पुत्र होवें ॥ ८७ ॥

पञ्चमस्थे निशानाथे स्त्रियाः कन्याद्वयं भवेत् ।
बुधे कन्याश्चतस्रश्च शुक्रे सप्त च कन्यकाः ॥ ८८ ॥

जिस स्त्री के पाँचवें चन्द्रमा हों, तो दो कन्या होवें; बुध हों, तो चार कन्याएँ और शुक्र हो, तो सात कन्याएँ हों ॥ ८८ ॥

षडेव कन्या जायन्ते धर्मस्थाने यदा सितः ।
सप्तमे च यदा राहुः स्त्रियाः पुत्रस्तदा भवेत् ॥ ८९ ॥

जिसके नवें घर में शुक्र हो, तो छः कन्याएँ हों और सातवें में राहु हो, तो एक पुत्र हो ॥ ८९ ॥

सुरूपा भार्गवे लग्ने साहङ्कारा धरासुते।
बुधे वक्रा गुरौ शुद्धा शनौ दारिद्र्यदुर्भगा ॥ ९० ॥

शुक्र लग्न में हो, तो सुरूपा हो, मंगल लग्न में हो, तो अभिमान-सहित हो; बुध हो, तो टेढ़ी हो; बृहस्पति हो, तो शुद्ध और शनैश्चर हो, तो दारिद्र्यदुर्भगा हो ॥ ९० ॥

पापयोरन्तरे लग्ने चन्द्रे वा यदि कन्यका।
जायते च तदा हन्ति पितृश्वशुरयोः कुलम् ॥ ९१ ॥

जिस कन्या की लग्न में पापग्रहों के बीच में चन्द्रमा हो, तो वह पिता और श्वशुर दोनों कुलों का नाश करे ॥ ९१ ॥

द्वादशे चाष्टमे भौमे क्रूरे तत्रैव संस्थिते।
लग्ने च सिंहिकापुत्रे रण्डा भवति कन्यका ॥ ९२ ॥

जिसके बारहवें या आठवें क्रूरग्रह-सहित मंगल हो और लग्न में राहु हो, तो वह कन्या विधवा हो जावे ॥ ९२ ॥

सप्तमे भार्गवे जाता कुलदोषकरी भवेत्।
कर्कराशिस्थिते भौमे स्वैरं भ्रमति वेश्मसु ॥ ९३ ॥

सातवें शुक्र में कुल में दोष करनेवाली हो तथा कर्क राशि में मंगल हो, तो इच्छापूर्वक घर-घर में घूमे ॥ ९३ ॥

लग्नात्सप्तमगः पापश्चन्द्रात्सप्तमगोऽपि वा।
सद्यो निहन्ति दम्पत्योरेको नास्त्यत्र संशयः ॥ ९४ ॥

लग्न से सातवें पापग्रह वा चन्द्रमा से सातवें पापग्रह हो, तो एक ही योग स्त्री पुरुष दोनों को नष्ट कर देवे ॥ ९४ ॥

लग्ने वा मेषकः सूर्यश्चन्द्रात्सप्तमगोऽपि वा।
सद्यो निहन्ति दम्पत्योः कन्या तत्र न संशयः ॥ ९५ ॥

लग्न में मेष का सूर्य वा चन्द्रमा से सातवें हो, तो भी कन्या स्त्री-पुरुष दोनों को मारे ॥ ९५ ॥

लग्ने व्यये चतुर्थे च पञ्चमे सप्तमे ग्रहाः ।
पतिबन्ध्या भवेन्नारी नारीबन्ध्यो भवेत्पतिः ॥ ९६ ॥

इति श्रीसर्वशास्त्रविशारदश्रीकाशिनाथकृतजातक-
लग्नचन्द्रिकायां ग्रहयोगो नाम
द्वितीयः परिच्छेदः ॥ २ ॥

लग्न, बारहवें, चौथे, पाँचवें या सातवें में ग्रह हों, तो स्त्री पति-बंध्या हो और पति नारीवंध्य हो ॥ ९६ ॥

स्त्रीजन्मलग्नफल समाप्त ।

इति श्रीउन्नावप्रदेशान्तर्गततारगाँवनिवासिपण्डितरामबिहारीसुकुलकृत-लग्नचन्द्रिकाभाषाटीकायां ग्रहयोगो नाम द्वितीयः परिच्छेदः ॥ २ ॥

तीसरा परिच्छेद ।

सूर्यपुरुषाकृति चक्र का वर्णन।

लिखित्वा नरचक्रं च सूर्यो यत्र व्यवस्थितः ।
तन्नक्षत्रादिकं कृत्वा त्रयं दद्याच्च मस्तके ॥ १ ॥
वदने च त्रयं दद्यादेकैकं स्कन्धयोर्द्वयोः ।
बाहुद्वये तथैकैकं पाण्योरेकैकमेव च ॥ २ ॥
ऋक्षाणि हृदये पञ्च नाभौ स्यादेकमेव हि ।
ऋक्षं गुह्ये भवेदेकमेकैकं जानुनोर्द्वयोः ॥ ३ ॥
नक्षत्राणि षडन्यानि दद्यादङ्घ्रिद्वये बुधः ।
सूर्यनक्षत्रतो जन्मनक्षत्रावधि गण्यते ॥ ४ ॥
पादस्थिते च नक्षत्रे निर्धनोऽल्पायुरेव च ।
विदेशागमनं जानौ गुह्ये स्यात्पारदारिकः ॥ ५ ॥
अल्पतोषी भवेन्नाभौ हृदये चेश्वरस्तथा ।
तस्करः पाणियुग्मे च बाहुस्थाने च्युतो भवेत् ॥ ६ ॥
स्कन्धे गजस्कन्धगामी मुखे मिष्टान्नभोजनः ।
मस्तकस्थे च नक्षत्रे पट्टबन्धी भवेन्नरः ॥ ७ ॥

सूर्यनराकार चक्र

मस्तक	मुख	स्कन्ध	बाहु	हस्त	हृदय	नाभि	गुह्य	जानु	चरण
३	३	२	२	२	५	१	१	२	६

मनुष्य के आकार का चक्र लिखकर जिस नक्षत्र में सूर्य हों, उस नक्षत्र को आदि में करके तीन नक्षत्र मस्तक में धरे । मुख में तीन, दोनों स्कन्धों में एक-एक, दोनों भुजाओं में एक-एक तथा दोनों हाथों में भी एक ही रक्खे । हृदय में पाँच नक्षत्र, तोंदी में एक, गह्य में एक, दोनों गाँठियों में भी एक ही रक्खे । दोनों चरणों में छः नक्षत्र धरे, इस तरह सूर्य के नक्षत्र से जन्म के नक्षत्र तक गिन जावे । जो चरणों में जन्म का नक्षत्र पड़े, तो दरिद्री और थोड़ी आयुवाला हो, गाँठियों में पड़े, तो विदेशागमन हो, गुह्य में हो, तो परस्त्रीगामी हो । तोंदी में हो, तो थोड़े ही में प्रसन्न हो; हृदय में पड़े, तो समर्थ हो; दोनों हाथों में हो, तो चोर हो, भुजाओं में हो, तो च्युत हो । स्कन्ध में हो, तो हाथी के काँधे में चढ़नेवाला हो, मुख में हो, तो मीठा अन्न भोजन करनेवाला हो; मस्तक में पड़े, तो पट्टबंधी मनुष्य हो ॥ १–७ ॥

चन्द्रचक्र का वर्णन ।

जन्मराशेश्च नक्षत्रान्नक्षत्रं वर्त्तमानकम् ।
गणयेद्गणकः प्राज्ञश्चन्द्रस्यैव शुभाशुभम् ॥ ८ ॥
षडास्ये पृष्ठके षट्कं करे षट्कं त्रयं गुदे ।
त्रयं पादे त्रयं कण्ठे दातव्यं गणकोत्तमैः ॥ ९ ॥
मुखे हानिश्च विज्ञेया धनलाभो हि पृष्ठके ।
हस्ते राजभयं ज्ञेयं राजमानं च गुह्यभे ॥ १० ॥
स्थानभ्रष्टो भवेत्पादे कण्ठे सर्वसुखं भवेत् ।
जन्मनक्षत्रतश्चन्द्रनक्षत्रस्य फलं क्रमात् ॥ ११ ॥

चन्द्रचक्र ।

मु०	पृ०	क०	गु०	च०	कं०
६	६	६	३	३	३

जन्मराशि के नक्षत्र से चन्द्रमा के वर्तमान नक्षत्र तक बुद्धिमान् ज्योतिषी गिने और शुभाशुभ फल कहे । छः नक्षत्र उत्तम ज्योतिषी मुख में रक्खें और छः ही छः पीठ और हाथ में भी रक्खें, गुदा, चरण और कण्ठ में तीन-तीन धरें। मुख में पड़े, तो हानि जाने; पीठ में पड़े, तो धन का लाभ हो; हाथ में पड़े, तो राजा से भय हो; गुह्य में पड़े, तो राजाओं में मान हो । चरण में पड़े, तो स्थान से नष्ट हो; कण्ठ में पड़े, तो सब सुख हों; इसी तरह क्रम से ही जन्मनक्षत्र से चन्द्र-नक्षत्र का फल जाने ॥ ८-११ ॥

भौमचक्र का वर्णन ।

यस्मिन्नृक्षे भवेद्भौमस्तदादि त्रीणि मस्तके ।
त्रयं नेत्रे त्रयं मौलौ चतुष्कं बाहुयुग्मके ॥ १२ ॥
कण्ठे द्वे हृदये पञ्च त्रयं गुह्ये श्रुतिः पदोः ।
मुखे रोगो धनं नेत्रे यशो मौलौ धनं हृदि ॥ १३ ॥
कण्ठे हिक्का रतिर्गुह्ये पादे देशान्तरं व्रजेत् ।
वामबाहौ भवेद्रोगो दक्षिणे गणको भवेत् ॥ १४ ॥

भौमचक्र ।

म०	ने०	मौ०	बा०	कं०	हृ०	गु०	च०
३	३	३	४	२	५	३	४

जिस नक्षत्र में मंगल हो, उसको आदि देकर तीन नक्षत्र मुख में धरे, फिर नेत्र में तीन, मौलि में भी तीन ही रक्खे, दोनों भुजाओं में चार, कण्ठ में दो, हृदय में पाँच, गुह्य में तीन और चरणों में चार धरे; मुख में जन्मनक्षत्र पड़े, तो रोग; नेत्र में पड़े, तो धन; मौलि में पड़े, तो यश और हृदय में हो, तो धन को देता है। कण्ठ में

पड़े, तो हिचकी आवें; गुह्य में पड़े, तो रति करनेवाला हो; चरण में पड़े, तो परदेश जानेवाला हो; बाईं भुजा में पड़े, तो रोगी हो; दाहिनी भुजा में पड़े, तो ज्योतिषी हो ॥ १२-१४ ॥

बुधचक्र का वर्णन।

बुधो यत्र भवेद्दक्षे तदादौ विलिखेत्क्रमात्।
मुखे ज्ञानाय पञ्च स्युर्नेत्रे राज्याय पञ्च च ॥ १५ ॥
पञ्च कण्ठे मुखे राज्ये हृदि ज्ञानाय पञ्च च।
क्षयाय पादयोः पञ्च करे च ज्ञानदं द्वयम् ॥ १६ ॥
एकं गुह्ये च नक्षत्रं क्षयं च परिकीर्त्तितम्।
जन्मनक्षत्रपर्यन्तं बुधचक्रे विचारयेत् ॥ १७ ॥

बुधचक्र।

मु०	ने०	कं०	हृ०	च०	ह०	गु०
५	५	५	५	५	२	१

बुध जिस नक्षत्र में हो, उसको आदि देकर क्रम ही से पाँच नक्षत्र मुख में ज्ञान देनेवाले हैं; नेत्र, कंठ और मुख में भी पाँच नक्षत्र राज्य के देनेवाले हैं और हृदय में पाँच नक्षत्र ज्ञान देनेवाले हैं; चरणों में पाँच नक्षत्र नाश करनेवाले हैं और हाथ में दो नक्षत्र ज्ञान के देनेवाले हैं। गुह्य में एक नक्षत्र नाश करनेवाला है; इस तरह से जन्मनक्षत्र पर्यन्त बुधचक्र में विचार लेवे ॥ १५-१७ ॥

गुरुचक्र का वर्णन।

मौलौ चत्वारि राज्यं युगपरिगणितं स्कन्धयुग्मे च लक्ष्मी-
रेकं कण्ठे विभूतिर्मदनपरिमितं वक्षसि प्रीतिलाभः।
षड्भिः पीडाङ्घ्रियुग्मे जलधिपरिमितं वामहस्ते च मृत्यु-
र्दृग्युग्मे त्रीणि दद्युर्नृपतिसमसुखं वाक्पतेश्चक्रमेतत् १८॥

गुरुचक्र ।

म०	स्कं०	कं	हृ०	च०	वामहस्त	ने०
४	४	१	५	६	४	३

बृहस्पति जिस नक्षत्र में हो, उसको आदि देकर मस्तक में चार राज्य के देनेवाले हैं; फिर चार दोनों स्कन्धों में लक्ष्मी के देनेवाले हैं; कंठ में एक ऐश्वर्य का देनेवाला है, फिर हृदय में पाँच प्रीति के देनेवाले हैं; दोनों चरणों में छः पीड़ा के देनेवाले हैं; फिर चार बायें हाथ में मृत्यु के देनेवाले ह; दोनों नेत्रों में तीन राजा के बराबर सुख देनेवाले हैं ॥ १८ ॥

भृगुचक्र का वर्णन ।

मौलौ पञ्च द्वयं वक्त्रे चतुष्कं हृदये स्वभात् ।
सप्त बाह्वोस्त्रयं गुह्ये जान्वोर्द्वे जलधिः पदे ॥ १९ ॥
सुखं हृदि तथा मौलौ गुह्ये च मरणं ध्रुवम् ।
मुखे सुभोजनं बाह्वोर्मृत्युर्जान्वोः पदे तथा ॥ २० ॥

भृगुडिम्भचक्र ।

म०	मु०	हृ०	बा०	गु०	जा०	च०
५	२	४	७	३	२	४

मस्तक में पाँच; दो मुख में; चार हृदय में; सात भुजाओं में; तीन गुह्य में; गाँठियों में दो और चरण में चार रक्खे । हृदय तथा मस्तक में जन्म का नक्षत्र हो, तो सुख हो ; गुह्य में पड़े, तो निश्चय ही मरण हो; मुख में हो, तो सुंदर भोजन मिले; भुजा या गाँठियों या चरणों में हो, तो मरण ही हो ॥ १९-२० ॥

शनिचक्र का वर्णन ।

यस्मिञ्छनैश्चरति चक्रगतं तदृक्षं
चत्वारि दक्षिणकरेऽङ्घ्रियुगे च षट्कम् ।
चत्वारि वामकर्णान्युदरे च पञ्च
मूर्ध्नि त्रयं नयनयोर्द्वितयं गुदे च ॥ २१ ॥
मुखस्थिते भानुसुतेऽतिपीडा
लक्ष्मीर्यशो दक्षिणहस्तसंस्थे ।
पादद्वये निष्फलता च वामे
करे च युद्धे तनुसंशयश्च ॥ २२ ॥
हृद्यर्थो मस्तके राज्यं नेत्रयोः परमं सुखम् ।
गुदे च प्राणसन्देहः शनिचक्रे विनिर्दिशेत् ॥ २३ ॥
मुखाचरति गुह्ये च गुह्यादायाति मस्तके ।
मस्तकाल्लोचने याति लोचनाद्धृदयं व्रजेत् ॥ २४ ॥
हृदयाद्वामहस्तं च वामहस्तात्पदद्वयम् ।
पादाच्च दक्षिणं हस्तं शनिचारोऽयमुच्यते ॥ २५ ॥

शनिचक्र ।

द. ह.	वा.ह.	कर्ण०	उ०	म०	नें०	गु०
४	६	४	५	३	२	२

जिस नक्षत्र में शनैश्चर हो, उस नक्षत्र से उलटे चार दाहिने हाथ में, दोनों चरणों में छः, चार नक्षत्र वामकर्ण में, पेट में पाँच, मस्तक में तीन, नयनों और गुदा में दो रक्खे । मुख में शनैश्चर स्थित हों, तो अति पीड़ा हो, दाहिने हाथ में हो, तो लक्ष्मी और यश को देवे ; दोनों पाँवों में हो, तो निष्फलता हो ; बायें हाथ में हो, तो युद्ध में शरीर का संदेह हो; हृदय में हो, तो द्रव्य

मिले; मस्तक में पड़े, तो राज्य हो; नेत्रों में हो, तो परम सुख मिले; गुदा में पड़े, तो प्राणों में संदेह हो; इस तरह से शनैश्चर के चक्र को विचारे । मुख से गुह्य में चलता है, और गुह्य से मस्तक में आता है, मस्तक से नेत्रों में जाता है, और नेत्रों से हृदय में पहुँचता है । हृदय से बायें हाथ में, और बायें हाथ से दोनों पाँवों में, पाँवों से फिर दाहिने हस्त में जाता है, इस तरह से शनिचार कहा गया है ॥ २१-२५ ॥

राहुचक्र का वर्णन ।

यस्मिन्नृक्षे भवेद्राहुस्तदादौ सप्त पादयोः ।
दक्षिणे च भुजे पञ्च शिरसि त्रीणि दापयेत् ॥ २६ ॥
नक्षत्रे द्वे हृदि न्यस्य मुखे चैकं नियोजयेत् ।
पञ्च वामकरे दद्यान्नाभौ चैकं नियोजयेत् ॥ २७ ॥
गुह्यस्थाने त्रयं दद्याद्राहुचक्रमिदं स्मृतम् ।
पादयोर्धनहानिः स्यात्सन्तापो दक्षिणे करे ॥ २८ ॥
मस्तके च भयं शत्रोर्हृदये दुर्जनप्रियः ।
मुखे दुर्जनसंहारो मृत्युर्वामकरे भवेत् ॥ २९ ॥
नाभिस्थं सर्वनाशाय गुह्ये प्राणविनाशनम् ॥ ३० ॥

राहुचक्र ।

चर०	द.ह.	शि०	हृ०	मु०	वा.ह.	ना०	गु०
७	५	३	२	१	५	१	३

जिस नक्षत्र में राहु हो, उससे आदि लेकर सात पाँवों में, दाहिने भुजा में पाँच, शिर में तीन, हृदय में दो, मुख में एक, बायें हाथ में पाँच और तोंदी में एक रक्खे । तथा गुह्य स्थान में तीन, इस तरह से राहुचक्र बनावे ; पाँवों में धन की हानि, दाहिने हाथ में संताप,

मस्तक में शत्रु से भय, हृदय में दुर्जन प्रिय हो, मुख में हो, तो दुर्जनों का नाश और बायें हाथ में हो, तो मृत्यु, तोंदी में हो, तो सर्व नाश, गुह्य में हो, तो प्राणों का नाश करे ॥ २६-३० ॥

केतुचक्र का वर्णन ।

यस्मिन्नृक्षे भवेत्केतुस्तदादौ तु फलं वदेत् ।
नेत्रे द्वे रोगशोकाय मुखे लाभाय पञ्च च ॥ ३१ ॥
राज्यप्रदं त्रयं मौलौ नक्षत्रं परिकीर्तितम् ।
चतुष्कं दक्षिणे हस्ते नक्षत्रं च यशःप्रदम् ॥ ३२ ॥
वामहस्ते चतुष्कं च भयरोगकरं सदा ।
एकं नाभौ च नाशाय गुह्ये द्वे मृत्युकारके ॥ ३३ ॥
ऋक्षाणि पादयोः षट्कं बन्धुनाशकराणि च ।
केतुचक्रस्य माहात्म्यं देहस्थं ज्ञायते बुधैः ॥ ३४ ॥

केतुचक्र ।

ने०	मु०	म०	द. ह.	वा. ह.	ना०	गु०	चर०
२	५	३	४	४	१	२	६

जिस नक्षत्र में केतु हो उसे आदि ले दो नेत्र में रोग और शोक के करनेवाले मुख में पाँच लाभ करनेवाले, तीन मस्तक में राज्य देने-वाले, चार दाहिने हाथ में यश के देनेवाले हों। अरु वाम हाथ में चार सदा ही भय और रोग को करे, तोंदी में एक और गुह्य में दो नाश करनेवाले हैं। पाँवों में छः नक्षत्र भाई के नाश करनेवाले हैं। इस तरह से नराकार केतुचक्र का माहात्म्य पण्डितों करके जानने योग्य है ॥ ३१-३४ ॥

स्त्रियों के सूर्यचक्र का वर्णन।

मौलौ त्रयं मुखे सप्त स्तनयोरष्टमानि च।
हृदि त्रयं त्रयं नाभौ त्रयं गुह्ये च विन्यसेत्॥ ३५॥
मौलौ सन्तापकृत्सूर्यो मुखे मिष्टान्नदो भवेत्।
स्तनयोः कामदः प्रोक्तो हृदये सुखदः स्त्रियः॥ ३६॥
नाभौ पतिसुखं दत्ते गुह्ये कामप्रदः सदा।
सूर्यडिम्भाख्यचक्रं तु स्त्रीणां प्रोक्तं विशेषतः॥ ३७॥

स्त्रीणां सूर्यपुरुषाकृति चक्र।

म०	मु०	स्त०	हृ०	नाभि	गुदा
३	७	८	३	३	३

सूर्य-नक्षत्र से आदि ले मस्तक में तीन, मुख में सात, स्तनों में आठ, हृदय में तीन, नाभि तथा गुह्य में तीन-तीन रक्खे। मस्तक में सूर्य हो, तो सन्ताप करे; मुख में हो, तो मिष्टान्न का देनेवाला हो; स्तनों में काम का देनेवाला और हृदय में स्त्री को सुख देवे। तोंदी में हो, तो पति को सुख दे; गुह्य में कामना सदाही पूर्ण करे; इस प्रकार सूर्य डिम्भाख्यचक्र विशेष करके स्त्रियों के लिये कहा गया है॥३५-३७॥

सूर्यकालानलचक्र का वर्णन।

ऊर्ध्वास्तिस्त्रस्त्रिशूलाग्रे रेखास्तिस्रस्तिरः स्थिताः।
द्वे द्वे रेखे कोणयोश्च शृङ्गयुग्मं तथैकया॥ ३८॥
मध्यत्रिशूलदण्डाधो भानुनक्षत्रमालिखेत्।
अन्यान्यभिजिता सार्द्धं लिखेदङ्कः स मस्तके॥ ३९॥
अधःस्थितैस्त्रिनक्षत्रैरुद्वेगभयबन्धनम्।
रेखाष्टके भवेल्लाभो ऋक्षषट्के तथा पुनः॥ ४०॥

शृङ्गद्वये रोगभङ्गो मृत्युः शूलत्रये स्फुटम् ।
विवादे विग्रहे युद्धे रोगार्ते गमने तथा ॥ ४१ ॥
सूर्यकालानलं चक्रं कथितं गणकोत्तमैः ॥ ४२ ॥

सूर्यकालानलचक्र ।
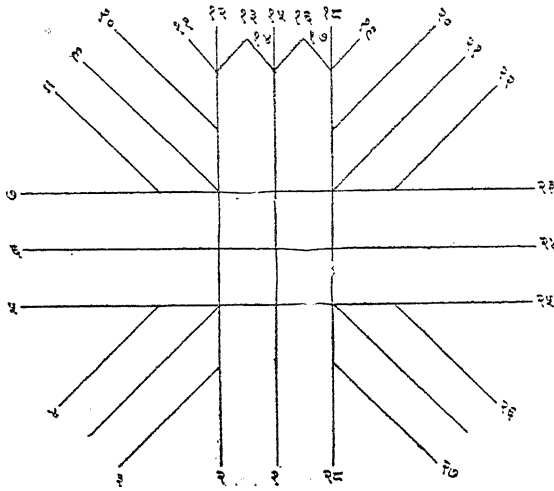
सूर्यकालानल-चक्र में ऊर्ध्व तीन रेखा, तीन तिरछी रेखा, कौन में दो-दो, रेखाएँ दोनों शृंगों में एक-एक रेखा, त्रिशूल-चक्र के मध्य में, दण्ड के नीचे सूर्य का नक्षत्र लिखे और अभिजित् सहित सब नक्षत्र मस्तक में रक्खे । नीचे स्थित हुए तीन नक्षत्रों से उद्वेग, भय और बंधन हो; रेखाष्टक (चारों कोणों की आठ रेखाओं) में लाभ हो; और छः नक्षत्रों में भी लाभ हो; दोनों शृंगों में रोग-भंग हो और मूलत्रय (त्रिशूलाग्र रेखाओं) में मृत्यु हो; यह उत्तम ज्योतिषियों करके सूर्यकालानलचक्र विवाद, विग्रह, युद्ध, रोग से व्याकुल तथा यात्रा में विचारना चाहिए ॥ ४१-४२ ॥

जन्मराशि के वेध का फल ।

रवेर्वेधे मनस्तापो द्रव्यहानिर्धरासुते ।
रोगपीडाकरो मन्दो राहुकेतू च मृत्युदौ ॥ ४३ ॥

गुरोर्वेधे भवेल्लाभो रतिलाभश्च भार्गवे ।
स्त्रीलाभश्चन्द्रवेधे सुखं च बुधवेधतः ॥
जन्मराशेश्च वेधेन फलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ ४४ ॥

चन्द्रकालानलचक्र ।
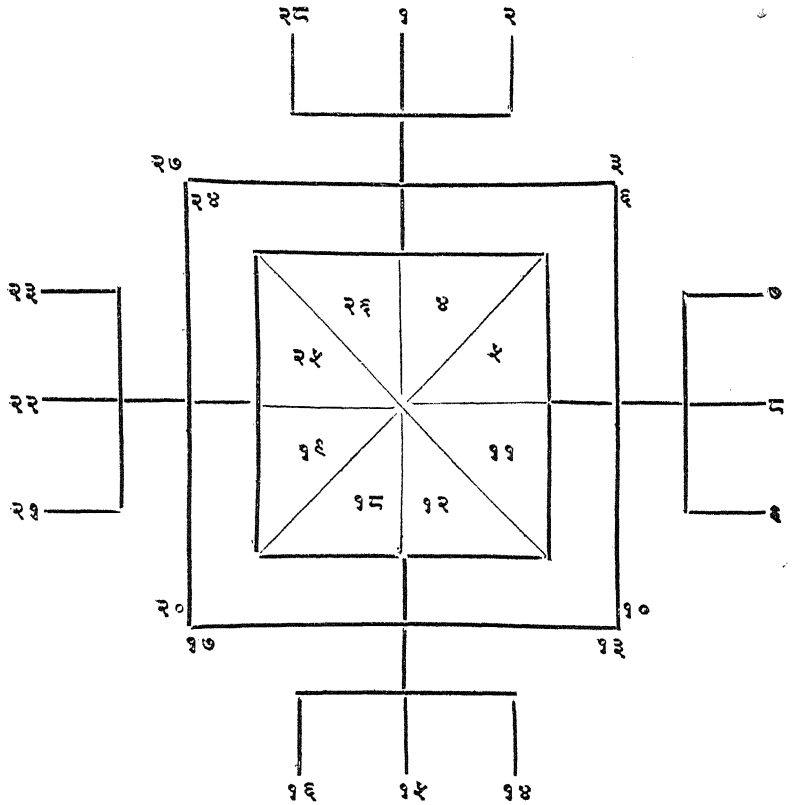
सूर्य के वेध में मन में संताप हो; मंगल में द्रव्य की हानि हो ; शनैश्चर के वेध में रोग और पीड़ा हो; राहु और केतु का वेध हो, तो मृत्यु हो । बृहस्पति के वेध में लाभ; शुक्र के वेध में रति का लाभ हो; चन्द्रमा के वेध में स्त्री का लाभ हो और बुध के वेध में सुख हो; जन्मराशि के वेध से यह फल कहा गया है ॥ ४३-४४ ॥

दुर्गचक्र का वर्णन ।

दुर्गाकारं लिखेच्चक्रमष्टकोणसमन्वितम् ।
ईशाने ग्रामनक्षत्रं दत्त्वा चाभिजिता सह ॥ ४५ ॥
चतुष्कं च चतुष्कं च कोणेषु सकलेषु च ।
मध्ये मध्ये सग्रहं च दद्याद्विज्ञस्त्रयं त्रयम् ॥ ४६ ॥
दुर्गमध्ये स्थिते सूर्ये जलशोषः प्रजायते ।
चन्द्रे भङ्गः कुजे दाहो बुधे बुद्धियुतो नृपः ॥ ४७ ॥
बृहस्पतौ दुर्गमध्ये सुभिक्षं प्रचुरं भवेत् ।
चलचित्तो नृपः शुक्रे भेदभङ्गः शनैश्चरे ॥ ४८ ॥
राहुकेतू दुर्गमध्ये विषदग्धो भवेन्नृपः ।
सूर्यश्च सूर्यपुत्रश्च राहुकेतू च मङ्गलः ॥ ४९ ॥
एते चेद्दुर्गमध्ये स्युर्दुर्गभङ्गोऽपि जायते ।
गुरुशुक्रौ बुधश्चन्द्रो दुर्गमध्ये यदा स्थिताः ॥ ५० ॥
तदा दुर्गो न भज्येत महेन्द्रेणापि ताडितः ।

दुर्गचक्र ।

कृ म
रो श्ले पू
पु
मृ पु उ
आ
भ अ रे उ दुर्गचक्रम् ह चि स्वा वि
पू
पू उ मू
श अ ज्ये
ध अ ऽनु
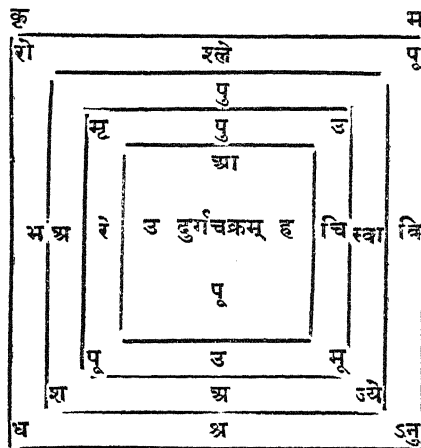
आठकोण का दुर्गाकार (किले के सदृश) चक्र लिखे और ईशानकोण में अभिजित् सहित गाँव का नक्षत्र धरे। चार चार सब कोणों में और मध्य में ज्योतिषी तीन-तीन देवे। दुर्ग के मध्य में स्थित सूर्य हों, तो जल का शोष हो; चन्द्रमा में भंग; कुज हो, तो दाह; बुध में राजा बुद्धियुत हो। बृहस्पति दुर्ग के मध्य में हों, तो बहुत सुभिक्ष हो, शुक्र हो, तो राजा का चित्त चलायमान हो, शनैश्चर में भेदभङ्ग हो। राहु-केतु दुर्ग के मध्य में हों, तो राजा विष से जल जावे; सूर्य, शनैश्चर, राहु, केतु और मंगल ये सब ग्रह दुर्ग के मध्य में हों, तो दुर्ग भङ्ग हो जावे; गुरु, शुक्र, बुध और चन्द्रमा ये चारों ग्रह जो दुर्ग के मध्य में स्थित हों, तो इन्द्र से भी वह दुर्ग न टूट सके॥ ४५-५०॥

रवि आदिकों का मध्यम चार।

मासं शुक्रबुधादित्याः सपादद्विदिनं शशी।
भौमस्त्रिपक्षं जीवोऽब्दं सार्द्धवर्षद्वयं शनिः।
राहुः केतुः सदा भुङ्क्ते सार्द्धमेकं च वत्सरम्॥ ५१॥

शुक्र, बुध और सूर्य ये तीन ग्रह एक राशि में एक-एक महीने रहते हैं; चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है; मंगल तीन पक्ष और बृहस्पति एक वर्ष तथा शनैश्चर एक राशि में ढाई वर्ष रहता है। राहु और केतु सदा ही डेढ़वर्ष रहते हैं॥ ५१॥

जन्मलग्नज्ञान।

न पश्यति शशी लग्नं लग्नस्वामी न पश्यति।
न पश्यति यदा सूर्यः सोऽन्यजातस्तदोच्यते॥ ५२॥

जो चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, और लग्न का स्वामी और सूर्य भी लग्न ही को न देखते हों, तो उस बालक को और से उत्पन्न हुआ जानिये॥ ५२॥

सुतपतिरस्तगतो वा पापयुतः पापमध्यगो वा स्यात्।
सन्ततिबाधां कुरुते केन्द्रे वा पापसंयुते चन्द्रे ॥ ५३ ॥

पाँचवीं राशि का स्वामी अस्त हो, या पापयुक्त, या पापग्रह के मध्य में हो, और केन्द्र में पापयुक्त चन्द्रमा हो, तो संतति की बाधा करे ॥ ५३ ॥

उदयाद्या गता नाड्यस्तासामर्द्धेन सङ्ख्यया ।
सूर्यर्क्षाच्चन्द्रवेहर्क्षं तेन लग्नस्य निर्णयः ॥ ५४ ॥

उदय की आदि की जितनी नाड़ी बीत चुकी हों, उनकी आधी संख्या करे, फिर सूर्य के नक्षत्र से जौन-सा वर्त्तमान नक्षत्र हो, उससे लग्न का निर्णय करे ॥ ५४ ॥

शय्याशिरो लग्नराशेर्द्रव्यं गेहं बलाधिकात् ।
चन्द्रलग्नान्तरालस्थैर्ग्रहैस्तुल्याश्च सूतिकाः ॥ ५५ ॥

शय्या का शिर लग्नराशि से द्रव्य, गेह और बल की अधिकता से जाने, और चन्द्रमा और लग्न के बीच में जितने ग्रह हों, उतनी ही सूतिका के पास स्त्रियाँ जाने ॥ ५५ ॥

छागे सिंहे वृषे लग्ने जायते नालवेष्टितः ।
वामभागे च नारीणां पुरुषाणां च दक्षिणे ॥ ५६ ॥

मेष, सिंह और वृष लग्न में जो बालक हो, तो नाल से लपेटा हुआ पैदा हो; स्त्रियों के बायें भाग में और पुरुषों के दहिने भाग में जाने ॥ ५६ ॥

लग्ने तदीशपार्श्वे वा यावन्तश्च खयायिनः ।
धनगा व्ययगाश्चैव तावत्यः सूतिकाः स्मृताः ॥ ५७ ॥

लग्न में या लग्न के स्वामी के समीप में जितने ग्रह हों, या दूसरे या बारहवें घर में जो ग्रह हों, उतनी सूतिका के पास स्त्रियाँ जाने ॥ ५७ ॥

चरकेन्द्रस्थितैः खेटैरभावे जन्मलग्नतः।
केन्द्रस्थानेष्वनेकेषु बलाधिक्याद्वदेद्बुधः ॥ ५८ ॥

चर राशि केन्द्रस्थान में ग्रहस्थित हो, जन्मलग्न को छोड़कर सब केन्द्रों में तो पण्डित बल की अधिकता से कहे ॥ ५८ ॥

लग्नत्रिभागैर्वर्तिश्च क्रमादित्यास्थिरागता।
चन्द्रराशित्रिभागैश्च स्नेहपूर्णास्थिरोगतः ॥ ५९ ॥

लग्न के त्रिभाग से क्रम से ही बत्ती को कहे, और चन्द्रराशि के त्रिभाग से तेल को कहे ॥ ५९ ॥

चराद्यर्के भवेद्दीपो रव्याद्यैर्बलिभिर्ग्रहैः।
अदृढं नूतनं दग्धं चित्रं बद्धं शुभेरजेत् ॥ ६० ॥

चर आदि राशि के सूर्य से ग्रहों के बली होने से दीप को कहे, मजबूत नहीं, नया, जरा हुआ, चित्र-विचित्र और बद्धवस्त्र जाने ॥ ६० ॥

सूर्यशुक्रौ भौमराहू शनिचन्द्रौ बुधो गुरुः।
पूर्वादीनां क्रमादेते दिशां नाथाः प्रकीर्त्तिताः ॥ ६१ ॥

सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनैश्चर, चन्द्रमा, बुध और बृहस्पति ये क्रम ही से पूर्व आदि दिशाओं के स्वामी जानिये ॥ ६१ ॥

अष्टोत्तरीदशाक्रम।

चत्वारि भानि पापेषु शुभेषु त्रीणि योजयेत्।
आर्द्रादिमृगपर्यन्तं लिखेदभिजिता सह ॥ ६२ ॥

पापग्रहों में चार नक्षत्र और शुभग्रहों में तीन नक्षत्र जोड़े, आर्द्रा से मृगशिरा तक अभिजित्-सहित सब नक्षत्र रक्खे ॥ ६२ ॥

षडादित्ये च वर्षाणि चन्द्रे पञ्चदशैव तु।
मङ्गले चाष्टवर्षाणि बुधे सप्तदशैव तु ॥ ६३ ॥
शनौ च दश वर्षाणि जीवे चैकोनविंशतिः।
राहौ द्वादशवर्षाणि भार्गवे चैकविंशतिः ॥ ६४ ॥

अष्टोत्तरीय दशा में सूर्य की दशा छः वर्ष, चन्द्रमा की दशा पंद्रह वर्ष, मंगल की दशा आठ वर्ष, बुध की दशा सत्रह वर्ष, शनैश्चर की दश वर्ष, बृहस्पति की उन्नीस वर्ष, राहु की बारह वर्ष और शुक्र की इक्कीस वर्ष होती है; इस तरह से सब मिलकर एक सौ आठ वर्ष होते हैं ॥ ६३-६४ ॥

जन्मर्क्षगतनाडिघ्नं परायुः खगजैर्भजेत् ।
लब्धं परायुषं शोध्यं शेषमायुः स्फुटं भवेत् ॥ ६५ ॥

जन्म-नक्षत्र की गत नाड़ियों से परम आयु को गुणे, फिर ८० का भाग दे तथा लब्ध हुए को परमायु १०८ में घटा देने से शेष आयु निकल आती है ॥ ६५ ॥

परमायुः प्रमाणेन गुणयेद्गतनाडिकाः ।
नक्षत्रस्य हरेद्भागं नवत्याज्यं[1] विशोधयेत् ॥ ६६ ॥

परम आयु के प्रमाण १०८ से गत घड़ियों को गुणे, फिर नक्षत्र (२७) का भाग देकर नव छोड़ देवे ॥ ६६ ॥

नक्षत्रों से दशा-विचार ।

आर्द्राचतुष्कमादित्ये चन्द्रे ज्ञेयं मघात्रयम् ।
भौमे हस्तचतुष्कं स्यादनुराधात्रिकं बुधे ॥ ६७ ॥
पूषाचतुष्कं मन्दे च धनिष्ठात्रितयं गुरौ ।
राहौ चोत्तरचत्वारि कृत्तिकात्रितयं भृगौ ॥ ६८ ॥

सूर्य की दशा में आर्द्रा से चार नक्षत्र, चन्द्रमा की दशा में मघा से तीन नक्षत्र, मंगल की दशा में हस्त से चार नक्षत्र, बुध की दशा में अनुराधा से तीन नक्षत्र, शनैश्चर की दशा में रेवती से चार नक्षत्र, बृहस्पति की दशा में धनिष्ठा से तीन नक्षत्र, राहु की दशा

१—'नवत्याज्यं' के स्थान में 'नवत्याप्तं' पाठ मिलता है ।

में उत्तरभाद्रपद से चार नक्षत्र, शुक्र की दशा में कृत्तिका से तीन नक्षत्र तक जानना चाहिए॥ ६७-६८॥

अन्तर्दशा-विचार।

दशा दशाहताः कार्या भागो नन्दैर्विधीयते।
अन्तर्दशेयं तस्यैव प्रथमं ज्ञायते दशा॥ ६९॥

दशा को दशा से गुणे, फिर नव की दशा में भाग देकर उसकी पहली ही अन्तर्दशा जाने॥ ६९॥

सूर्यस्य दशा सूर्यान्ते दशायाः परिगण्यते।
नवभिर्भागे च यल्लब्धं तत्तु मासचतुष्टयम्॥ ७०॥

सूर्य की दशा सूर्य के अन्त में दशा को गुणाकर नव से भाग देने से जो लब्ध हो, वही मासचतुष्टय जाने॥ ७०॥

रविमहादशा-वर्ष ६ का फल।

उद्विग्नचित्तः स्वजनस्य पीडा
शरीररोगी स्वजनैर्वियोगी।
निपीडितो राजजनैः प्रवासी
नरोऽश्वघाती च रवेर्दशायाम्॥ ७१॥

सूर्य की दशा में ये फल होते हैं—उद्विग्नचित्त, भाई को पीड़ा, शरीर का रोगी, भाइयों से वियोगवाला, राजा के मनुष्यों से पीड़ित, परदेशी और घोड़ों का नाश करनेवाला हो॥ ७१॥

सूर्यदशामध्ये सूर्यस्यान्तर्दशामासचतुष्टयम्। ४। ०। ०। ०।
सूर्यस्यान्तर्गते सूर्ये लाभो राजकुलोद्भवः।
चित्तपीडा व्ययोऽर्थानां विप्रयोगश्च बन्धुभिः॥ ७२॥

सूर्य की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा चार महीने रहती है, उसका फल— सूर्य के अन्तर्गत सूर्य में राजा के कुल से लाभ हो; चित्त में पीड़ा; द्रव्य का खर्च और भाइयों से वियोग हो॥ ७२॥

रवेर्दशामध्ये चन्द्रदशामासादिः। १०। ०। ०। ०

शत्रुनाशोऽर्थलाभश्च चिन्तानाशः सुखागमः।
सूर्यस्यान्तर्गते चन्द्रे व्याधिनाशश्च जायते॥ ७३॥

सूर्य की दशा में चन्द्रमा की दशा दश महीने रहती है, उसमें शत्रु का नाश, द्रव्य का लाभ, चिन्ता का नाश, सुख का आगम और व्याधियों का नाश होता है॥ ७३॥

सूर्यदशामध्ये भौमस्यान्तर्दशामासादिः ५। १०। ०। ०

तस्य फलम्।

मणिर्मुक्ताकाञ्चनानि जयो युद्धे सुखं तथा।
प्राप्यते भूपतेर्मानः सूर्यस्यान्तर्गते कुजे॥ ७४॥

सूर्य की दशा में मंगल की दशा पाँच महीने दश दिन रहती है, उसमें मणि, मोती और सोना, युद्ध में जीत, सुख और राजा से मान मिलता है॥ ७४॥

सूर्यस्य दशामध्ये बुधदशामासादिः ११। १०। ०। ०

तस्य फलम्।

विलासं सुखदारिद्र्ये जायते रोगसम्भवः।
पामाविचर्चिकादीनि सूर्यस्यान्तर्गते बुधे॥ ७५॥

सूर्य की दशा में बुध की दशा ग्यारह महीने दश दिन रहती है, उसमें विलास, सुख, दरिद्रता, रोग की उत्पत्ति और पामा, विचर्चिकादिक (खाज आदि) रोग होते हैं॥ ७५॥

सूर्यदशामध्ये शनिदशामासादिः ६। २०। ०। ०

तस्य फलम्।

राजभीतिः शत्रुभीतिः कलहो दुःखमेव च।
जायते धननाशश्च सूर्यस्यान्तर्गते शनौ॥ ७६॥

सूर्य ही की दशा में शनैश्चर की दशा छः महीने बीस दिन रहती है, उसमें राजा से डर तथा शत्रु से भी भय, लड़ाई, दुःख और धन का नाश होता है ॥ ७६ ॥

सूर्यस्य दशामध्ये गुरोर्दशामासादिः १२ । २० । ० । ०

तस्य फलम् ।

निष्पापो व्यसनैर्हीनो नीरोगी धनवानपि ।
प्राप्नोति पदवीं गुर्वीं सूर्यस्यान्तर्गते गुरौ ॥ ७७ ॥

सूर्य ही की दशा के अंतर्गत बृहस्पति की दशा बारह महीने और बीस दिन होती है, उसमें पापहीन, व्यसन-रहित, रोगरहित, धनी और बड़े ऊँचे पद का पानेवाला होता है ॥ ७७ ॥

सूर्यस्य दशामध्ये राहोर्दशामासादिः ८ । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

व्यसनं वित्तनाशश्च शङ्का चाथ पराजयः ।
सूर्यस्यान्तर्गते राहौ द्यूतं बन्धुजनैः कलिः ॥ ७८ ॥

सूर्य की दशा के अन्तर्गत राहु की दशा आठ महीने रहती है, उसमें व्यसन, द्रव्य का नाश, शंका, पराजय, जुआ और भाइयों में लड़ाई होती है ॥ ७८ ॥

सूर्यस्य दशामध्ये शुक्रदशामासादिः १४ । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

ज्वररोगः शिरोरोगो नानापीडा कलेवरे ।
क्वापि बन्धुजनैः क्लेशः सूर्यस्यान्तर्गते सिते ॥ ७९ ॥

सूर्य ही की दशा में शुक्र की दशा चौदह महीने रहती है, उसमें ज्वर-रोग, शिरोरोग और देह में अनेक प्रकार की पीड़ा तथा कहीं पर भाइयों से भी क्लेश होता है ॥ ७९ ॥

इन्दुदशाफल ।

चन्द्रमहादशावर्षाणि १५ । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

गजाश्वरत्नानि महाप्रतापो
मिष्टान्नपानं विविधं सुखं च ।
अरोगिता सर्वजनानुरागो
भवेद्दशायां शशिनो नरस्य ॥ ८० ॥

चन्द्रमा की दशा में हाथी, घोड़े, रत्न, महाप्रताप, मिष्टान्नपान और अनेक प्रकार के सुख, आरोग्यता और सर्वजनों में प्रेम होता है ॥८०॥

चन्द्रदशामध्ये सोमदशामासादिः २५ । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

शोभनस्त्रीसमायोगो वस्त्राभरणसम्पदः ।
शुभकन्यासमुत्पत्तिश्चन्द्रे चन्द्रान्तरे गते ॥ ८१ ॥

चन्द्रमा की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर दशा पचीस महीने रहती है, उसमें सुन्दर स्त्री से संयोग, वस्त्र, गहने और सम्पदा तथा सुन्दर कन्या की उत्पत्ति हो ॥ ८१ ॥

चन्द्रदशामध्ये भौमदशामासादिः १३ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

असृक्पित्तरुजापीडावह्निचौराद्युपद्रवाः ।
कलहः स्त्रीजनैः सार्द्धं चन्द्रस्यान्तर्गते कुजे ॥ ८२ ॥

चन्द्रमा की दशा में मंगल की दशा तेरह महीने और दश दिन होती है, उसमें रक्त और पित्त-रोग से पीड़ा, चोरादिकों से बहुत उपद्रव और स्त्रियों से लड़ाई हो ॥ ८२ ॥

चन्द्रदशामध्ये बुधदशामासादिः १८ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

सुखं सर्वत्रलाभश्च गजवाजिधनादिकम् ।
गोमहिष्यादिकं यच्च चन्द्रस्यान्तर्गते बुधे ॥ ८३ ॥

चन्द्रमा की दशा के अन्तर्गत बुध की दशा अठारह महीने और दश दिन रहती है, उसमें सुख, सबसे लाभ, हाथी, घोड़े, धनादिक और गौ तथा भैंस इत्यादिकों की प्राप्ति होती है ॥ ८३ ॥

चन्द्रदशामध्ये शनिदशामासादिः १३ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

उद्वेगो वित्तनाशश्च शोकः शत्रूदयाद्भयम् ।
कलहो बन्धुवर्गेण चन्द्रस्यान्तर्गते शनौ ॥ ८४ ॥

चन्द्रमा की महादशा में शनैश्चर की दशा तेरह महीने और दश दिन होती है । उसमें उद्वेग, द्रव्य का नाश, शोक, शत्रु का उदय, भय और भाइयों से लड़ाई हो ॥ ८४ ॥

चन्द्रदशामध्ये गुरुदशामासादिः २१ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

धनधर्मादिसम्पत्तिर्वस्त्रालङ्कारभूषणम् ।
सर्वत्र लभते लाभं चन्द्रस्यान्तर्गते गुरौ ॥ ८५ ॥

चन्द्रमा की दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की दशा इक्कीस महीने और दश दिन रहती है । उसमें धन और धर्मादिक तथा सम्पत्ति, वस्त्र, अलंकार, भूषण और सर्वत्र से लाभ हो ॥ ८५ ॥

चन्द्रदशामध्ये राहुदशामासादिः २० । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

रिपुरोगाग्निभीतिश्च बन्धुनाशो धनक्षयः ।
चन्द्रस्यान्तर्गते राहौ भवेदुद्वेगचित्तता ॥ ८६ ॥

चन्द्रमा की महादशा में राहु की दशा बीस महीने रहती है । उसमें शत्रु, रोग और अग्नि से भय, भाइयों का नाश, धन का क्षय और उद्वेगचित्तता हो ॥ ८६ ॥

चन्द्रदशामध्ये भृगुदशामासादिः ३५ । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

उत्तमस्त्रीजनैर्योगो दिव्यकन्यासमुद्भवः ।
धर्मयुक्ता धनप्राप्तिश्चन्द्रस्यान्तर्गते सिते ॥ ८७ ॥

चन्द्रमा की दशा के अन्तर्गत शुक्र की दशा पैंतीस महीने होती है । उसमें उत्तम स्त्रियों से संयोग, सुन्दर कन्या की उत्पत्ति और धर्म-युक्त धन की प्राप्ति होती है ॥ ८७ ॥

चन्द्रदशामध्ये रविदशामासादिः १० । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

लाभो राजकुलेभ्यश्च व्याधिनाशो रिपुक्षयः ।
जायते सुखमैश्वर्यं चन्द्रस्यान्तर्गते रवौ ॥ ८८ ॥

चन्द्रमा की दशा के अन्तर्गत सूर्य की दशा दश महीने होती है । उसमें राजकुलों से लाभ, व्याधि-नाश, शत्रु का क्षय और सुख तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है ॥ ८८ ॥

भौममहादशावर्षाणि ।

तस्य फलम् ।

शस्त्राभिघातो नृपतेश्च पीडा
चौराग्निरोगाश्च धनस्य हानिः ।
कार्याभिघातश्च जनेषु दैन्यं
भवेद्दशायां धरणीसुतस्य ॥ ८९ ॥

मंगल की दशा में शस्त्र से अभिघात, राजा से पीड़ा, चोर, अग्नि तथा रोगों से पीड़ा, धन की हानि, कार्य का अभिघात और दीनता हो ॥ ८९ ॥

भौमदशामध्ये बुधस्यान्तर्दशामासादिः १५ । २६ । २० । ०

तस्य फलम् ।

शत्रुचौरनृपादिभ्यो महाभीतिः प्रजायते ।
महाज्वरकृतापीडा भौमस्यान्तर्गते बुधे ॥ ९० ॥

मंगल की दशा में बुध की अन्तर्दशा पन्द्रह महीने छब्बीस दिन और बीस घड़ी होती है, उसमें शत्रु, चोर और राजादिकों से महाभय हो और महाज्वर से पीड़ा हो ॥ ९० ॥

भौमदशामध्ये शनिदशामासादिः ८ । २६ । ४० । ०

तस्य फलम् ।

धनक्षयो महादुःखं जायतेऽत्र निरन्तरम् ।
भौमस्यान्तर्गते मन्दे नरस्य विपदः सदा ॥ ९१ ॥

मंगल की दशा में शनैश्चर की दशा आठ महीने छब्बीस दिन और चालीस घड़ी होती है, उसमें धन का नाश, सदा महादुःख और सदैव मनुष्य को विपत्ति ही बनी रहे ॥ ९१ ॥

भौमदशामध्ये गुरुदशामासादिः १६ । २६ । ४० । ०

तस्य फलम् ।

धनलाभस्तीर्थलाभो देवब्राह्मणपूजनम् ।
भौमस्यान्तर्गते जीवे नृपात्किञ्चिद्भयं भवेत् ॥ ९२ ॥

मंगल की दशा में बृहस्पति की दशा सोलह महीने छब्बीस दिन और चालीस घड़ी होती है, उसमें धन का लाभ, तीर्थ-लाभ, देवता और ब्राह्मणों की पूजा करनेवाला तथा राजा से कुछ भय भी हो ॥९२॥

भौमदशामध्ये राहुदशामासादिः १० । २० । ० । ०

तस्य फलम् ।

शत्रुचौराग्निभीतिश्च कृषिस्त्रीधनपीडनम् ।
भौमस्यान्तर्गते राहौ यत्र तत्र भयं वदेत् ॥ ९३ ॥

मंगल की दशा में राहु की दशा दश महीने और बीस दिन होती है, उसमें शत्रु, चोर और अग्नि से भय हो । खेती, स्त्री और धन से पीड़ा तथा और भी जहाँ कहीं से पीड़ा हो ॥ ९३ ॥

शुक्रस्य मासादिः १८ । २० । ० । ०

तस्य फलम् ।

व्याधयः शत्रुभीतिश्च धनक्षय उपद्रवः ।
विदेशगमनं नृणां भौमस्यान्तर्गते सिते ॥ ९४ ॥

मंगल की दशा में शुक्र की दशा अठारह महीने और बीस दिन रहती है, उसमें व्याधि, शत्रुओं से डर, धन का नाश, उपद्रव और मनुष्यों का परदेश में गमन, ये फल होते हैं ॥ ९४ ॥

रवेर्दशामासादिः ५ । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

आरोग्यं सर्वतो भद्रं राजपक्षे जयोत्सवः ।
जायतेऽत्र धनप्राप्तिर्भौमस्यान्तर्गते रवौ ॥ ९५ ॥

मंगल की दशा में सूर्य की दशा पाँच महीने रहती है, उसमें आरोग्य, सब जगह से कुशल, राज-पक्ष में जय, उत्सव और धन की प्राप्ति हो ॥ ९५ ॥

चन्द्रदशामासादिः १३ । २० । ० । ०

तस्य फलम् ।

नानावृत्तिसमुत्पन्नो मणिमुक्तासुखान्वितः ।
जायते मनुजो नित्यं चन्द्रे भौमान्तरे गते ॥ ९६ ॥

मंगल की दशा में चन्द्रमा की दशा तेरह महीने और बीस दिन रहती है, उसमें अनेक प्रकार की जीविकाओं से उत्पन्न मणि, मोती और सुख से युक्त मनुष्य हो ॥ ९६ ॥

बुधदशाफल ।

नानाविधैरर्थशतैः समेतो
दिव्याङ्गनाकेलियुतो विलासी ।
सर्वार्थसिद्धिर्बहुमानितोऽत्र
भवेद्दशायां मनुजो बुधस्य ॥ ९७ ॥

बुध की दशा में अनेक प्रकार की सैकड़ों द्रव्यों से युक्त, सुंदर स्त्री से केलि करनेवाला और विलासी तथा सब अर्थ की सिद्धिवाला और बहुत पूज्य होता है ॥ ९७ ॥

बुधदशामध्ये बुधस्यान्तर्दशामासादिः ३२ । ३ । २० । ०

तस्य फलम् ।

बुद्धिर्धर्मानुरागश्च मित्रबन्धुसमागमः ।
शत्रूद्गमो देहपीडा बुधस्यान्तर्गते बुधे ॥ ९८ ॥

बुध की दशा में बुध ही की अन्तर्दशा बत्तीस महीने तीन दिन और बीस घड़ी होती है, उसमें बुद्धिमान्, धर्म में प्रेम करनेवाला, मित्र और बंधुओं से संगम, शत्रूद्गम (शत्रु का उठना) और देह में पीड़ा हो ॥ ९८ ॥

शनेर्मासादिः १८ । २६ । ४० । ०

तस्य फलम् ।

अकस्माच्छत्रुसंयोगो ह्यकस्मादर्थसंग्रहः ।
सम्पर्कोऽग्निगरादीनां बुधस्यान्तर्गते शनौ ॥ ९९ ॥

बुध की दशा में शनैश्चर की दशा अठारह महीने छब्बीस दिन और चालीस घड़ी होती है, उसमें अकस्मात् शत्रुओं से संयोग और अकस्मात् ही द्रव्य का संग्रह और अग्निविषादिकों का संपर्क हो ॥९९॥

गुरोर्मासादिः ३५ । २६ । ४० । ०

तस्य फलम्।

स्वर्णादिधातुलाभश्च शरीरारोग्यमेव च ।
सम्पत्तिर्धर्मलाभश्च बुधस्यान्तर्गते गुरौ ॥ १०० ॥

बुध की दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की दशा पैंतीस महीने छब्बीस दिन और चालीस घड़ी होती है, उसमें सुवर्णादि धातुओं का लाभ, शरीर में आरोग्य, सम्पत्ति और धर्म का लाभ हो ॥१००॥

राहोर्मासादिः २२ । २० । ० । ०

तस्य फलम् ।

प्रचण्डसाहसत्वं च नानाकार्यरणोद्यमः ।
बुधस्यान्तर्गते राहौ धनधर्मादिभोगयुक् ॥ १ ॥

बुध की दशा में राहु की अन्तर्दशा बाईस महीने और बीस दिन होती है, उसमें प्रचंड, साहसी, अनेक प्रकार के कार्य और लड़ाई में उद्यम करनेवाला और धनधर्मादि भोगों से युक्त हो ॥ १ ॥

शुक्रस्य मासादिः ३९ । २० । ० । ०

तस्य फलम्।

गुरुदेवार्चने प्रीतिर्ज्ञानधर्मरतिस्तथा
वस्त्रालङ्करणैर्युक्तो बुधस्यान्तर्गते सिते ॥ २ ॥

बुध की दशा के अन्तर्गत शुक्र की दशा उन्तालीस महीने और बीस दिन होती है, उसमें गुरु और देवता के पूजन में प्रसन्न, ज्ञानी, धर्म में रतिवाला और वस्त्र आभूषणों से युक्त हो ॥ २ ॥

रवेर्मासादिः ११ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

व्याधिशत्रुभयैर्मुक्तः पुत्रधर्मधनागमः ।
जायते राजमान्यश्च बुधस्यान्तर्गते रवौ ॥ ३ ॥

शुक्र की दशा में सूर्य की दशा ग्यारह महीने, और दश दिन होती है, उसमें व्याधि, शत्रु और भयों से मुक्त, पुत्र, धर्म और धन का आगम और राजाओं में पूज्य हो ॥ ३ ॥

क्षयरोगोऽत्र कुष्ठं च नानापीडाकलेवरे ।
बुधस्यान्तर्गते सोमे गलरोगश्च जायते ॥ ४ ॥

बुध की दशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की दशा में क्षयीरोग, कुष्ठ और नाना प्रकार की देह में पीड़ा और गल-रोग हो ॥ ४ ॥

भौमस्य मासादिः १५ । ३ । २० । ०

तस्य फलम् ।

शिरोरोगी गण्डरोगी नानाक्लेशैर्निपीडितः ।
यमभीतिश्चौरभीतिर्बुधस्यान्तर्गते कुजे ॥ ५ ॥

बुध की दशा के अन्तर्गत मंगल की दशा पन्द्रह महीने तीन दिन और बीस घड़ी होती है, उसमें शिर का रोगी, गंडरोगी और नाना प्रकार के क्लेशों से पीड़ित तथा यमराज और चोरों से डरनेवाला हो ॥ ५ ॥

शनिदशाफल ।

मिथ्यापवादो विमुखोऽत्र बन्धो-
र्वधश्च बन्धोश्च निराशता च ।
कार्याणि शून्यानि धनस्य हानिः
क्लेशा भवन्त्येव शनेर्दशायाम् ॥ ६ ॥

शनैश्चर की दशा में झूँठा कलंक लगे तथा विमुख हो, एवं बंधुओं का नाश, बंधुओं से निराशता, कार्य-शून्य, धन की हानि और क्लेश हो ॥ ६ ॥

शनेर्दशामध्ये शनेर्दशामासादिः ११ । ३ । ० । ०

तस्य फलम् ।

शरीरे जायते पीडा पुत्रदारैश्च विग्रहः ।
विदेशगमनं हानिः शनेरन्तर्गते शनौ ॥ ७ ॥

शनैश्चर की दशा के अन्तर्गत शनैश्चर की दशा ग्यारह महीने तीन दिन रहती है, उसमें शरीर में पीड़ा, पुत्र और स्त्री आदिकों से लड़ाई, परदेश में गमन और हानि हो ॥ ७ ॥

गुरोर्मासादिः ११ । ६ । ० । ०

तस्य फलम् ।

देवगोब्राह्मणाचार्यपुत्रमित्रधनागमः ।
प्राप्नोति च गुरुस्थानं शनेरन्तर्गते गुरौ ॥ ८ ॥

शनैश्चर की दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की दशा ग्यारह महीने और छः दिन होती है, उसमें देवता, गौ, ब्राह्मण, आचार्य, पुत्र, मित्र और धन का आगम हो ॥ ८ ॥

राहोर्मासादिः १३ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

ज्वरातीसारपीडा च शत्रुभीतिर्धनक्षयः ।
शनेरन्तर्गते राहौ शस्त्रघातश्च जायते ॥ ६ ॥

शनैश्चर की दशा में राहु की अन्तर्दशा तेरह महीने और दश दिन होती है, उसमें ज्वर और अतीसार से पीड़ा, शत्रुओं से भय, धन का नाश और शस्त्रों से घात हो ॥ ९ ॥

शुक्रस्य मासादिः २३ । २० । ० । ०

तस्य फलम् ।

जायाधनसुतैर्युक्तो जायतेऽत्र जयान्वितः ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं शनेरन्तर्गते सिते ॥ १० ॥

शनैश्चर की दशा के अन्तर्गत शुक्र की दशा तेईस महीने और बीस दिन होती है, उसमें स्त्री, धन और पुत्रों से युक्त तथा जय से युक्त, आयु, आरोग्य और ऐश्वर्य-सहित भी हो ॥ १० ॥

रवेर्मासादिः ५ । २० । ० । ०

तस्य फलम् ।

पुत्रमित्रकलत्राणां हानिश्चार्थस्य जायते ।
शनेरन्तर्गते भानौ जीवितस्यापि संशयः ॥ ११ ॥

शनैश्चर की दशा के अन्तर्गत सूर्य की दशा छः महीने और बीस दिन होती है, उसमें पुत्र, मित्र, स्त्री और द्रव्य की हानि तथा जीने में भी संदेह हो ॥ ११ ॥

चन्द्रस्य मासादिः १६ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

गोमहिष्यादिलाभः स[illegible]ः स्त्रीलाभो विजयः सुखम् ।
जायते कन्यकापत्यं श[illegible]न्तर्गते विधौ ॥ १२ ॥

शनैश्चर की दशा में चन्द्र[illegible]की दशा सोलह महीने और दश दिन होती है, उसमें गौ, भैंसी आ[illegible] और स्त्री का लाभ, विजय, सुख और कन्या तथा पुत्र की भी [illegible]त्ति हो ॥ १२ ॥

भौमस्य मासादिः ८ । २[illegible] । ० । ०

त[illegible] फलम् ।

देशत्यागो धनत्यागः [illegible]व्याधिसमागमः ।
शनेरन्तर्गते भौमे जा[illegible]ऽत्र महाभयम् ॥ १३ ॥

शनैश्चर की दशा के अन्तर्गत मंगल की दशा आठ महीने और छब्बीस दिन होती है, उसमें देश-त्याग, धन-त्याग, शत्रु, व्याधि का आगम और महाभय हो ॥ १३ ॥

शनेर्दशायां मध्ये बुधान्तर्दशामासादिः १८ । २६ । ० । ०

तस्य फलम्।

धनप्राप्तिश्च बन्धुभ्यः सौभाग्यं विजयं सुखम्।
सभायां मान्यता वैद्याच्छनेरन्तर्गते बुधे ॥ १४ ॥

शनैश्चर की दशा में बुध की अन्तर्दशा अठारह महीने और छब्बीस दिन होती है, उसमें भाइयों से धन की प्राप्ति, सौभाग्य, विजय, सुख और सभा में वैद्य से मान हो ॥ १४ ॥

बृहस्पतिदशाफल।

धर्मार्थकामैः परिपूरितोऽत्र
राजप्रतापैर्विनयैः समेतः।
धनी जयी दारसुतादियुक्तो
गुरोर्दशायां च नरो निरोगी ॥ १५ ॥

शनैश्चर की दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की दशा में धर्म अर्थ और काम से परिपूरित, राज्य, प्रताप और नम्रता से युक्त, धनवान्, जयी, स्त्री और पुत्रादिकों से युक्त और नीरोगी हो ॥ १५ ॥

गुरोर्दशामध्ये गुरोरन्तर्दशामासादिः ४ । ६ । १० । ०

तस्य फलम्।

पुत्रोत्पत्तिर्धनोत्पत्तिः सर्वरत्नपरिग्रहः।
जायते रत्नलाभश्च गुरोरन्तर्गते गुरौ ॥ १६ ॥

बृहस्पति की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चार महीने छः दिन और दश घड़ी होती है, उसमें पुत्र और धन की उत्पत्ति, संपूर्ण रत्नों का परिग्रह और रत्नों का लाभ हो ॥ १६ ॥

राहोर्दशामासादिः २५ । ७ । ० । ०

तस्य फलम् ।

विस्फोटकादिमोहश्च शोको रोगो धनक्षयः ।
गुरोरन्तर्गते राहौ रिपूणां च भयं भवेत् ॥ १७ ॥

बृहस्पति की दशा के अंतर्गत राहु की दशा पचीस महीने और सात दिन होती है, उसमें विस्फोटकादि, मोह, शोक, रोग, धन का क्षय और शत्रुओं से भय हो ॥ १७ ॥

शुक्रस्य मासादिः ४४ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

कलहो मानसी पीडा वित्तनाशो महाभयम् ।
जायते स्त्रीवियोगश्च गुरोरन्तर्गते सिते ॥ १८ ॥

बृहस्पति की दशा के अन्तर्गत शुक्र की दशा चवालीस महीने और दश दिन होती है, उसमें लड़ाई, मानसी पीड़ा, द्रव्य-नाश, महाभय और स्त्री से वियोग हो ॥ १८ ॥

रवेर्दशामासादिः १२ । २० । ० । ०

तस्य फलम् ।

शत्रुनाशो जयो नित्यं नृपपूजा महत्सुखम् ।
प्रचण्डैः सह सङ्गश्च गुरोरन्तर्गते रवौ ॥ १९ ॥

बृहस्पति की दशा के अन्तर्गत सूर्य की दशा बारह महीने और बीस दिन होती है, उसमें शत्रुओं का नाश, नित्य ही जीत, राजाओं में पूजा, महासुख और प्रचंड मनुष्यों का संग हो ॥ १९ ॥

चन्द्रस्य मासादिः २१ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

बहुस्त्री सङ्गमक्षीणः शत्रुपीडाविवर्जितः ।
गुरोरन्तर्गते चन्द्रे कन्याजन्म च जायते ॥ २० ॥

बृहस्पति की दशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की दशा इकतीस महीने और दश दिन होती है, उसमें बहुत स्त्रियों के संगम से क्षीण, शत्रुओं की पीड़ा से रहित और कन्या का जन्म हो ॥ २० ॥

भौमस्य मासादिः २६ । १६ । ० । ०

तस्य फलम् ।

रिपुनाशो धनप्राप्तिः सर्वकार्यसमागमः ।
सुखं सौभाग्यमारोग्यं गुरोरन्तर्गते कुजे ॥ २१ ॥

बृहस्पति की दशा के अन्तर्गत मंगल की दशा छब्बीस महीने और सोलह दिन होती है, उसमें शत्रुओं का नाश, धन की प्राप्ति, संपूर्ण कार्यों का आगम, सुख, सौभाग्य और आरोग्य हो ॥ २१ ॥

गुर्वन्तर्गत बुधदशाफल ।

बुद्धिविज्ञानकौशल्यं धनबन्धुसमागमः ।
गुरुदेवाग्निभक्तिश्च गुरोरन्तर्गते बुधे ॥ २२ ॥

बृहस्पति की दशा के अन्तर्गत बुध की दशा में बुद्धि और ज्ञान में निपुण, धन और भाइयों का समागम, गुरु, देवता और अग्नि में भक्ति हो ॥ २२ ॥

शनेमासादिः २१ । ३ । २० । ०

तस्य फलम् ।

वेश्यास्त्रीद्यूतमद्यैश्च धन ान्यादिसंक्षयः ।
जायते लुप्तधर्मोऽत्र गुरो न्तर्गते शनौ ॥ २३ ॥

बृहस्पति की दशा के अन्तर्गत शनैश्चर की दशा इक्कीस महीने तीन दिन और बीस घड़ी होती है, उसमें वेश्या, स्त्री, द्यूत और मद्यों से धन और धान्यों का नाश औ लुप्त-धर्म हो ॥ २३ ॥

राहुदशाफल ।

ज्ञानस्य हानिर्गमनं विदेशे
धर्मस्य हानिर्विविधाश्च रोगाः ।
सर्वत्र शून्यं तनुसंक्षयश्च
राहोर्दशायां नियतं नरस्य ॥ २४ ॥

राहु की दशा में ज्ञान की हानि तथा धर्म की भी हानि और अनेक प्रकार के रोग तथा सबसे शून्य और देह के रहने में भी संदेह हो ॥ २४ ॥

राहोर्दशामध्ये राहुदशामासादिः १६ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

द्विजेन्द्रैः सह संसर्गः स्त्रीलाभो धनसञ्चयः ।
राहोरन्तर्गते राहौ कलहो बन्धुभिः सह ॥ २५ ॥

राहु की दशा के अन्तर्गत राहु की दशा सोलह महीने और दश दिन होती है, उसमें ब्राह्मणों से संसर्ग, स्त्री-लाभ, धन-संचय और भाइयों से लड़ाई हो ॥ २५ ॥

राहोर्दशामध्ये भृगोर्मासादिः २८ । २७ । ० । ०

तस्य फलम् ।

धर्मिष्ठः सत्यवादी च धनी रोगविवर्जितः ।
जायते राजमान्यश्च राहोरन्तर्गते सिते ॥ २६ ॥

राहु की दशा के अन्तर्गत शुक्र की दशा अट्ठाईस महीने और सत्ताईस दिन होती है, उसमें धर्मिष्ठ, सत्यवादी, धनी, रोग-रहित और राजाओं में पूज्य हो ॥ २६ ॥

रवेर्मासादिः ८ । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

पुत्रदुःखं महाभीतिर्धननाशो विचिन्तना ।
अग्निचौरभयं क्वापि राहोरन्तर्गते रवौ ॥ २७ ॥

राहु के अन्तर्गत सूर्य की दशा आठ महीने होती है, उसमें पुत्र का दुःख, महाभय, धन का नाश, चिन्ता और कहीं-कहीं अग्नि और चोरों का भी डर हो ॥ २७ ॥

सोमस्य मासादिः २० । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

स्त्रीनाशो धननाशश्च कलहो बान्धवैः सह ।
राहोरन्तर्गते चन्द्रे जायते च महाभयम् ॥ २८ ॥

राहु के अन्तर्गत चन्द्रमा की दशा बीस महीने और दश दिन होती है, उसमें स्त्री का नाश, धन का नाश, भाइयों से लड़ाई और महाभय हो ॥ २८ ॥

भौमस्य मासादिः ३ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

विषशस्त्राग्निचौरेभ्यो भयं प्राप्नोति दारुणम् ।
राहोरन्तर्गते भौमे जीवितस्यापि संशयः ॥ २६ ॥

राहु के अन्तर्गत मंगल की दशा तीन महीने और दश दिन होती है, उसमें विष, शस्त्र, अग्नि और चोरों से दारुण भय हो और जीने में भी संदेह हो ॥ २६ ॥

बुधस्य मासादिः १२ । १२ । ० । ०

तस्य फलम् ।

सुहृद्बन्धुजनैर्योगो धनधान्यसमागमः ।
न कश्चिज्जायते क्लेशो राहोरन्तर्गते बुधे ॥ ३० ॥

राहु के अन्तर्गत बुध की दशा बारह महीने और दश दिन होती है, उसमें मित्र और भाइयों से संयोग, धन और धान्य का समागम और कोई भी क्लेश न हो ॥ ३० ॥

शनेर्मासादिः २३ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

स्वदेशस्य परित्यागः कुटुम्बैःसह सङ्गमः ।
भृत्यार्थयोस्तथा नाशो राहोरन्तर्गते शनौ ॥ ३१ ॥

राहु के अन्तर्गत शनैश्चर की दशा तेईस महीने और दश दिन होती है, उसमें अपने देश का परित्याग और कुटुम्बवालों के संग संगम तथा नौकर और द्रव्य का नाश हो ॥ ३१ ॥

गुरोर्मासादिः १५ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

रोगहानिः सुखं नित्यं देवब्राह्मणपूजनम् ।
धनधान्यसमृद्धिश्च राहोरन्तर्गते गुरौ ॥ ३२ ॥

राहु के अन्तर्गत बृहस्पति की दशा पन्द्रह महीने और दश दिन होती है, उसमें रोग की हानि, नित्य सुख, देवता और ब्राह्मणों की पूजा करनेवाला और धन-धान्य की समृद्धिवाला हो ॥ ३२ ॥

शुक्रदशाफल ।

नृपेन्द्रमान्यो धनलाभपूर्णो
हस्त्यश्वयुक्तः प्रमदानुरक्तः ।
मन्त्रप्रयोगे निपुणश्च शास्त्रे
कवेर्दशायां कुशली मनुष्यः ॥ ३३ ॥

शुक्र की दशा में राजाओं में मान, धन के लाभ से पूर्ण, हाथी और घोड़ों से युक्त और स्त्री में अनुरक्त, मन्त्र के प्रयोग और शास्त्र में निपुण तथा कुशली मनुष्य हो ॥ ३३ ॥

भृगोर्दशामध्ये शुक्रस्यान्तर्दशामासादिः ४६ । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

मानवृद्धिः सुतोत्पत्तिर्धनधान्यागमं सुखम् ।
स्वर्णाम्बरादिलाभश्च सितस्यान्तर्गते सिते ॥ ३४ ॥

शुक्र की दशा के मध्य में शुक्र की अन्तर्दशा उनचास महीने होती है, उसमें मान की वृद्धि, पुत्र की उत्पत्ति, धन और धान्य का आगम, सुख, सुवर्ण और वस्त्रादिकों की प्राप्ति हो ॥ ३४ ॥

रवेर्मासादिः १६ । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

शत्रुनाशो जयो नित्यं नृपाल्लाभो महासुखम् ।
प्रचण्डैः सह संसर्गः शुक्रस्यान्तर्गते रवौ ॥ ३५ ॥

शुक्र की दशा के अन्तर्गत सूर्य की दशा उन्नीस महीने होती है, उसमें शत्रुओं का नाश, नित्य ही जय, राजा से लाभ, महासुख और प्रचंड मनुष्यों के साथ संसर्ग हो ॥ ३५ ॥

शुक्रस्य दशामध्ये सोमान्तर्दशामासादिः ३५ । ० । ० । ० ।

तस्य फलम् ।

गुरुदेवाग्निभक्तिश्च दुःखं मध्यं सुखं तथा ।
शुक्रस्यान्तर्गते चन्द्रे शत्रुमित्रसमागमः ॥ ३६ ॥

शुक्र की दशा के मध्य में चन्द्रमा की दशा पैंतीस महीने होती है, उसमें गुरु, देवता और अग्नि में भक्ति, दुःख और सुख थोड़ा, और शत्रु और मित्रों का भी समागम हो ॥ ३६ ॥

शुक्रमध्ये भौमदशामासादिः १८ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

सङ्ग्रामे च रिपुं जित्वा धनं कीर्तिश्च लभ्यते ।
आरोग्यं सुखमैश्वर्यं शुक्रस्यान्तर्गते कुजे ॥ ३७ ॥

शुक्र की दशा में मंगल की अन्तर्दशा अठारह महीने और दश दिन होती है, उसमें संग्राम में शत्रुओं को जीतकर धन और यश की प्राप्ति, आरोग्य, सुख और ऐश्वर्य की भी प्राप्ति हो ॥ ३७ ॥

बुधस्य मासादिः ३९ । २० । ० । ०

तस्य फलम् ।

नखरोगः शिरोरोगो दुःखमामाशयोद्भवम् ।
शरीरे जायते पीडा शुक्रस्यान्तर्गते बुधे ॥ ३८ ॥

शुक्र की दशा के अन्तर्गत बुध की दशा उन्तालीस महीने और बीस दिन होती है, उसमें नखों में रोग, शिर में रोग और आमाशय से उत्पन्न दुःख तथा शरीर में पीड़ा हो ॥ ३८ ॥

शनेर्मासादिः २३ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

दुष्टस्त्रीभिश्च संसर्गः सुखं चार्थसमागमः ।
शत्रुनाशः सुहृल्लाभः शुक्रस्यान्तर्गते शनौ ॥ ३९ ॥

शुक्र की दशा के अन्तर्गत शनैश्चर की दशा तेईस महीने और दश दिन होती है, उसमें दुष्टा स्त्रियों से संसर्ग, सुख और द्रव्य का समागम, शत्रुओं का नाश और मित्रों का लाभ हो ॥ ३९ ॥

गुरोर्मासादिः ४४ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

धनधान्यसमृद्धिश्च नानाधर्मसमन्वितः ।
श्रेणीप्रभुत्वमाप्नोति शुक्रस्यान्तर्गते गुरौ ॥ ४० ॥

शुक्र ही की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चवालीस महीने और दश दिन होती है, उसमें धन-धान्य की समृद्धि और नाना प्रकार के धर्मों से युक्त और श्रेणी का स्वामी हो ॥ ४० ॥

राहोर्दशामासादिः २८ । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

वैरं विषादो दुःखं च सदोद्वेगो महाभयम् ।
शुक्रस्यान्तर्गते राहौ कदाचित् सुखमाप्नुयात् ॥ ४१ ॥

अरु शुक्र ही की दशा के मध्य में राहु की दशा अट्ठाईस महीने होती है, उसमें वैर, विषाद, दुःख, सदा ही उद्वेग, महाभय और कभी सुख भी हो ॥ ४१ ॥

विंशोत्तरीदशा ।

षडादित्ये दशेन्दौ च सप्त वर्षाणि मङ्गले ।
अष्टादशसमा राहौ षोडशैव बृहस्पतौ ॥ ४२ ॥
एकोनविंशतिर्मन्दे बुधे सप्तदशैव च ।
सप्त वर्षाणि केतौ च विंशतिर्भार्गवे तथा ॥ ४३ ॥

सूर्य की महादशा ६ वर्ष, चन्द्रमा की १० वर्ष, मंगल की ७ वर्ष, राहु की १८ वर्ष, बृहस्पति की १६ वर्ष, शनि की १९ वर्ष, बुध की १७ वर्ष, केतु की ७ वर्ष और शुक्र की २० वर्ष की महादशा होती है ॥ ४२-४३ ॥

कृत्तिकामवधिं कृत्वा भरणीं चाधिगण्यते ।
कृत्तिकादित्रिरावृत्त्या सूर्यादिर्गणयेत्क्रमात् ॥ ४४ ॥

कृत्तिका से भरणी तक गिने, कृत्तिका आदि तीन आवृत्ति करके सूर्य आदि नवग्रहों को क्रम से गिने ॥ ४४ ॥

रविः शशी कुजो राहुर्जीवो मन्दो बुधः शिखी ।
शुक्रोऽग्नि भाद्युफाभादिविश्वर्क्षादिनवेश्वराः ॥ ४५ ॥

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु और शुक्र ये नवग्रह हैं, इनमें कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढा इन नक्षत्रों में जन्म हो, तो सूर्य की दशा जाननी चाहिए । इसी प्रकार अन्य ग्रहों की भी दशाएँ होती हैं ॥ ४५ ॥

सप्तवर्षीय केतु महादशा का फल ।

लक्ष्मीविनाशो वनिताविपत्तिः
शरीरपीडा नृपमानभङ्गः ।
प्रियैः कुटुम्बैश्च भवेद्वियोगः
केतोर्दशायां[1] सततं च तापः ॥ ४६ ॥

केतु की महादशा ७ वर्ष रहती है, उसमें लक्ष्मी का नाश, स्त्री में विपत्ति, शरीर में पीड़ा, राजाओं से मानभंग, प्यारे कुटुम्बवालों से वियोग और सदैव ताप हो ॥ ४६ ॥

केतु की अंतर्दशा का फल ।

तत्रादौ केतुमहादशायां केत्वन्तर्दशामासादिः ४ । २७ । ० । ०

तस्य फलम् ।

पुत्रनाशोऽर्थनाशश्च दुष्टनारीजनैः कलिः ।
केतोरन्तर्गते केतौ राजभीः शत्रुविग्रहः ॥ ४७ ॥

केतु के अन्तर्गत केतु ही की दशा ४ । २७ । ० । ० में पुत्र और द्रव्य का नाश, दुष्टा स्त्रियों से लड़ाई, राजाओं से डर और वैरियों से लड़ाई हो ॥ ४७ ॥

शुक्रान्तर्दशामासादिः १४ । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

स्त्रीत्यागोऽग्निदाहश्च कन्याजन्म तथा ज्वरः ।
केतोरन्तर्गते शुक्रे मित्रैःसह कलिर्भवेत् ॥ ४८ ॥

केतु के अन्तर्गत शुक्र की दशा १४ । ० । ० । ० में स्त्री का त्याग, अग्निदाह, कन्या का जन्म, ज्वर और मित्रों से लड़ाई हो ॥ ४८ ॥

१—विंशोत्तरी दशा में भी सब ग्रहों की महादशा तथा अन्तर्दशा का फल अष्टोत्तरी दशा के समान जानना । इसमें केवल केतु की दशा अधिक है अतएव उसके फल लिखते हैं

रव्यन्तर्दशामासादिः ४ । ६ । ० । ०

तस्य फलम् ।

अग्निदाहो ज्वरो रोषो विदेशगमनं तथा ।
केतोरन्तर्गते सूर्ये क्षयरोगश्च जायते ॥ ४९ ॥

केतु के अन्तर्गत सूर्य की दशा ४ । ६ । ० । ० रहती है, उसमें अग्निदाह, ज्वर, रोष, परदेश में गमन और क्षय रोग हो ॥ ४९ ॥

चन्द्रान्तर्दशामासादिः ७ । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

अर्थलाभोऽर्थ हानिश्च सुखं दुःखं क्वचित्क्वचित् ।
केतोरन्तर्गते चन्द्रे स्त्रीलाभश्चापि जायते ॥ ५० ॥

केतु के अन्तर्गत चन्द्रमा की दशा ७ । ० । ० । ० रहती है, उसमें द्रव्य का लाभ, कभी द्रव्य की हानि, कहीं सुख और कहीं दुःख और स्त्री का लाभ हो ॥ ५० ॥

मंगलान्तर्दशामासादिः ४ । २७ । ० । ०

तस्य फलम् ।

गोत्रजैः सह संवादो वह्निचौरभयं तथा ।
शरीरे जायते पीडा केतोरन्तर्गते कुजे ॥ ५१ ॥

केतु के अन्तर्गत मंगल की दशा ४ । २७ । ० । ० रहती है, उसमें भाइयों के साथ संवाद, अग्नि और चोरों से भय और शरीर में पीड़ा हो ॥ ५१ ॥

राह्वन्तर्दशामासादिः १२ । १८ । ० । ०

तस्य फलम् ।

चौरभीतिर्देहभङ्गः कुमित्रैः सह सङ्गतिः ।
केतोरन्तर्गते राहौ कलहः शत्रुभिः सह ॥ ५२ ॥

केतु के अन्तर्गत राहु की दशा १२ । १८ । ० । ० रहती है, उसमें चोरों से भय, देहभंग, कुमित्रों से संगति और शत्रुओं से कलह हो ॥ ५२ ॥

गुर्वन्तर्दशामासादिः ११ । ६ । ० । ० ।

तस्य फलम् ।

राजमान्यैर्जनैर्योगो द्विजेन्द्रैश्च धनागमः ।
भूमिलाभः पुत्रलाभः केतोरन्तर्गते गुरौ ॥ ५३ ॥

केतु के अन्तर्गत बृहस्पति की दशा ११ । ६ । ० । ० रहती है, उसमें राजाओं से मान्य, जनों के साथ संयोग, ब्राह्मणों से धन का आगम, भूमि का लाभ और पुत्र का भी लाभ हो ॥ ५३ ॥

शन्यन्तर्दशामासादिः १३ । ९ । ० । ०

तस्य फलम् ।

वातपित्तकृता पीडा स्वजनैः सह विग्रहः ।
विदेशगमनं चापि केतोरन्तर्गते शनौ ॥ ५४ ॥

केतु के अन्तर्गत शनैश्चर की दशा १३ । ९ । ० । ० रहती है, उसमें वात-पित्त से पीड़ा, भाइयों से लड़ाई और परदेश में गमन हो ॥ ५४ ॥

बुधान्तर्दशामासादिः ११ । २७ । ० । ० ।

तस्य फलम् ।

सुहृद्बन्धुसमायोगो भूनिमित्तं च विग्रहः ।
देहपीडा भवेन्नित्यं केतोरन्तर्गते बुधे ॥ ५५ ॥

केतु ही के अन्तर्गत बुध की दशा ११ । २७ । ० । ० रहती है, उसमें मित्र और भाइयों से संयोग, पृथ्वी के लिये लड़ाई और नित्य ही देह में पीड़ा हो ॥ ५५ ॥

रव्यादिग्रह का महादशा में केत्वन्तर्दशा-फल ।

तत्रादौ रविमहादशायां केत्वन्तर्दशामासादिः ४ । ६ । ० । ०

तस्य फलम् ।

देशत्यागो बन्धुनाशो धननाशः सुतक्षयः ।
सूर्यस्यान्तर्गते केतौ दुःखमेव हि प्राप्यते ॥ ५६ ॥

सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा ४ । ६ । ० । ० की होती है, उसमें देश-त्याग, भाइयों का नाश, धन और पुत्रों का भी क्षय और दुःख-ही-दुःख प्राप्त हो ॥ ५६ ॥

चन्द्रमहादशायां केत्वन्तर्दशामासादिः ७ । ० । ० । ०

तस्य फलम् ।

चलचित्तोऽर्थनाशश्च रोगो बन्धुधनक्षयः ।
चन्द्रस्यान्तर्गते केतौ सर्वत्रैवाशुभं भवेत् ॥ ५७ ॥

चन्द्रमा के अन्तर्गत केतु की दशा ७ । ० । ० । ० की होती है, उसमें चलचित्त, द्रव्य का नाश, रोग, बंधुजनों का क्षय और सब जगह अशुभ ही हो ॥ ५७ ॥

भौममहादशायां केत्वन्तर्दशामासादिः ४ । २७ । ० । ०

तस्य फलम् ।

विषशस्त्राग्निचौरेभ्यो जायतेऽत्र महाभयम् ।
भौमस्यान्तर्गते केतौ क्लेशभागी सदा नरः ॥ ५८ ॥

मंगल के अन्तर्गत केतु की दशा ४ । २७ । ० । ० की होती है, उसमें विष, शस्त्र, अग्नि और चोरों से महाभय हो और सदा ही क्लेशभागी मनुष्य हो ॥ ५८ ॥

राहुदशामध्ये केत्वन्तर्दशामासादिः १२ । १० । ० । ०

तस्य फलम् ।

ज्वराग्निरिपुशस्त्रेभ्यो मृत्युरायाति सर्वदा ।
राहोरन्तर्गते केतौ शुभं क्वापि न लभ्यते ॥ ५९ ॥

राहु की दशा के अन्तर्गत केतु की दशा १२ । १८ । ० । ० की होती है, उसमें ज्वर, अग्नि, वैरी और हथियारों से सदा ही मृत्यु हो और शुभ कहीं भी न मिले ॥ ५९ ॥

गुरुमहादशायां केत्वन्तर्दशामासादिः ११ । ६ । ० । ०

तस्य फलम् ।

पुत्रबन्धुकृतोद्वेगो निजस्थानविवर्जितः ।
गुरोरन्तर्गते केतौ परिभ्रमति मानवः ॥ ६० ॥

बृहस्पति की दशा के अन्तर्गत केतु की दशा ११ । ६ । ० । ० की होती है, उसमें पुत्र और भाइयों से उद्वेग, अपने स्थान से रहित और वह मनुष्य घूमा ही करे ॥ ६० ॥

शनिमहादशायां केत्वन्तर्दशामासादिः १३ । ९ । ० । ०

तस्य फलम् ।

रक्तपित्तकृता पीडा कलहः स्वजनैः सह ।
शनेरन्तर्गते केतौ घोरदुःखप्रदर्शनम् ॥ ६१ ॥

शनैश्चर के अन्तर्गत केतु की दशा १३ । ९ । ० । ० की होती है, उसमें रक्त और पित्त से पीड़ा, भाइयों से लड़ाई और भयानक दुःखों का दर्शन हो ॥ ६१ ॥

बुधमहादशायां केत्वन्तर्दशामासादिः ११ । २७ । ० । ०

तस्य फलम् ।

दुःखशोकाकुलो नित्यं शरीरे क्लेशसंयुतः ।
बुधस्यान्तर्गते केतौ भवत्येव न संशयः ॥ ६२ ॥

बुध के अन्तर्गत केतु की दशा ११ । २७ । ० । ० की होती है, उसमें नित्य ही दुःख और शोकों से व्याकुल और शरीर में क्लेश निःसंदेह हो ॥ ६२ ॥

वर्षदशा ।

जन्मलग्नं[1] समारभ्य गतवर्षाणि वर्जयेत् ।
द्वादशेषु च भागेषु ग्रहैर्वाच्यं शुभाशुभम् ॥ ६३ ॥

जन्म-लग्न को आरम्भ करके बीते हुए वर्ष वर्जित कर बारह से भाग देकर ग्रहों से शुभ और अशुभ का फल कहे ॥ ६३ ॥

मासदशा ।

विंशतिर्वासराः[20] सूर्ये पञ्चाशच्च[50] निशाकरे ।
सप्तविंशतिरङ्गारे[27] सप्तपञ्चाशदिन्दुजे[57] ॥ ६४ ॥
त्रयस्त्रिंशच्च[33] मन्दे स्युस्त्रिषष्टिश्च[63] बृहस्पतौ ।
विंशतिः[20] सैंहिकेये च केतावपि च विंशतिः[20] ॥ ६५ ॥
सप्ततिर्भृगुपुत्रे[70] च ज्ञेया मासदशा बुधैः ।
नामराशिं समारभ्य संक्रमावधिगण्यते ॥ ६६ ॥

बीस दिन तक सूर्य की दशा, पचास दिन तक चन्द्रमा की दशा, सत्ताईस दिन तक मंगल की दशा, सत्तावन दिन तक बुध की दशा, तेंतीस दिन तक शनैश्चर की दशा, तिरसठ दिन तक बृहस्पति की दशा, बीस दिन तक राहु की दशा,बीस दिन तक केतु की दशा और सत्तर दिन तक शुक्र की मासदशा जाननी चाहिए। इसका क्रम यह है कि नामराशि से संक्रांति तक गिनकर पंडित लोग मासदशा का विचार करते हैं ॥ ६४-६६ ॥

दिनदशा ।

तिथिं वारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।
नवभिश्च हरेद्भागं शेषा दिनदशोच्यते ॥ ६७ ॥

१—इसके स्थान में पाठान्तर है—

जन्मलग्नं समायुक्तं गतवर्षगणैश्च तत् ।
हृतं द्वादशाभिः शेषे ग्रहैर्वाच्यं शुभाशुभम् ॥

तिथि, वार, नक्षत्र और नाम के अक्षर, इनको इकट्ठे करके नव का भाग देने से जो शेष बचे, वही दिनदशा कहलाती है यह दिन-दशा विंशोत्तरी-ग्रह-क्रम से होती है ॥ ६७ ॥

अन्यच्च ।

चैत्रादेर्द्विगुणा मासा गताभिस्तिथिभिर्युताः ।
नवभिश्च[1] हरेद्भागं शेषं दिनफलं स्मृतम् ॥ ६८ ॥

चैत्र से लगाकर बीते हुए महीनों को दूना करके बीती हुई तिथियों में जोड़कर, नव का भाग देने से शेष दिनफल होते हैं ॥६८॥

सम्पत्तिः कलहो लोकैरानन्दः कालकण्टकः ।
धर्मस्तपश्च विजयो रविवारात्क्रमात्फलम् ॥ ६९ ॥

एक बचे, तो सूर्यवार—सम्पत्ति मिले, दो बचने में चन्द्रवार—लोक में लड़ाई हो, तीन में मंगलवार—आनन्द हो, चार में बुध-वार—कालकण्टक हो, पाँच बचने में बृहस्पतिवार—धर्म हो, छः बचने में शुक्रवार—तप करे और सात बचने में शनैश्चरवार—विजय हो ॥ ६९ ॥

क्रूर-ग्रह-शुभ-ग्रह-दशा-फलविचार ।

क्रूरग्रहदशायां च क्रूरस्यान्तर्दशा यदा ।
शत्रुयोगे भवेन्मृत्युर्मित्रयोगे न संशयः ॥ ७० ॥

क्रूरग्रहों की दशा में जो क्रूरग्रह ही की अन्तर्दशा हो, तो शत्रु वा मित्रयोग में निःसंदेह मृत्यु हो ॥ ७० ॥

भौमदशा में शनि की अन्तर्दशा का फल ।

मङ्गलस्य दशायां च शनेरन्तर्दशा यदा ।
म्रियतेऽत्र चिरञ्जीवी का कथा स्वल्पजीविनाम् ॥७१॥

१—'नवभिश्च' के स्थान में 'सप्तभिश्च' पाठांतर है ।

मंगल की दशा में जो शनैश्चर की अन्तर्दशा हो, तो बहुत काल का जीनेवाला भी मरे; थोड़े जीनेवालों की तो बात ही क्या है ॥ ७१॥

क्रूरग्रहों में पापग्रहों का फल ।

क्रूरराशौ स्थितः पापः षष्ठे वा निधनेऽपि वा ।
सितेन रविणा दृष्टः स्वपाके मृत्युदो ग्रहः ॥ ७२ ॥

क्रूरग्रह की राशि पर स्थित हुआ पापग्रह छठें वा आठवें घर में स्थित हो तथा शुक्र और सूर्य करके देखा जाता हो, तो अपने पाक में (अपनी दशा में) मृत्यु का देनेवाला हो ॥ ७२ ॥

लग्नस्याधिपतेः शत्रुर्लग्नस्यान्तर्दशागमः ।
करोत्यकस्मान्मरणं सत्याचार्येण भाषितम् ॥ ७३ ॥

लग्न के स्वामी का शत्रु और लग्न की अन्तर्दशा का आगम ये दोनों अकस्मात् ही मरण को करें, यह सत्याचार्यजी का वचन है ॥ ७३ ॥

दशारिष्टभङ्ग ।

दशायां बलवान् खेटः शुभैर्वा सन्निरीक्षितः ।
सौम्याधिमित्रवर्गस्थोऽरिष्टभङ्गो भवेत्तदा ॥ ७४ ॥

दशा में बलवान् ग्रह हो अथवा शुभग्रहों करके देखा हुआ, सौम्य वा अधिमित्र के वर्ग में स्थित हो, तो उस ग्रह की दशा में अरिष्ट का भंग हो ॥ ७४ ॥

मूलं दशाधिनाथस्य विबलस्य दशा यदा ।
बली शुभोऽथ विज्ञेयोऽरिष्टभङ्गस्तदा भवेत् ॥ ७५ ॥

दशा के स्वामी का मूल जो निर्बल की दशा भी हो, तो भी बलवान् और शुभ ही अरिष्ट भंग जानिये ॥ ७५ ॥

शुभग्रहो ग्रहैर्योगे विजयी यदि जायते।
दशायां न भवेत्कष्टं स्वोच्चादिषु च संस्थितः॥ १७६॥

इति श्रीसर्वविद्याविशारदकाशिनाथकृतौ लग्न-
चन्द्रिकायां तृतीयः परिच्छेदः॥ ३॥

शुभग्रह ग्रहों के योग में जो विजयी हो और अपने उच्चादिकों की दशा में स्थित भी हो, तो उस दशा में कष्ट न हो॥ १७६॥

इति श्रीउन्नावप्रदेशान्तर्गततारगाँवनिवासिपण्डितरामविहारीसुकुलकृत-लग्नचन्द्रिकाभाषाटीकायां तृतीयः परिच्छेदः॥ ३॥

चौथा परिच्छेद ।

द्विग्रहयोग ।

सूर्यचन्द्रयोग फल ।

स्त्रीवशः क्रूरकर्मा च दुर्विनीतः क्रियादृढः ।
विक्रमी लघुचेताश्च सूर्यचन्द्रसमागमे ॥ १ ॥

चन्द्रमा और सूर्य के समागम में, स्त्री के वश, क्रूर-कर्म करनेवाला, दुर्विनीत, क्रिया में दृढ़, पराक्रमी और हलके चित्तवाला हो ॥ १ ॥

सूर्यमंगलयोग फल ।

सूर्यमङ्गलसंयोगे तेजस्वी जातमानसः ।
मिथ्यावादी च मूर्खश्च वधनिष्ठो बली नरः ॥ २ ॥

सूर्य और मंगल के संयोग में तेजस्वी, जातमानस, मिथ्यावाद करनेवाला, मूर्ख, मारने में निष्ठ (हिंसक) और बलवान् मनुष्य हो ॥ २ ॥

सूर्यबुधयोग फल ।

विद्वानार्यो राजमान्यः सेवाशीलः प्रियंवदः ।
यशस्वी चास्थिरद्रव्यो बुधसूर्यसमागमे ॥ ३ ॥

बुध और सूर्य के समागम में विद्वान् , आर्य, राजाओं में पूज्य, सेवा में शीलवाला, प्रिय बोलनेवाला, यशस्वी और अस्थिर द्रव्य वाला हो ॥ ३ ॥

सूर्यगुरुयोग फल ।

नृपमान्यो धर्मनिष्ठो मित्रवानर्थवानपि ।
उपाध्यायोऽतिविख्यातो योगे जीवार्कसङ्गमे ॥ ४ ॥

बृहस्पति और सूर्य के संगम में राजाओं में पूज्य, धर्म में निष्ठ, मित्रवान् और धनवान् बहुत प्रसिद्ध तथा पढ़ानेवाला हो ॥ ४ ॥

सूर्यशुक्रयोग फल ।

शस्त्रप्रहारो बन्धश्च रङ्गज्ञो नेत्रदुर्बलः ।
स्त्रीसङ्गलब्धद्रव्यश्च शक्तः शुक्रार्कसङ्गमे ॥ ५ ॥

शुक्र और सूर्य के संगम में, शस्त्रों का प्रहार करनेवाला, बाँधनेवाला, रंग का जाननेवाला, दुर्बल नेत्रोंवाला, स्त्री द्वारा द्रव्य का पानेवाला और समर्थ भी हो ॥ ५ ॥

सूर्यशनियोग फल ।

विद्वानात्मक्रियानिष्ठो धातुज्ञो वृद्धचेष्टितः ।
प्रनष्टसुतदारश्च शनिसूर्यसमागमे ॥ ६ ॥

शनैश्चर और सूर्य के समागम में विद्वान् , आत्म-क्रिया में निष्ठावाला, धातु का जाननेवाला, वृद्धों के समान आचरण करनेवाला और स्त्री तथा पुत्र का नाश हो ॥ ६ ॥

चन्द्रभौमयोग फल ।

मृच्चर्मधातुशिल्पी च धनी शूरो रणे भवेत् ।
चन्द्रमङ्गलसंयोगे रक्तपीडातुरो नरः ॥ ७ ॥

चन्द्रमा और मंगल के संयोग में मनुष्य रक्त की पीड़ा से व्याकुल, मिट्टी, चमड़ा और धातुओं की कारीगरी करनेवाला, धनी और संग्राम में बड़ा वीर हो ॥ ७ ॥

चन्द्रबुधयोग फल ।

स्त्रीसम्मतः सुरूपश्च काव्येऽतिनिपुणो भवेत् ।
धनी गुणी हास्यवक्त्रो बुधेन्द्वोर्धार्मिकोऽन्वये ॥ ८ ॥

चन्द्रमा और बुध के समागम में स्त्रियों से सम्मानित सुरूपवान् ,

काव्य में अति निपुण, धनवान्, गुणी, हँसमुख और वंश में धर्मवान् हो ॥ ८ ॥

चन्द्रगुरुयोगफल ।

देवद्विजार्चासक्तश्च बन्धुमानकरो धनी ।
दृढप्रीतिः सुशीलश्च जीवचन्द्रसमागमे ॥ ९ ॥

चन्द्रमा और बृहस्पति के समागम में, देवता और ब्राह्मणों की पूजा में आसक्त, भाइयों का मान करनेवाला, धनी, दृढ़ प्रीतिवाला और सुशील हो ॥ ९ ॥

चन्द्रशुक्रयोगफल ।

कुशली विक्रयादौ च वृद्धिज्ञः कलहप्रियः ।
माल्यवस्त्रादिसंयुक्तः शशिभार्गवसङ्गमे ॥ १० ॥

चन्द्रमा और शुक्र के संगम में, बेंचने-खरीदने में, चतुर, वृद्धि को जाननेवाला, लड़ाई करनेवाला और माला तथा वस्त्रादिकों से संयुक्त हो ॥ १० ॥

चन्द्रशनियोगफल ।

गजाश्वपालो दुःशीलो वृद्धस्त्रीरमणो नरः ।
वेश्याधनो विपुत्रश्च शनिचन्द्रसमागमे ॥ ११ ॥

चन्द्रमा और शनि के समागम में हाथी और घोड़े का पालनेवाला, दुश्शील, बूढ़ी स्त्री में रमण करनेवाला, वेश्या को ही धन समझनेवाला और पुत्रहीन भी हो ॥ ११ ॥

मंगलबुधयोगफल ।

भूपुत्रबुधसंयोगे निधनो विधवापतिः ।
स्त्रीदुर्भगः क्रयप्रीतिः स्वर्णलोहप्रकारकः ॥ १२ ॥

मंगल और बुध के संयोग में, दरिद्री, विधवा स्त्री का पति, कुरूप

स्त्रीवाला, बेंचने में प्रीतिवाला और सोने-लोहे का काम करनेवाला हो ॥ १२ ॥

मंगलगुरुयोगफल ।

मेधावी शिल्पशास्त्रज्ञः श्रुतिज्ञो वाग्विशारदः ।
अश्वप्रियः प्रधानश्च जीवमंगलसंगमे ॥ १३ ॥

बृहस्पति और मंगल के संयोग में बुद्धिमान्, कारीगरी का जाननेवाला, वेद को जाननेवाला, वाणी में निपुण, घोड़ा बहुत प्रिय और प्रधान हो ॥ १३ ॥

मंगलशुक्रयोगफल ।

गुणप्रधानो गणको द्यूतेऽत्यन्तरतः शठः ।
परदाररतो मान्यः शुक्रमंगलसंगमे ॥ १४ ॥

शुक्र और मंगल के संगम में गुणों में प्रधान, ज्योतिषी, जुवा में अत्यंत रत, मूर्ख, पराई स्त्री में रत और पूज्य हो ॥ १४ ॥

मंगलशनियोगफल ।

वाग्मीन्द्रजालदक्षश्च विधर्मा कलहप्रियः ।
विषमद्यप्रपञ्चाढ्यो मन्दमंगलसंगमे ॥ १५ ॥

शनैश्चर और मंगल के संगम में वाणी में निपुण, इन्द्रजाल-विद्या में निपुण, धर्म-रहित, लड़ाई को प्रिय माननेवाला, विष तथा मदिरा के प्रपंच से युक्त हो ॥ १५ ॥

बुधगुरुयोगफल ।

जीवचन्द्रजयोर्योगे नृत्यवाद्यविचक्षणः ।
धैर्ययुक्तः पण्डितश्च सुखी भवति मानवः ॥ १६ ॥

बुध और बृहस्पति के योग में नाच और बाजा में निपुण, धैर्य-युक्त, पण्डित और सुखी मनुष्य हो ॥ १६ ॥

बुधशुक्रयोगफल ।

बुधभार्गवयोर्योगे नयज्ञो बहुशिल्पवान् ।
धनी सुवाक्यो वेदज्ञो गीतज्ञो हास्यलालसः ॥ १७ ॥

बुध और शुक्र के योग में नीति का जाननेवाला, बहुत कारीगरी का जाननेवाला, धनवान् , सुंदर वाणी बोलनेवाला, वेद तथा गीत का भी जाननेवाला और हास्य का लालसावाला हो ॥ १७ ॥

बुधशनियोगफल ।

ऋणी गमनशीलश्च निरुपायो जगत्कलिः ।
शुभवाक्यः कार्यदक्षो बुधमन्दसमागमे ॥ १८ ॥

शनैश्चर और बुध के संयोग में ऋणी, गमन करनेवाला, उपाय-रहित, संसार भर से लड़ाई करनेवाला, शुभ वाणी बोलनेवाला और कार्य में निपुण हो ॥ १८ ॥

गुरुभार्गवयोगफल ।

गुरुभार्गवसंयोगे दिव्यदारो महाधनी ।
धर्मस्थितः प्रमाणज्ञो विद्याजीवी च जायते ॥ १९ ॥

बृहस्पति और शुक्र के संयोग में सुंदर स्त्रीवाला, महाधनी, धर्म में स्थितिवाला, प्रमाण को जाननेवाला और विद्या ही से जीविका करनेवाला हो ॥ १९ ॥

गुरुशनियोगफल ।

वृत्तिसिद्धिश्च शूरश्च यशस्वी नगराधिपः ।
श्रेणीसेनाग्राममुख्यो गुरुमन्दान्वये नरः ॥ २० ॥

बृहस्पति और शुक्र के समागम में वृत्ति (उपजीविका) में सिद्धि प्राप्त करनेवाला, शूर, यशस्वी, नगर का स्वामी, श्रेणी, सेना और गाँव में मुख्य हो ॥ २० ॥

शुक्रशनियोगफल ।

शुक्रस्य तु शनेर्योगे मल्लः पशुपतिर्नरः ।
दारुदारणदक्षश्च क्षाराम्लादिकशिल्पवित् ॥ २१ ॥

इति श्रीकाशिनाथकृतौ लग्नचन्द्रिकायां
द्विग्रहपरिच्छेदश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

शुक्र और शनैश्चर के योग में मल्ल, पशुओं की रक्षा करनेवाला, लकड़ी के काटने में निपुण, क्षाराम्लादिक खट्टे आदि पदार्थों की कारीगरी का जाननेवाला हो ॥ २१ ॥

इति श्रीउन्नावप्रदेशान्तर्गततारगाँवनिवासिपण्डितरामविहारीसुकुलकृत-लग्नचन्द्रिकाभाषाटीकायां चतुर्थः परिच्छेदः ॥ ४ ॥

पाँचवाँ परिच्छेद ।

त्रिग्रहयोगफल ।

त्रिग्रहयोगों में सूर्यचन्द्रबुधयोगफल ।

सूर्यचन्द्रबुधैर्योगे राजमान्यो धनान्वितः ।
चण्डो दुर्बलवित्तश्च जायते विद्यया युतः ॥ १ ॥

सूर्य, चन्द्रमा और बुध के योग में राजाओं में पूज्य, धनवान्, प्रचंड, न्यून द्रव्यवाला और विद्या-युक्त हो ॥ १ ॥

सूर्यमंगलबुधयोगफल ।

भानुभौमबुधैर्योगे ख्यातः साहसिको नरः ।
निष्ठुरो गतलज्जश्च धनस्त्रीपुत्रपीडितः ॥ २ ॥

सूर्य, मंगल और बुध के योग में प्रसिद्ध, साहसी, निष्ठुर, लज्जा से रहित, धन, श्री और पुत्रों से पीड़ित मनुष्य हो ॥ २ ॥

सूर्यमंगलगुरुयोगफल ।

सूर्यभौमेज्यसंयोगे प्रचण्डः सत्यभाषणः ।
राजमन्त्री च मुख्यश्च वाक्ये च निपुणो भवेत् ॥ ३ ॥

सूर्य, मंगल और बृहस्पति के संयोग में प्रचंड, सत्य बोलनेवाला, राजा का मन्त्री, मुख्यजन और अपने वचन में निपुण हो ॥ ३ ॥

सूर्यमंगलशुक्रयोगफल ।

सूर्यारशुक्रसंयोगे महाभक्तः प्रजायते ।
कुलीनो वत्सलो लोके विषयासक्तमानसः ॥ ४ ॥

शुक्र, मंगल और सूर्य के संयोग में भजनातुर, कुलीन, संसार में प्यारा और विषय में आसक्त मनवाला हो ॥ ४ ॥

सूर्यमंगलशनियोगफल ।

शनिसूर्यकुजैर्योगे मूर्खो गोधनवर्जितः ।
रोगार्तः स्वजनैर्हीनो विकलः कलहाकुलः ॥ ५ ॥

शनैश्चर, सूर्य और मंगल के योग में मूर्ख, गौओं से हीन, रोग से व्याकुल, भाइयों से हीन, विकल और लड़ाई से भी व्याकुल हो ॥ ५ ॥

सूर्यबुधगुरुयोगफल ।

बुधजीवार्कसंयोगे नेत्ररोगी महाधनी ।
शस्त्रशिल्पकलाभिज्ञो लिपिकर्त्ता भवेन्नरः ॥ ६ ॥

बुध, बृहस्पति और सूर्य के संयोग में नेत्रों में रोगवाला, महाधनी, शस्त्र और कारीगरी की कलाओं का जाननेवाला और लिपिकर्त्ता मनुष्य हो ॥ ६

सूर्यबुधशुक्रयोगफल ।

शुक्रसूर्यबुधैर्योगे गुरुवर्गं समावृतः ।
अभिशस्तो दिशो याति स्त्रीहेतोस्तप्तमानसः ॥ ७ ॥

शुक्र, सूर्य और बुध के योग में गुरुवर्गों के कार्यों में लगा हुआ, उत्तम, श्रेष्ठ मार्ग में चलनेवाला और स्त्री के हेतु संतप्त मनवाला हो ॥ ७

सूर्यबुधशनिफल ।

शनिसूर्यबुधैर्योगे दुराचारः पराजितः ।
बन्धुभिश्च परित्यक्तो विद्वेषी जायते नरः ॥ ८ ॥

शनैश्चर, सूर्य और बुध के योग में दुराचार, पराजय को प्राप्त, भाइयों से छोड़ा हुआ और सबसे वैर करनेवाला मनुष्य हो ॥ ८ ॥

शुक्रजीवरवियोगफल ।

शुक्रजीवार्कसंयोगे राजमन्त्री च निर्धनः ।
दुष्टचक्षुश्च शूरश्च प्राज्ञश्च परकर्मकृत् ॥ ९ ॥

शुक्र, बृहस्पति और सूर्य के संयोग में राजा का मन्त्री, धन-हीन, दुष्ट नेत्रोंवाला, शूर, बुद्धिमान् और पराये कर्म का करनेवाला हो ॥ ९॥

शनिबृहस्पतिसूर्ययोगफल ।

मन्दजीवार्कसंयोगे पुत्रमित्रकलत्रवान् ।
निर्भयो नृपनिष्ठश्च द्वेष्यो बन्धुजनस्य च ॥ १० ॥

शनैश्चर, बृहस्पति और सूर्य के योग में पुत्र, मित्र और स्त्रीवाला, निर्भय, राजाओं में निष्ठ और भाइयों का वैरी हो ॥ १० ॥

सूर्यशुक्रशनियोगफल ।

शनिशुक्रार्कसंयोगे कलामानविवर्जितः ।
कुष्ठी शत्रुजयोद्विग्नो दुराचारी नरो भवेत् ॥ ११ ॥

शनैश्चर, शुक्र और सूर्य के संयोग में कला और मान से रहित, कुष्ठी, शत्रुओं को जीतनेवाला, उद्विग्न और दुराचारी मनुष्य हो ॥११॥

चन्द्रमंगलबुधयोगफल ।

चन्द्रचान्द्रिकुजैर्योगे नीचाचारश्च पापकृत् ।
आजीविकाहतो लोके बन्धुहीनश्च जायते ॥ १२ ॥

चन्द्रमा, बुध और मंगल के योग में आचार-रहित (नीच आचार करनेवाला), पापी संसार में जीविका से हीन और भाइयों से भी हीन हो ॥ १२ ॥

चन्द्रमंगलगुरुयोगफल ।

चन्द्रभौमेज्यसंयोगे स्त्रीलोलो व्रणसंयुतः ।
कान्तश्च समतः स्त्रीणां चन्द्रतुल्यमुखो भवेत् ॥१३॥

चन्द्र, मंगल और बृहस्पति का योग हो, तो स्त्रियों में चंचल रहनेवाला, व्रण से संयुक्त, मनोहर, स्त्रियों का माना हुआ और चन्द्रमा के समान मुखवाला हो ॥ १३ ॥

चन्द्रमंगलशुक्रयोगफल ।

चन्द्रारभृगुसंयोगे दुःशीलायाः पतिः सुतः ।
सदा भ्रमणशीलश्च शीतभीतोऽपि जायते ॥ १४ ॥

चन्द्रमा, मंगल और शुक्र के योग में दुःशीला ही जिसकी माता और स्त्री हो, सदा घूमनेवाला और शीत से डरनेवाला हो ॥ १४ ॥

चन्द्रमंगलशनियोगफल ।

शनिचन्द्रकुजैर्योगे बाल्ये च मृतमातृकः ।
क्षुद्रश्च लोकविद्विष्टो विषमो जायते नरः ॥ १५ ॥

शनैश्चर, चन्द्रमा और मंगल के योग में बाल्यावस्था ही में माता मर जावे, क्षुद्र, लोक में वैर करनेवाला और विषम (कुटिल) मनुष्य हो ॥ १५ ॥

चन्द्रबुधगुरुयोगफल ।

जीवचन्द्रबुधैर्योगे तेजस्वी धनवानपि ।
पुत्रमित्रादिसंयुक्तो वाग्मी ख्यातश्च कीर्तिमान् ॥१६॥

बृहस्पति, चन्द्रमा और बुध के योग में तेजस्वी, धनवान् , पुत्र मित्रादिकों से युक्त, वाणी में निपुण, प्रसिद्ध और कीर्तिमान् मनुष्य हो ॥ १६ ॥

चन्द्रबुधशुक्रयोगफल ।

बुधेन्दुभार्गवैर्योगे विद्यया संयुतो नरः ।
सेर्ष्यो धनातिलोभी च नीचाचारश्च जायते ॥१७॥

बुध, चन्द्रमा और शुक्र के योग में विद्या करके संयुक्त, ईर्षा करके युक्त, धन का अति लोभी और नीच आचारवाला हो ॥ १७ ॥

चन्द्रबुधशनियोगफल ।

बुधेन्दुमन्दसंयोगे प्राज्ञो भूपतिपूजितः ।
अत्युच्चो विपुलाङ्गश्च वाग्मी भवति मानवः ॥ १८ ॥

बुध, चन्द्रमा और शनैश्चर के संयोग में बुद्धिमान् , राजाओं में पूजित, अति ऊँचा, दृढ़ अंगोंवाला और वाणी में निपुण मनुष्य हो ॥ १८ ॥

चन्द्रगुरुशुक्रयोगफल ।

चन्द्रेज्यशुक्रसंयोगे साध्वीपुत्रश्च पण्डितः ।
साधुः सर्वकलाभिज्ञः सुभगो जायते नरः ॥ १९ ॥

चन्द्र, गुरु और शुक्र के योग में पतिव्रता स्त्री का पुत्र, विद्वान्, शांत, सब कलाओं में प्रवीण और सुंदर ऐश्वर्यवाला हो ॥ १९ ॥

चन्द्रेज्यशनिभियोगे नीरोगः स्त्रीरतो नरः ।
शास्त्रार्थविज्ञो नीतिज्ञो ग्रामपत्तनपालकः ॥ २० ॥

चन्द्र, बृहस्पति और शनि के संयोग में नीरोग, स्त्री में रत, शास्त्रार्थ में निपुण, नीति का जाननेवाला, गाँव और पत्तनों (नगरों) का पालक अर्थात् नंबरदार हो ॥ २० ॥

चन्द्रशुक्ररवियोगफल ।

रविशुक्रेन्दुसंयोगे लिपिकर्त्ता च वेदवित् ।
पुरोहितकुलोत्पत्तिर्भवेत्पुस्तकवाचकः ॥ २१ ॥

सूर्य, शुक्र और चन्द्रमा के संयोग में लिपिकर्त्ता (लिखने का काम करनेवाला), वेद को जाननेवाला, पुरोहित के कुल में उत्पन्न और पुस्तक को बाँचनेवाला हो ॥ २१ ॥

मंगलबुधगुरुयोगफल ।

जीवभौमबुधैर्योगे सुकविर्युवतीपतिः ।
परोपकारकृत्तीक्ष्णो गान्धर्वकुशलो भवेत् ॥ २२ ॥

बृहस्पति, मंगल और बुध के योग में अच्छा कवि, सुंदरी स्त्री का पति, पराया उपकार करनेवाला, तीक्ष्ण और गंधर्व-विद्या (गाने) में निपुण हो ॥ २२ ॥

मंगलबुधशुक्रयोगफल ।

भृगुभौमबुधैर्योगे विकलाङ्गश्च चञ्चलः ।
अकुलीनः सदोत्साही दृप्तश्च मुखरो नरः ॥ २३ ॥

शुक्र, मंगल और बुध के योग में विकल अंगोंवाला, चंचल स्वभाव, अकुलीन (नीच कुल में उत्पन्न), सदा उत्साहवाला, अभिमानी और मुखर (वाचाल) मनुष्य हो ॥ २३ ॥

मंगलगुरुशुक्रयोगफल ।

जीवकाव्यकुजैर्योगे दिव्यनारीयुतः सुखी ।
सर्वानन्दकरो लोके जायते नृपतिप्रियः ॥ २४ ॥

बृहस्पति, शुक्र और मंगल के योग में सुंदर स्त्री करके युक्त, सुखी, संसार में सब आनंदों को भोगनेवाला और राजा को भी प्रिय हो ॥ २४ ॥

मंगलबुधशनियोगफल ।

बुधमन्दकुजैर्योगे प्रवासी नेत्ररोगवान् ।
प्रेष्यो वदनरोगी च हास्यलुब्धो भवेन्नरः ॥ २५ ॥

बुध, शनैश्चर और मंगल के योग में प्रवासी (परदेश में रहनेवाला), नेत्रों में रोगवाला, दूत-कार्य करनेवाला अर्थात् सेवक, वदन (मुख) का रोगी और हास्य में लुब्ध मनुष्य हो ॥ २५ ॥

मंगलगुरुशनियोगफल ।

मन्दजीवारसंयोगे कुष्ठाङ्गो राजसम्मतः ।
नीचाचारो निर्घृणश्च भवेन्मित्रैर्विगर्हितः ॥ २६ ॥

शनैश्चर, बृहस्पति और मंगल के संयोग में कुष्ठ-युक्त अंगोंवाला

(कोढ़ी), राजाओं का प्रिय, नीच आचार करनेवाला, निर्घृण (दया-रहित) और मित्रों से विगर्हित (निंदित) हो ॥ २६ ॥

मंगलशुक्रशनियोगफल।

भृगुमन्दकुजैर्योगे दुःशीलायाः पतिः सुतः।
प्रवासशीलो दुःखी च जायते जातकः सदा ॥ २७ ॥

शुक्र, शनैश्चर और मंगल के योग में दुःशीला ही जिसकी स्त्री और माता हो, प्रवासशील (परदेश में रहनेवाला) और सदा दुःखी हो ॥ २७ ॥

बुधगुरुशुक्रयोगफल।

बुधेज्यभृगुसंयोगे सुतनुर्नृपपूजितः।
हतारिर्दीर्घकीर्त्तिश्च सत्यवादी भवेन्नरः ॥ २८ ॥

बुध, बृहस्पति और शुक्र के संयोग में अच्छी देहवाला, राजाओं से पूजित, शत्रुओं को नष्ट करनेवाला, बड़ी कीर्तिवाला और सत्यवादी मनुष्य हो ॥ २८ ॥

बुधगुरुशनियोगफल।

बुधार्किजीवसंयोगे सुदारो बहुभोगवान्।
धनैश्वर्ययुतः प्रायः सुखधैर्ययुतो भवेत् ॥ २६ ॥

बुध, शनैश्चर और बृहस्पति के संयोग में सुंदर स्त्रीवाला, बहुत भोगी, धन और ऐश्वर्य से युक्त, विशेष करके सुख और धैर्य से युक्त हो ॥ २६ ॥

बुधशुक्रशनियोगफल।

मन्दशुक्रबुधैर्योगे मुखरः परदारकः।
असङ्गत्यकलाभिज्ञः स्वदेशनिरतो भवेत् ॥ ३० ॥

शनैश्चर, शुक्र और बुध के योग में मुखर (बकवादी), पराई स्त्री से प्रीति करनेवाला, कुसंगति करनेवाला, कलाओं को न जाननेवाला और सदा अपने ही देश में रहनेवाला हो ॥ ३० ॥

गुरुशुक्रशनियोगफल ।

मन्देज्यभृगुसंयोगे राजा भवति कीर्त्तिमान् ।
नीचवंशेऽपि सम्भूतः शीलयुक्तो नृपो भवेत् ॥ ३१ ॥

शनैश्चर, बृहस्पति और शुक्र के संयोग में यशस्वी (कीर्तिमान्) राजा हो, नीच वंश में उत्पन्न होकर भी सुशीलवान् राजा ही हो ॥३१॥

शुभग्रहपापग्रहयोगफल ।

प्रायः पापैर्युते चन्द्रे मातुर्नाशो रवौ पितुः ।
शुभग्रहैः शुभं वाच्यं मिश्रितैर्मिश्रितं फलम् ॥ ३२ ॥
शुभास्त्रयो ग्रहा युक्ताः कुर्वन्ति सुखिनं नरम् ।
पापास्त्रयो दुःखिनं च दुर्विनीतं विगर्हितम् ॥ ३३ ॥

इति श्रीकाशिनाथकृतौ लग्नचन्द्रिकायां त्रिग्रहयोग-परिच्छेदः पञ्चमः ॥ ५ ॥

प्रायः पापग्रहों से युक्त चन्द्रमा में माता का नाश और सूर्य में पिता का नाश, शुभग्रह हो, तो शुभ फल और पापग्रह वा शुभग्रह मिले हुए हों, तो मिश्र (मिला हुआ) अर्थात् मध्यम फल हो । तीन शुभग्रह ही युक्त हों, तो मनुष्य को सुखी करते हैं, और तीन पापग्रह हों, तो दुःखी, नम्रता-हीन और निंदित करते हैं ॥ ३२-३३ ॥

इति श्रीउन्नावप्रदेशान्तर्गततारगाँवनिवासिपण्डितरामविहारिसुकुलकृत-लग्नचन्द्रिकाभाषाटीकायां पंचमः परिच्छेदः ॥ ५ ॥

छठा परिच्छेद।

चतुर्ग्रहयोगफल।

सूर्यचन्द्रमंगलबुधयोगफल।

चन्द्रचान्द्रिकुजार्काणां योगे लिपिकरो भवेत्।
तस्करो मुखरो वाग्मी मायायां कुशलो भिषक् ॥ १ ॥

चन्द्रमा, बुध, मंगल और सूर्य के योग में लिपि करनेवाला (लेखक), चोर, मुखर (बकवादी), वाणी और माया में निपुण तथा वैद्य हो ॥ १ ॥

सूर्यचन्द्रमंगलगुरुयोगफल।

भौमभास्करचन्द्रेज्यप्रसङ्गे निपुणो धनी।
तेजस्वी गतशोकश्च नीतिज्ञश्च भवेन्नरः ॥ २ ॥

मंगल, सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति के प्रसंग में निपुण, धनी, तेजस्वी, शोक-रहित और नीति का जाननेवाला मनुष्य हो ॥ २ ॥

सूर्यचन्द्रभौमशुक्रयोगफल।

सूर्येन्दुभौमशुक्राणां योगे विद्यार्थसंग्रही।
सुखी पुत्री कलत्री च वाग्वृत्तिर्मनुजो भवेत् ॥ ३ ॥

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और शुक्र के योग में विद्या और द्रव्य का संग्रह करनेवाला, सुखी, पुत्रवान्, स्त्री-युक्त और वाणी ही की वृत्ति-(जीविका) वाला मनुष्य हो ॥ ३ ॥

सूर्यचन्द्रभौमशनियोगफल।

अर्कार्किशशिभौमानां योगे मूर्खश्च निर्धनः।
ह्रस्वो विषमदेहश्च भिक्षावृत्तिर्भवेन्नरः ॥ ४ ॥

सूर्य, शनैश्चर, चन्द्रमा और मंगल के योग में मूर्ख, निर्धन (दरिद्री), ह्रस्व (छोटा), विषम देहवाला और भिक्षा की वृत्तिवाला मनुष्य हो ॥ ४ ॥

सूर्यचन्द्रबुधगुरुयोगफल।

शशिसौम्यार्कजीवानां योगे शिल्पकरो धनी।
सौवर्णिकः प्लुताक्षश्च रोगहीनश्च जायते ॥ ५ ॥

चन्द्रमा, बुध, सूर्य और बृहस्पति के योग में कारीगरी का करनेवाला, धनी, सुंदर वर्णवाला अथवा सुवर्ण का व्यवहार करनेवाला, प्लुत (गड़े हुए) नेत्रोंवाला और रोग-हीन हो ॥ ५ ॥

सूर्यचन्द्रबुधशुक्रयोगफल।

चन्द्रार्कबुधशुक्राणां योगे च सुभगो नरः।
ह्रस्वश्च राजमान्यश्च वाग्मी च विकलो भवेत् ॥ ६ ॥

चन्द्रमा, सूर्य, बुध और शुक्र के योग में सौभाग्यवान् (ऐश्वर्य-सम्पन्न), ह्रस्व (छोटा), राजाओं में पूज्य, वाणी में निपुण और विकल मनुष्य हो ॥ ६ ॥

सूर्यचन्द्रबुधशनियोगफल।

अर्कार्किचन्द्रचान्द्रीणां योगे भिक्षाशनो नरः।
वियुक्तः पितृमातृभ्यां विकलाक्षश्च निर्धनः ॥ ७ ॥

सूर्य, शनैश्चर, चन्द्रमा और बुध के योग में भिक्षा अर्थात् माँग कर खानेवाला, पिता और माता से अलग रहनेवाला, विकल नेत्रोंवाला और दरिद्री हो ॥ ७ ॥

सूर्यचन्द्रगुरुशुक्रयोगफल।

सूर्यचन्द्रेज्यशुक्राणां संयोगे राजपूजितः।
जलारण्यमृगस्वामी नरः स्यान्निपुणः सुखी ॥ ८ ॥

सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति और शुक्र के संयोग में राजाओं में पूज्य, जल, वन और मृगों का स्वामी, निपुण और सुखी मनुष्य हो ॥ ८ ॥

सूर्यचन्द्रगुरुशनियोगफल ।

सूर्यचन्द्रार्किजीवानां मान्यश्च वनिताप्रियः ।
बहुवित्तसुतस्तीक्ष्णः समाक्षश्च प्रजायते ॥ ९ ॥

सूर्य, चन्द्रमा, शनैश्चर और बृहस्पति के योग में मान्य अर्थात् पूज्य, स्त्री को प्यारा, बहुत द्रव्य और पुत्रोंवाला, तीक्ष्ण और समान नेत्रोंवाला हो ॥ ९ ॥

सूर्यचन्द्रशुक्रशनियोगफल ।

सितार्कजरवीन्दूनां योगे चात्यन्तदुर्बलः ।
वनितासदृशाचारो भीरुरग्रेसरो नरः ॥ १० ॥

शुक्र, शनैश्चर, सूर्य और चन्द्रमा के योग में अत्यंत दुर्बल, स्त्री के बराबर आचार करनेवाला, डरपोक और आगे चलनेवाला मनुष्य हो ॥ १० ॥

सूर्यमंगलबुधगुरुयोगफल ।

बुधार्ककुजजीवानां योगे सूत्रकरो नरः ।
परदाररतः शूरो दुःखी चक्रधरो भवेत् ॥ ११ ॥

बुध, सूर्य, मंगल और बृहस्पति के योग में सूत का कार्य करनेवाला, पराई स्त्री में रत, शूर-वीर, दुःखी और चक्र धरनेवाला मनुष्य हो ॥ ११ ॥

सूर्यचन्द्रमंगलशुक्रयोगफल ।

रविशुक्रकुजेन्दूनां संयोगे पारदारिकः ।
निर्लज्जो दुर्जनश्चौरो विषमाङ्गो जनो भवेत् ॥ १२ ॥

सूर्य, शुक्र, मंगल और चन्द्रमा के योग में पराई स्त्री से प्रीति करनेवाला, निर्लज्ज, दुर्जन, चोर और विषम अंगोंवाला मनुष्य हो ॥ १२ ॥

सूर्यमंगलबुधशनियोगफल ।

अर्कार्किबुधभौमानां योगे योद्धा कविर्जनः ।
मन्त्री चमूपतिस्तीक्ष्णो नीचाचारश्च जायते ॥ १३ ॥

सूर्य, शनैश्चर, बुध और मंगल के योग में योद्धा, कवि, मन्त्री, सेनापति, तीक्ष्ण और नीच आचार करनेवाला मनुष्य हो ॥ १३ ॥

सूर्यमंगलगुरुशुक्रयोगफल ।

भौमार्कजीवशुक्राणां योगे पूज्यो धनी जनः ।
सुभगो नृपमान्यश्च ख्यातो भवति नीतिमान् ॥१४॥

मंगल, सूर्य, बृहस्पति और शुक्र के योग में पूज्य, धनी, सौभाग्य-वाला (ऐश्वर्यशाली), राजाओं में पूज्य, प्रसिद्ध और नीतिमान् हो ॥ १४ ॥

सूर्यमंगलगुरुशनियोगफल ।

भानुभानुजजीवारैरेकस्थैर्गणनायकः ।
सोन्मादो नृपमान्यश्च सिद्धार्थो जायते नरः ॥ १५ ॥

सूर्य, शनैश्चर, बृहस्पति और मंगल एक में हों, तो गणों में नायक (अधिक मनुष्यों में प्रधान), उन्माद-युक्त, राजाओं में पूज्य और प्रयोजन सिद्ध करनेवाला मनुष्य हो ॥ १५ ॥

सूर्यमंगलशुक्रशनियोगफल ।

मन्दमार्त्तण्डशुक्रारैः संयुक्तैर्जायते जनः ।
लोकद्वेष्टा समाक्षश्च नीचाचारो जडाकृतिः ॥ १६ ॥

शनैश्चर, सूर्य, शुक्र और मंगल संयुक्त हों, तो संसार का वैरी, समान नेत्रोंवाला, नीच आचरण और जड़ आकृतिवाला पुरुष हो ॥ १६ ॥

सूर्यबुधगुरुशुक्रयोगफल ।

जीवशुक्रबुधार्काणां योगे बहुमतिर्जनः ।
धनी सुखी च सिद्धार्थः प्रगल्भश्च प्रजायते ॥ १७ ॥

बृहस्पति, शुक्र, बुध और सूर्य के योग में बहुत बुद्धिवाला, धनी, सुखी, प्रयोजन सिद्ध करनेवाला और प्रगल्भ (धृष्ट) मनुष्य हो ॥ १७ ॥

सूर्यबुधगुरुशनियोगफल ।

अर्कार्किबुधदेवेज्यैरेकराशिस्थितैर्नरः ।
भ्रातृमान् कलही मानी क्लीबाचारी निरुद्यमः ॥ १८ ॥

सूर्य, शनैश्चर, बुध और बृहस्पति एक राशि में स्थित हों, तो भाइयों से युक्त, लड़ाई करनेवाला, मानी, नपुंसकों के समान आचार करनेवाला और उद्यम-हीन हो ॥ १८ ॥

सूर्यबुधशुक्रशनियोगफल ।

शुक्रसौरिबुधार्काणां योगे मित्रयुतः शुचिः ।
मुखरः सुभगः प्राज्ञो राजप्रीतो[1] भवेन्नरः ॥ १९ ॥

शुक्र, शनैश्चर, बुध और सूर्य के योग में मित्र-युक्त, पवित्र, मुखर (बाचाल), सौभाग्यवान् (सुंदर ऐश्वर्यवाला), अति बुद्धिमान् और राजा को प्यारा मनुष्य हो ॥ १९ ॥

सूर्यगुरुशुक्रशनियोगफल ।

सूर्यसौरिसितेज्यानां सम्बन्धे भोगमानवान् ।
कविः कारुकनाथश्च राजप्रीतो भवेन्नरः ॥ २० ॥

सूर्य, शनैश्चर, शुक्र और बृहस्पति के संबंध में भोग और मान-युक्त, कवि, कारुकनाथ (कारीगर लोगों का स्वामी) और राजा को प्यारा मनुष्य हो ॥ २० ॥

चन्द्रमंगलबुधगुरुयोगफल ।

चन्द्रचान्द्रिकुजेज्यानां योगे शास्त्रविचक्षणः ।
नरेन्द्रस्य महामन्त्री महाबुद्धिर्नरो भवेत् ॥ २१ ॥

१—'राजप्रीतो भवेन्नरः', 'जायते च सुखीनरः' पाठान्तर है ।

चन्द्रमा, बुध, मंगल और बृहस्पति के योग में शास्त्र में निपुण, राजा का महामंत्री और महाबुद्धिमान् मनुष्य हो ॥ २१ ॥

चन्द्रमंगलबुधशुक्रयोगफल।

भौमेन्दुबुधशुक्राणामन्वये बन्धकीपतिः।
निद्रालुः कलही नीचो बन्धुद्वेषी जनो भवेत् ॥ २२ ॥

मंगल, चन्द्रमा, बुध और शुक्र के योग में बन्धकी (बंध्या स्त्री) का स्वामी, निद्रा-युक्त, लड़ाई करनेवाला, नीच और भाइयों का वैरी मनुष्य हो ॥ २२ ॥

चन्द्रमंगलबुधशनियोगफल।

भौमेन्दुबुधसौरीणां योगे शूरकुलोद्भवः।
पुत्रमित्रकलत्री च द्विमातृपितृको जनः ॥ २३ ॥

मंगल, चन्द्रमा, बुध और शनैश्चर के योग में वीर-कुल में उत्पन्न, पुत्रवान्, मित्र और कलत्रवान् तथा दो माता और पितावाला पुरुष हो ॥ २३ ॥

चन्द्रमंगलगुरुशुक्रयोगफल।

चन्द्रारगुरुशुक्राणां योगे साहसिको नरः।
विकलाङ्गो धनी पुत्री मानी प्राज्ञोऽपि जायते ॥ २४ ॥

चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति और शुक्र के योग में साहसी, विकल अंगोंवाला, धनी, पुत्रवान्, मानी और बुद्धिमान् मनुष्य हो ॥ २४ ॥

चन्द्रमंगलगुरुशनियोगफल।

भौमेन्दुजीवमन्दानामन्वये बधिरोऽधनः।
सोन्मादः स्थिरवाक्यश्च शूरो विज्ञो भवेन्नरः ॥ २५ ॥

मंगल, चन्द्रमा, बृहस्पति और शनैश्चर के योग में बहिरा, निर्धन, उन्माद-युक्त, स्थिर वचन कहनेवाला, शूर-वीर और विद्वान् मनुष्य हो ॥ २५ ॥

चन्द्रमंगलशुक्रशनियोगफल।

चन्द्रारशुक्रमन्दानां मिलने कुलटापतिः।
सोद्वेगः सर्पतुल्याक्षः प्रगल्भो जातको नरः ॥२६॥

चन्द्रमा, मंगल, शुक्र और शनैश्चर के योग में कुलटा का पति, उद्वेग-युक्त, सर्पों के तुल्य नेत्रोंवाला और प्रगल्भ (धृष्ट) मनुष्य हो ॥ २६ ॥

चन्द्रबुधगुरुशुक्रयोगफल।

जीवशुक्रबुधेन्दूनामन्वये सुभगो धनी।
द्विमातृपितृकः प्राज्ञो गतारिर्जायते नरः ॥ २७ ॥

बृहस्पति, शुक्र, बुध और चन्द्रमा के योग में सौभाग्यवान् (ऐश्वर्य-युक्त), धनी, दो माता और दो पितावाला, विद्वान् और शत्रु-रहित मनुष्य हो ॥ २७ ॥

चन्द्रबुधगुरुशनियोगफल।

बुधेन्दुगुरुमन्दानां योगे मात्रा विवर्जितः।
त्वग्दोषी सुभगो दुःखी बहुभार्यो भवेन्नरः ॥ २८ ॥

बुध, चन्द्रमा, बृहस्पति और शनैश्चर के योग में माता से रहित, त्वचा का रोगी, सौभाग्यवान् ऐश्वर्य-युक्त, दुःखी और बहुत स्त्रियों-वाला पुरुष हो ॥ २८ ॥

चन्द्रबुधगुरुशनियोगफल।

मन्देज्यचन्द्रचान्द्रीणां योगे बन्धुप्रियः कविः।
तेजस्वी राजमन्त्री च यशोधर्मयुतो नरः ॥ २९ ॥

शनैश्चर, बृहस्पति, चन्द्रमा और बुध के योग में भाइयों को प्यारा, कवि, तेजस्वी, राजा का मन्त्री, यश-युक्त और धर्मवान् मनुष्य हो ॥२९ ॥

चन्द्रगुरुशुक्रशनियोगफल।

चन्द्रेज्यसितसौरीणामन्वये पारदारिकः।
प्राज्ञो निर्द्रव्यबन्धुश्च स्थूलभार्यो नरः स्मृतः ॥३०॥

चन्द्रमा, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चर के संयोग में पराई स्त्री से प्रेम करनेवाला, बुद्धिमान्, द्रव्य-हीन, भाइयोंवाला और मोटी स्त्री-युक्त पुरुष हो ॥ ३० ॥

मंगलबुधगुरुशुक्रयोगफल ।

बुधारभृगुजीवानां योगे स्त्रीकलहप्रियः ।
धनी सुशीलो नीरोगी लोकपूज्यो नरो भवेत् ॥३१॥

बुध, मंगल, शुक्र और बृहस्पति के योग में स्त्री से लड़नेवाला, धनी, सुशील, नीरोगी और संसार में पूज्य मनुष्य हो ॥ ३१ ॥

मंगलबुधगुरुशनियोगफल ।

भौमेज्यसौम्यसौरीणां योगे शूरश्च निर्धनः ।
सत्यशौचयुतो विद्वान् वादी वाग्मी नरो भवेत् ॥३२॥

मंगल, बृहस्पति, बुध और शनैश्चर के योग में शूर, द्रव्य-हीन, सत्य और शौच-युक्त, विद्वान्, वाद करनेवाला और वाणी में निपुण मनुष्य हो ॥ ३२ ॥

मंगलबुधशुक्रशनियोगफल ।

भौमज्ञभृगुमन्दानां सारमेयरुचिर्भवेत् ।
मल्लोऽन्यपुष्टो योद्धा च दृढाङ्गो जायते नरः ॥ ३३ ॥

बुध, मंगल, शनैश्चर और शुक्र के योग में कुत्ता के सदृश रुचि-वाला, मल्ल, अन्यों से पुष्ट, योद्धा और दृढ़ अंगोंवाला हो ॥ ३३ ॥

मंगलगुरुशनिशुक्रयोगफल ।

भौमजीवार्किशुक्राणां मिलने साहसप्रियः ।
धनी सतेजाः स्त्रीलोलः कितवो जायते नरः ॥ ३४ ॥

मंगल, बृहस्पति, शनैश्चर और शुक्र के संयोग में साहस-प्रिय, धनी, तेजवाला, स्त्री में चंचल और धूर्त पुरुष हो ॥ ३४ ॥

बुधगुरुशुक्रशनियोगफल ।

बुधेज्यभृगुमन्दानां योगे कामातुरो नरः ।
विधेयभृत्यो मेधावी तीक्ष्णशास्त्ररतो भवेत् ॥ ३५ ॥

इति श्रीकाशिनाथकृतौ लग्नचन्द्रिकायां चतुर्ग्रह-
षष्ठः परिच्छेदः ॥ ६ ॥

बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चर के योग में कामातुर (काम-पीड़ित), भृत्यों से सेवा करानेवाला, बुद्धिमान् और तीक्ष्णशास्त्र में रत हो ॥ ३५ ॥

इति श्रीउन्नावप्रदेशान्तर्गततारगाँवनिवासिपण्डितरामविहारिसुकुलकृत-लग्नचन्द्रिकाभाषाटीकायां चतुर्ग्रहयोगो नाम षष्ठः परिच्छेदः ॥ ६ ॥

सातवाँ परिच्छेद ।

पंचग्रहयोगफल ।

सू० चं० मं० बुधगुरुयोगफल ।

बहुप्रपञ्चो दुःखी च जायाविरहतापितः ।
सूर्याद्यैर्जीवपर्यन्तैर्नरः स्यात्पञ्चभिर्ग्रहैः ॥ १ ॥

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध और बृहस्पति के योग में बहुत प्रपञ्च-वाला (मायावी), दुःखी और स्त्री के विरह में तापित पुरुष हो ॥ १ ॥

सू० चं० मं० बु० शुक्रयोगफल ।

गतसत्यो बन्धुहीनः परकर्मकरो नरः ।
क्लीबस्य च सखा सूर्यश्चन्द्रारबुधभार्गवैः ॥ २ ॥

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध और शुक्र के संयोग में झूँठा, भाई से हीन, पर-कर्मों को करनेवाला और नपुंसक (हिजड़ा) का मित्र हो ॥ २ ॥

सू० चं० मं० बु० शनियोगफल ।

अल्पायुर्विकलत्रश्च दुःखी सुतविवर्जितः ।
अर्कार्किबुधचन्द्रारैर्योगे बन्धनभागपि ॥ ३ ॥

सूर्य, शनैश्चर, बुध, चन्द्रमा और मंगल के योग में थोड़ी आयु-वाला, स्त्री-हीन, दुःखी, पुत्र-रहित और बन्धन में आनेवाला मनुष्य हो ॥ ३ ॥

सू०चं०मं०गु०शुक्रयोगफल ।

जात्यन्धो बहुदुःखी च पितृमातृविवर्जितः ।
गानप्रीतो नरो भौमभानुचन्द्रेज्यभार्गवैः ॥ ४ ॥

मंगल, सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति और शुक्र के योग में जाति में अन्धा, बहुत दुःखी, पिता और माता से हीन और गाने में प्रसन्न हो ॥ ४ ॥

सू०चं०मं०गुरुशनियोगफल ।

परद्रव्यहरो योद्धा परतापकरः खलः ।
समर्थो जायते मन्दचन्द्रजीवार्कभूसुतैः ॥ ५ ॥

शनैश्वर, चन्द्रमा, बृहस्पति, सूर्य और मंगल के संयोग में पराए द्रव्य का हरनेवाला, योद्धा, पर को ताप करनेवाला, दुष्ट और समर्थ हो ॥ ५ ॥

सू०चं०मं०शुक्रशनियोगफल ।

मानाचारधनैर्हीनः परदाररतो नरः ।
एकस्थैर्जायते भानुभौमेन्दुशनिभार्गवैः ॥ ६ ॥

सूर्य, मंगल, चन्द्रमा, शनैश्वर और शुक्र के योग में मान, आचार और धन से हीन और पराई स्त्री में रत हो ॥ ६ ॥

सू०चं०बु०गुरुशुक्रयोगफल ।

राजमन्त्री भूरिवित्तो यन्त्रज्ञो दण्डनायकः ।
ख्यातो जनो यशस्वी च जीवार्कज्ञेन्दुभार्गवैः ॥ ७ ॥

बृहस्पति, सूर्य, बुध, चन्द्रमा और शुक्र के योग में राजा का मन्त्री, बड़े द्रव्यवाला, यन्त्रों का जाननेवाला, दण्ड-नायक, प्रसिद्धजन और यशस्वी हो ॥ ७ ॥

सू०चं०बु०गुरुशनियोगफल ।

परान्नभोजी सोन्मादः प्रियतमश्च वञ्चकः ।
उग्रो भीरुर्नरः सूर्यशनिचन्द्रेज्यचन्द्रजैः ॥ ८ ॥

सूर्य, शनैश्चर, चन्द्रमा, बृहस्पति और बुध के संयोग में पराये अन्न का भोजन करनेवाला, उन्माद-युक्त, प्रियजन को दुःख देनेवाला, छली (ठग), उग्र और भयानक मनुष्य हो ॥ ८ ॥

सू०चं०बु०शु०शनियोगफल ।

धनपुत्रसुखैर्हीनो मृत्यूत्साही च लोमशः ।
दीर्घो भवति चन्द्रार्कबुधशुक्रशनैश्चरैः ॥ ९ ॥

चन्द्रमा, सूर्य, बुध, शुक्र और शनैश्चर के संयोग में धन, पुत्र और सुख से हीन, मृत्यु में उत्साहवाला, लोमश (रोमोंवाला) और दीर्घ मनुष्य हो ॥ ९ ॥

सू०चं०गु०शु०शनियोगफल ।

इन्द्रजालरतो वाग्मी चलचित्तो जनप्रियः ।
प्राज्ञः स्वशत्रुभिर्भीतः शुक्रेज्यार्केन्दुसूर्यजैः ॥ १० ॥

शुक्र, बृहस्पति, सूर्य, चन्द्रमा और शनैश्चर के योग में इन्द्रजाल (बाजीगरी) में रत, वाणी में निपुण, चलायमान चित्तवाला, मनुष्यों को प्यारा, बुद्धिमान् और अपने शत्रुओं से डरनेवाला मनुष्य हो ॥ १० ॥

सू०मं०बु०गु०शुक्रयोगफल ।

स्फीतो बहुहयः कामी नरोऽशोकश्चमूपतिः ।
बुधार्ककुजशुक्रेज्यैः सुभगो भूपतिप्रियः ॥ ११ ॥

बुध, सूर्य, मंगल, शुक्र और बृहस्पति के संयोग में स्फीत (समृद्धिशाली), बहुत घोड़ोंवाला, कामी, शोक-रहित, सेनापति, सौभाग्यवान् और राजा को प्रिय हो ॥ ११ ॥

सू०मं०बु०गु०शनियोगफल ।

भिक्षाभोगी च रोगी च नित्योद्विग्नो मलीमसः ।
जीर्णो नरो भानुभौमशनिजीवबुधैर्भवेत् ॥ १२ ॥

सूर्य, मंगल, शनैश्चर, बृहस्पति और बुध के योग में भिक्षा से भोजन करनेवाला, रोगी, नित्य ही उद्विग्न, मलिन और जीर्ण पुरुष हो ॥ १२ ॥

सू०मं०बु०शु०शनियोगफल।

व्याधिभिः शत्रुभिर्ग्रस्तः स्थानभ्रष्टो बुभुक्षितः।
नरः स्याद्विकलः शुक्रबुधमन्दार्कभूसुतैः ॥ १३ ॥

शुक्र, बुध, शनैश्चर, सूर्य और मंगल के योग में व्याधि और शत्रुओं से पीड़ित, स्थान से भ्रष्ट, बुभुक्षित (भूँखा) और विकल मनुष्य हो ॥ १३ ॥

सू०मं०गु०शु०शनियोगफल।

विज्ञो विचारवांश्चैव धातुयन्त्ररसायने।
नरः प्रसिद्धो भूपुत्ररविजीवसितार्कजैः ॥ १४ ॥

मंगल, सूर्य, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चर के योग में विद्वान्, विचारशील और धातुयन्त्ररसायन में विचारशील और प्रसिद्ध मनुष्य हो ॥ १४ ॥

सू०बु०गु०शु०शनियोगफल।

मित्रप्रियः शास्त्रवेत्ता धार्मिको गुरुसम्मतः।
दयालुः शुक्रसूर्यार्किबुधजीवैर्जनो भवेत् ॥ १५ ॥

शुक्र, सूर्य, शनैश्चर, बुध और बृहस्पति के संयोग में मित्रों से प्रीति करनेवाला, शास्त्रों का जाननेवाला, धर्मवान्, गुरु को सम्मत (सलाह) देनेवाला और दयालु मनुष्य हो ॥ १५ ॥

चं०मं०बु०गु०शुक्रयोगफल।

साधुः कल्मषहीनश्च धनविद्यासुखान्वितः।
बहुमित्रो नरो जीवभौमेन्दुबुधभार्गवैः ॥ १६ ॥

बृहस्पति, मंगल, चन्द्रमा, बुध और शुक्र के योग में साधु, पापहीन, धन, विद्या और सुख से युक्त और बहुत मित्रोंवाला पुरुष हो ॥ १६ ॥

चं०मं०गु०शु०शनियोगफल ।

पराान्नपाचको नित्यं दरिद्री मलिनस्तथा ।
नरो भवति भौमेन्दुजीवशुक्रशनैश्चरैः ॥ १७ ॥

मंगल, चन्द्रमा, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चर के योग में पराया अन्न पकानेवाला, सदा दरिद्री और मलिन मनुष्य हो ॥ १७ ॥

चं०मं०बु०शु०शनियोगफल ।

बहुमित्रारिपक्षश्च दुःशीलः परपीडकः ।
मानी नरः सोमसौम्यशुक्रमन्दधरासुतैः ॥ १८ ॥

चन्द्रमा, बुध, शुक्र, शनैश्चर और मंगल के संयोग में बहुत मित्र और शत्रुओं के पक्षवाला, दुश्शील (दुष्ट स्वभाववाला), पर को पीड़ा करनेवाला और अभिमानी मनुष्य हो ॥ १८ ॥

चं०बु०गु०शु०शनियोगफल ।

राजमन्त्री राजतुल्यो लोकपूज्यो गुणाधिकः ।
चन्द्रचन्द्रजमन्देज्यभृगुपुत्रैर्नरो भवेत् ॥ १६ ॥

चन्द्रमा, बुध, शनैश्चर, बृहस्पति और शुक्र के योग में राजा का मन्त्री, राजा के बराबर, संसार में पूज्य और गुणों में अधिक मनुष्य हो ॥ १६ ॥

चं० मं० गु० शु० शनियोगफल ।

दुर्भगो मलिनो मूर्खः प्रेष्यः क्लीबश्च निर्धनः ।
नरो भवेत्तु चन्द्रेज्यशुक्रसौरिमहीसुतैः ॥

चन्द्रमा, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर और मंगल के संयोग में दुर्भग (अभागा), मलिन, मूर्ख, दास, नपुंसक और दरिद्री मनुष्य हो ॥ १६ ॥

मं०बु०गु०शु०शनियोगफल ।

अशोकस्तामसो निःस्वः सोन्मादो राजवल्लभः ।
निद्रातुरो नरो भौमबुधजीवार्किभार्गवैः ॥ २० ॥

इति श्रीकाशिनाथकृतौ लग्नचन्द्रिकायां पञ्चग्रह-
योगो नाम सप्तमः परिच्छेदः ॥ ७ ॥

मंगल, बुध, बृहस्पति, शनैश्चर और शुक्र के संयोग में शोक-हीन, तामसी (क्रोधी), द्रव्य-हीन, उन्माद-युक्त, राजा को प्यारा और निद्रा के वश में रहनेवाला पुरुष हो ॥ २० ॥

इति श्रीउन्नावप्रदेशान्तर्गततारगाँवनिवासिपण्डितरामविहारिसुकुलकृत-
लग्नचन्द्रिकाभाषाटीकायां पञ्चग्रहयोगो नाम सप्तमः परिच्छेदः॥ ७ ॥

आठवाँ परिच्छेद।

षष्ठग्रहयोग।

सू०चं०मं०बु०गु०शुक्रयोगफल।

विद्याधर्मधनैर्युक्तो बहुभाषी च भाग्यवान्।
सूर्याद्यैः शुक्रपर्यन्तैर्लाभो भवति षड्ग्रहैः॥ १॥

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति और शुक्र के संयोग से विद्या, धर्म और धन से युक्त, बहुत बोलनेवाला, भाग्यवान् और लाभ-युक्त हो॥ १॥

सू०चं०मं०बु०गु०शनियोगफल।

परकर्मकरो दाता शुद्धात्मा चञ्चलाकृतिः।
षड्ग्रहैस्तु विना शुक्रं रमते विजने जनः॥ २॥

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति और शनैश्चर के संयोग में पराये कर्म का करनेवाला, दाता (दान देनेवाला), शुद्ध आत्मावाला, चञ्चल आकारवाला और मनुष्य-हीन स्थान में रमनेवाला हो॥ २॥

सू०चं०मं०बु०शु०शनियोगफल।

संशयी सुभगो मानी युद्धे शत्रुविमर्दकः।
विना जीवं ग्रहैः षड्भिर्वनादौ रमते जनः॥ ३॥

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, शुक्र और शनैश्चर के संयोग में संशय-युक्त, सौभाग्यवान्, अभिमानी, लड़ाई में शत्रुओं का मर्दन करनेवाला

और वन आदि निर्जन स्थानों में विचरनेवाल मनुष्य हो ॥ ३ ॥

सू०चं०मं०गु०शु०शनियोगफल ।

अर्थप्रियो रणोत्साही पिशुनः क्रोधलोभवान् ।
अर्कार्किचन्द्रभौमेज्यभार्गवैः सुभगो नरः ॥ ४ ॥

सूर्य, शनैश्चर, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति और शुक्र के समागम में द्रव्य-प्रिय, लड़ाई में उत्साह-युक्त, चुगलखोर, क्रोध तथा लोभ-युक्त और सौभाग्यवान् मनुष्य हो ॥ ४ ॥

सू०चं०बु०गु०शु०शनियोगफल ।

कलत्रहीनो निर्द्रव्यो राजमन्त्री क्षमायुतः ।
रवीन्दुबुधजीवार्किभृगुभिः सुभगो नरः ॥ ५ ॥

सूर्य, चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शनैश्चर और शुक्र के योग में स्त्री से हीन, द्रव्य-रहित, राजा का मंत्री, क्षमा-युक्त और सौभाग्यवान् मनुष्य हो ॥ ५ ॥

सू०मं०बु०गु०शु०शनियोगफल ।

धनदारसुतैर्हीनस्तीर्थगामी वनाश्रितः ।
सूर्यारसौम्यजीवार्किभृगुपुत्रैर्भवेन्नरः ॥ ६ ॥

सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनैश्चर और शुक्र के संयोग से धन, स्त्री और पुत्रों से हीन, तीर्थों में विचरनेवाला और वन में ही रहने-वाला मनुष्य हो ॥ ६ ॥

चं०मं०बु०गु०शु०शनियोगफल ।

धनी पुत्री शुचिर्मन्त्री बहुभार्यो नृपप्रियः ।
विना सूर्यं ग्रहैः षड्भिः प्रतापी जायते नरः ॥ ७ ॥

चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चर के समागम में धनी, पुत्रवान्, पवित्र, मन्त्री, बहुत स्त्रियोंवाला, राजा को प्यारा और प्रतापी मनुष्य हो ॥ ७ ॥

सू०चं०मं०बु०शु०शनियोगफल ।

परदाररतः कुष्ठी स्थानभ्रष्टो नराकृतिः ।
मूर्खश्चैव तु सूर्यारबुधेन्दुशनिभार्गवैः ॥ ८ ॥

सूर्य, मंगल, बुध, चन्द्रमा, शनैश्चर और शुक्र के संयोग में पराई स्त्री में रत, कुष्ठी, स्थान से भ्रष्ट, आकृति-रहित और मूर्ख हो ॥ ८ ॥

सू०चं०मं०गु०शु०शनियोगफल ।

परकर्मकरो नीचो हृद्रोगी श्वासकासवान् ।
निन्द्यो नरः सूर्यसोमभौमजीवसितार्किभिः ॥ ६ ॥

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चर के योग में पराये कर्म का करनेवाला, नीच, हृदय का रोगी, श्वास और कास-युक्त और निन्द्य मनुष्य हो ॥ ६ ॥

प्रायो दरिद्रो मूर्खश्च षड्भिर्वा पञ्चभिर्ग्रहैः ।
अन्योन्यदर्शनात्तेषां फलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ १० ॥

इति श्रीकाशिनाथकृतौ लग्नचन्द्रिकायां षड्ग्रह-योगो नाम अष्टमः परिच्छेदः ॥ ८ ॥

छः अथवा पाँच ग्रहों का योग हो, तो बहुधा दरिद्री, मूर्ख होता है । आपस में दर्शन-सम्बन्ध से इनका यह फल कहा गया है ॥ १० ॥

इति श्रीउन्नावप्रदेशान्तर्गततारगाँवनिवासिपण्डितरामविहारिसुकुलकृत-लग्नचद्रिकाभाषाटीकायां षड्ग्रहयोगो नाम अष्टमः परिच्छेदः ॥ ८ ॥

नवाँ परिच्छेद।

नाभसयोग।

नौकायोग और उसका फल।

लग्नात्सप्तमपर्यन्तैर्ग्रहैः सर्वैः शुभाशुभैः।
क्रमेण संस्थितैः प्रोक्तो योगो नौकाभिधो बुधैः॥ १॥

लग्न से सातवें घर तक क्रम से जो पहले शुभ फिर अशुभ ग्रह स्थित हों, तो वह पण्डितों द्वारा नौकायोग कहा जाता है॥ १॥

अन्योपजीवविभवो बह्वायुः ख्यातकीर्तिमान्।
कृपणो मलिनो लुब्धो नौयोगे चञ्चलो नरः॥ २॥

इस योग में उत्पन्न होनेवाला मनुष्य अन्यों की आजीविका करनेवाला, बहुत आयुवाला, प्रसिद्ध, यशस्वी, कृपण, मलिन, लुब्ध और चञ्चल होता है॥ २॥

कूटयोग और उसका फल।

चतुर्थात्कर्मपर्यन्तैः क्रमेण पतितैर्ग्रहैः।
विख्यातः कूटनामाऽसौ योगः प्रोक्तो मनीषिभिः॥ ३॥

चौथे घर से दशवें घर तक क्रम ही से जो ग्रह पड़े हों, तो बुद्धिमानों द्वारा प्रसिद्ध कूटयोग कहा जाता है॥ ३॥

मिथ्यावादी शठः क्रूरः कितवो बन्धुपालकः।
निष्किञ्चनः शैलवासी कूटयोगे नरो भवेत्॥ ४॥

इस कूटयोग में उत्पन्न मनुष्य मिथ्या बोलनेवाला, मूर्ख, क्रूर, कपटी, बन्धुओं की पालना करनेवाला, दरिद्री और पर्वत में बसनेवाला मनुष्य हो ॥ ४ ॥

छत्रयोग और उसका फल ।

सप्तमाल्लग्नपर्यन्तैः खेटैः सर्वैः शुभाशुभैः ।
छत्रयोगः समाख्यातो ब्रह्मरुद्रादिभिः सुरैः ॥ ५ ॥

सप्तम घर से लग्नपर्यन्त जो सम्पूर्ण शुभ वा अशुभ ग्रह पड़े हों, तो ब्रह्मा रुद्रादिक देवताओं करके छत्रयोग कहा जाता है ॥ ५ ॥

प्रकृष्टधीर्दयालुश्च दीर्घायुः स्वजनाश्रयः ।
वयसि प्रथमेऽन्त्ये च सुखी छत्रप्रियो नरः ॥ ६ ॥

इस योग में उत्पन्न मनुष्य उत्तम बद्धिवाला, दयालु, बड़ी आयु-वाला, भाइयों को आश्रय देनेवाला और बाल्यावस्था किंवा वृद्धावस्था में छत्रधारी मनुष्य हो ॥ ६ ॥

कार्मुकयोग और उसका फल ।

दशमाच्च चतुर्थान्तैर्गगनेन्द्रैः शुभाशुभैः ।
कार्मुकाख्यः समाख्यातो योगोऽसौ पण्डितोत्तमैः ॥७॥

दशम घर से चतुर्थपर्यन्त जो शुभ-अशुभ ग्रह पड़े हों, तो पण्डितोत्तमों करके कार्मुकयोग कहा जाता है ॥ ७ ॥

वयोमध्ये भाग्यहीनो गुप्तिपालो वने रतः ।
मिथ्यावादी च चौरश्च कार्मुके जायते नरः ॥ ८ ॥

इस योग में उत्पन्न मनुष्य मध्य अवस्था में भाग्य-हीन, गुप्तिपाल (कैदखाने का रक्षक), वन में रहनेवाला, झूठ बोलनेवाला और चोर हो ॥ ८ ॥

वज्रयवमिश्रपद्मयोग और उनके फल ।

लग्नास्तयोर्ग्रहैः सौम्यैः पापैश्च सुखकर्मगैः ।
वज्रः स्याद्विपरीतैश्च यवः पद्मं च मिश्रितैः ॥ ९ ॥

लग्न और सातवें घर में शुभग्रह और चौथे तथा दशवें स्थान में पापग्रह हों, तो वज्रयोग होता है, इससे विपरीत में यव और पापग्रह वा शुभग्रह मिले हुए हों, तो पद्मयोग कहाजाता है ॥ ९ ॥

सुखी च सुभगः शूरो मध्ये भाग्येन वर्जितः ।
निःस्नेहश्च विरुद्धश्च वज्रयोगे खलो नरः ॥ १० ॥

इस वज्रयोग में सुखी, सौभाग्यवान्, शूर-वीर, मध्य अवस्था में भाग्य-हीन, स्नेह-रहित, विरुद्ध कार्य करनेवाला और दुष्ट मनुष्य हो ॥ १० ॥

दाता च स्थिरचित्तश्च व्रतादिनियमैर्युतः ।
मध्ये सुखार्थपुत्राढ्यो यवयोगे जनो भवेत् ॥ ११ ॥

यवयोग में उत्पन्न मनुष्य दाता (दान देनेवाला), स्थिरचित्तवाला प्रतापी, नियमों से युक्त और मध्य अवस्था में सुख, द्रव्य और पुत्रों से युक्त मनुष्य हो ॥ ११ ॥

स्थिरायुर्दीर्घकीर्त्तिश्च कान्तःशुभसुतैर्युतः ।
भूयो गुणमदैर्युक्तः पद्मयोगे जनो भवेत् ॥ १२ ॥

पद्मयोग में उत्पन्न मनुष्य स्थिर आयुवाला, बड़ी कीर्तिवाला, स्त्री और शुभपुत्रों से युक्त तथा गुण और मद से भी युक्त मनुष्य हो ॥ १२ ॥

शकटविकटयोगफल।

लग्नाद्द्वितीयगैः सर्वैर्ग्रहैर्वा[1] परिकीर्त्तिताः।
शकटं वास्तलग्नस्थैर्विहङ्गः सुखकर्म्मगैः ॥ १३ ॥

लग्न से द्वितीय घर में सब ग्रह पड़े हों, तो शकटयोग होता है। सातवें, लग्न में, चौथे और दशवें घर में ग्रह हों, तो विहंग-योग होता है ॥ १३ ॥

शकटयोगफल।

निपुणो निधिकार्येषु स्थिरद्रव्यः सुखैर्युतः।
प्रहृष्टमुखनेत्रश्च तृप्तो वापि नरः सदा ॥ १४ ॥
मूर्खः कुभार्यो रोगार्त्तः शकटप्राप्तजीविकः।
निर्द्रव्यो बन्धुहीनश्च शकटे जायते नरः ॥ १५ ॥

शकटयोग में उत्पन्न पुरुष निधि के कामों में निपुण, स्थिर-द्रव्य और सुखों से युक्त, प्रसन्न-मुख और नेत्रोंवाला और सदा ही तृप्त मनुष्य मूर्ख, कुत्सित भार्यावाला, रोग से पीड़ित, शकट (गाड़ी) से जीविका को प्राप्त होनेवाला, दरिद्री और भाइयों से हीन हो ॥ १४ । १५ ॥

विहंगयोगफल।

भ्रमणेऽतिरुचिर्हृष्टः सुरतप्राप्तजीविकः।
निकृष्टः कलहप्रीतो विहङ्गे मानवो भवेत् ॥ १६ ॥

विहंगयोग में उत्पन्न पुरुष भ्रमन में अत्यंत रुचिवाला, प्रसन्न, सुरत में जीविका प्राप्त होनेवाला, निकृष्ट और लड़ाई प्रियवाला मनुष्य हो ॥ १६ ॥

१—इसके स्थान में पाठान्तर है—केन्द्राद्द्वितीयगैः सर्वैर्वापीवापितृतीयगैः ॥

जलधिचक्रयोगफल ।

केन्द्रस्थानाद्द्वितीयस्थैर्ग्रहैर्जलधिरुच्यते[1] ।
कण्टकेभ्यस्तृतीयस्थैश्चक्रं सर्वैर्ग्रहैः स्मृतम् ॥ १७ ॥

केन्द्र के स्थान से द्वितीय में सब ग्रह हों, तो जलधियोग कहाता है, और तीसरे ही में सब ग्रह हों, तो चक्रयोग होता है ॥ १७ ॥

जलधियोगफल ।

बह्वर्थरत्नसम्पन्नः पुत्री भोगी जनप्रियः ।
सुशीलः स्थिरचित्तश्च जलधौ जायते नरः ॥ १८ ॥

जलधियोग में उत्पन्न पुरुष बहुत द्रव्यवाला, रत्नों से युक्त, पुत्रवान्, भोगवान्, सब जनों को प्रिय, सुशील तथा स्थिर चित्तवाला हो ॥ १८ ॥

चक्रयोगफल ।

प्रणताशेषभूपालः संसेवितपदाम्बुजः ।
चक्रयोगे समुत्पन्नो महाराजो नरो भवेत् ॥ १९ ॥

चक्रयोग में उत्पन्न पुरुष सम्पूर्ण राजा जिसके चरणकमलों की सेवा करें, ऐसा महाराजा हो ॥ १९ ॥

हलश्रृङ्गाटकयोगफल ।

धनस्थाने त्रिकोणे च ग्रहैः सर्वैर्हलं स्मृतम् ।
लग्नत्रिकोणगैः खेटैः श्रृङ्गाटकमुदाहृतम् ॥ २० ॥

१—इस श्लोक के स्थान में पाठान्तर है—

अर्थादेकान्तरस्थैश्च ग्रहैर्जलधिरुच्यते ।
लग्नादेकान्तरस्थैश्च चक्रं सर्वैर्ग्रहैः स्मृतम् ॥ १ ॥

अर्थ—दूसरे घर से एक अन्तर करके सब ग्रह अर्थात् २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ । इन स्थानों में स्थित होवें, तो जलधि (समुद्र) योग कहलाता है और लग्न से एकान्तर स्थानों में अर्थात् १ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११ इन घरों में सब ग्रह स्थित होवें, तो चक्रयोग कहलाता है ॥ १ ॥

दूसरे घर में तथा नवें और पाँचवें घर में सब ग्रह स्थित हों, तो हलयोग होता है। लग्न तथा नवें और पाँचवें घर में सब ग्रह स्थित हों, तो शृङ्गाटकयोग होता है ॥ २० ॥

हलयोगफल ।

बह्वाशी च दरिद्री च कर्षको बन्धुवर्जितः ।
सोद्वेगो दुःखितः प्रेष्यो हलयोगे जनो भवेत् ॥ २१ ॥

हलयोग में उत्पन्न पुरुष बहुत भोजन करनेवाला, दरिद्री, कर्षक (किसान), बंधुजनों से रहित, उद्वेगयुक्त, दुःखित और दास हो ॥ २१ ॥

शृङ्गाटकयोगफल ।

हास्ये सुखी सुभार्यश्च[१] नृपभीतः कलिप्रियः ।
धनाढ्यो युवतिप्रेष्यो योगे शृङ्गाटके नरः ॥ २२ ॥

शृङ्गाटकयोग में उत्पन्न पुरुष हँसने में सुखी, सुंदर स्त्रीवाला, राजा से डरनेवाला, लड़ाई में प्रसन्न, धनवान् और जवान स्त्री का दास हो ॥ २२ ॥

यूपबाणशक्तिदण्डयोगफल ।

लग्नमारभ्य केन्द्रेभ्यो द्वितीयस्थैश्चतुर्ग्रहैः[२] ।
यूपबाणौ शक्तिदण्डौ चत्वारोऽमी स्मृता बुधैः ॥ २३ ॥

लग्न और दूसरे घर में चार ग्रह हों, तो यूपयोग होता है, चौथे और पाँचवें घर में चार ग्रह हों, तो बाणयोग, सातवें और आठवें घर में चार ग्रह हों तो शक्तियोग, दशवें और ग्यारहवें घर में चार ग्रह हों, तो दण्डयोग होता है ॥ २३ ॥

१—'हास्ये सुखी सुभार्यश्च' के स्थान में 'हास्यवक्त्रः शुभाचारः' पाठान्तर है ।
२—'द्वितीयस्थैश्चतुर्ग्रहैः' के स्थान में 'चतुर्गृहगतैर्ग्रहैः' पाठान्तर है ।

यूपयोगफल ।

आत्मरक्षारतस्त्यागी सुखसत्यव्रतैर्युतः ।
विशिष्टो मन्त्रवादी च यूपयोगे भवेन्नरः ॥ २४ ॥

यूपयोग में उत्पन्न पुरुष अपनी आत्म-रक्षा में तत्पर, त्यागी, सुख, सत्य और व्रतों से युक्त, विशिष्ट (श्रेष्ठ) और मन्त्रवादी हो ॥ २४ ॥

शरयोगफल ।

शरकर्त्ता दस्युसेवी मांसादो मृगबन्धनः ।
हिंसकः शिल्पकारी च शरयोगे नरो भवेत् ॥ २५ ॥

बाणयोग में उत्पन्न पुरुष बाणों का बनानेवाला, चोरों की सेवा करनेवाला, मांसखानेवाला, मृगों को बांधनेवाला, हिंसक और कारीगरियों का जाननेवाला हो ॥ २५ ॥

शक्तियोगफल ।

चिरायुर्युद्धदक्षश्च सुभगः सुस्थिरोऽलसः ।
नीचो दुःखी दरिद्रश्च शक्तियोगे भवेन्नरः ॥ २६ ॥

शक्तियोग में उत्पन्न पुरुष बहुत आयुवाला, युद्ध में निपुण, सौभाग्यवान्, सुस्थिर, आलसी, नीच, दुःखी और दरिद्री हो ॥ २६ ॥

दण्डयोगफल ।

निःस्वो नष्टसुतस्त्रीको बन्धुबाह्यः सुनिर्घृणः ।
नीचप्रेष्यो दुःखितश्च दण्डयोगे नरो भवेत् ॥ २७ ॥

दण्डयोग में उत्पन्न पुरुष दरिद्री, नष्टसुत और स्त्रीवाला, बन्धुओं से बाहर, निर्घृणी (दयावान्), नीच-दास और दुःखित हो ॥२७॥

अर्धचन्द्रगदायोग ।

केन्द्राद्द्वितीयस्थानस्थैः[1] सप्तऋक्षगतैर्ग्रहैः ।
अर्धचन्द्रो गदायोगः केन्द्रात्पार्श्वद्वयाश्रयैः ॥ २८ ॥

१—'केन्द्राद्द्वितीयस्थानस्थैः' के स्थान में 'केन्द्राद्भिन्नस्थानेभ्यः' पाठान्तर है ।

केन्द्र से द्वितीय स्थानों में सात ग्रह हों, तो अर्धचन्द्र और केन्द्र के समीप के दो घरों में आश्रय-ग्रह हों, तो गदा-योग होता है ॥२८॥

अर्धचन्द्रयोगफल ।

बली राजप्रियः कान्तो हेमरत्नैरलंकृतः ।
अर्धचन्द्रे चमूनाथः सुभगो जायते जनः ॥ २९ ॥

अर्धचन्द्र में उत्पन्न पुरुष बली, राजा को प्रिय, कान्त, सुवर्ण और रत्नों से अलंकृत, सेनापति और सौभाग्यवान् हो ॥ २९ ॥

गदायोगफल ।

शास्त्रे योगे प्रवीणश्च सद्योयुक्तार्थतत्परः ।
यज्वा धनी सुसम्पन्नो गदायोगोद्भवो नरः ॥ ३० ॥

गदायोग में उत्पन्न पुरुष शास्त्र और योग में प्रवीण, शीघ्र ही योग्य प्रयोजन में तत्पर, यज्ञ करनेवाला, धनी और सम्पन्न हो ॥ ३० ॥

गोलयुगशूलकेदारपाशदामिनीवीणायोग ।

एकराशिस्थितैर्लग्नाद्ग्रहैर्गोलोयुगः क्रमात् ।
शूलकेदारपाशाश्च दामिनीवीणकास्तथा ॥ ३१ ॥

लग्न से क्रम ही से एक ही राशि में ग्रह स्थित हों, तो गोल, युग, शूल, केदार, पाश, दामिनी, वीणका ये योग होते हैं अर्थात् जिस किसी एक स्थान में सातों ग्रह हों, तो गोल; दो स्थानों में जहाँ तहाँ सब ग्रह हों, तो युग; तीन स्थानों में शूल, चार स्थानों में केदार, पाँच स्थानों में पाश, छः स्थानों में दामिनी, सात स्थानों में सातों ग्रह हों, तो वीणायोग होता है ॥ ३१ ॥

गोलयोगफल ।

विद्याहीनो धनैर्हीनो मानहीनोऽतिदुःखितः ।
गोलयोगे समुत्पन्नो मलिनो जायते नरः ॥ ३२ ॥

गोलयोग में उत्पन्न पुरुष विद्या, धन और मान से हीन, अति दुःखित और मलिन हो ॥ ३२ ॥

युगयोगफल ।

पाखण्डभाग्यो निर्द्रव्यः पितृमातृविवर्जितः ।
युगयोगे धर्महीनो लोकनिन्द्योऽपि जायते ॥ ३३ ॥

युगयोग में उत्पन्न पुरुष पाखण्डी, द्रव्य-हीन, पिता-माता से हीन और धर्म-हीन और लोक में निंदित हो ॥ ३२ ॥

शूलयोगफल ।

तीक्ष्णोऽलसो निर्धनश्च हिंस्रः शूरो बहिष्कृतः ।
संग्रामलब्धशब्दश्च शूलयोगे जनो भवेत् ॥ ३४ ॥

शूलयोग में उत्पन्न पुरुष तीक्ष्ण, आलसी, निर्धनी, हिंसक, शूर, वीर, जाति आदि से बाहर निकाला हुआ और संग्राम में लब्ध शब्दवाला हो ॥ ३४ ॥

केदारयोगफल ।

कृषौ रतः सत्यवादी स्वबाहुविहितोद्यः ।
धनी सुखी चञ्चलात्मा केदारोत्थो नरो भवेत् ॥ ३५ ॥

केदारयोग में उत्पन्न पुरुष खेती करनेवाला, सत्यवादी, अपनी भुजाओं के बल से कमानेवाला, धनी, सुखी और चंचल स्वभाववाला हो ॥ ३५ ॥

पाशयोगफल ।

कार्ये दक्षः प्रपञ्ची च बहुभाषी च बन्धुभाक् ।
विशीलो बहुलक्ष्मीकः पाशे भृत्ययुतो जनः ॥ ३६ ॥

पाशयोग में उत्पन्न पुरुष कार्य में निपुण, प्रपञ्ची, बहुत बोलनेवाला, भाइयों का सेवनेवाला, विशील (शील-रहित) बहुत लक्ष्मीवाला और दासों से युक्त हो ॥ ३६ ॥

दामयोगफल ।

उपकारी धनी मूढः पशुपुत्रसमृद्धिमान् ।
दामिनीयोगसम्भूतो रत्नैर्भवति पूरितः ॥ ३७ ॥

दामिनीयोग में उत्पन्न पुरुष उपकारी, धनी, मूर्ख, पशु, पुत्र और समृद्धियों से युक्त तथा रत्नों से भी पूरित हो ॥ ३७ ॥

वीणायोगफल ।

नृत्यगीतप्रियो नेता बहुभृत्यो धनी सुखी ।
कार्येषु निपुणो लोके वीणायोगे च जायते ॥ ३८ ॥

वीणायोग में उत्पन्न पुरुष नृत्य-गीत का प्रेमी, नेता (नायक) बहुत नौकरोंवाला, धनी, सुखी, संसार में कार्यों में निपुण हो ॥ ३८ ॥

नलमुसलरज्जुयोगफल ।

द्विस्वभावे स्थिरे खेटैश्चरे च सकलैः स्थितैः ।
नलोऽथ मुसलो रज्जुर्योगाः प्रोक्ताः पुरातनैः ॥ ३९ ॥

द्विस्वभावलग्न में सब ग्रह स्थित हों, तो नलयोग; स्थिरलग्न में सब ग्रह हों, तो मुसल-योग और चरलग्न में सब ग्रह हों, तो पुराने आचार्यों करके कहा हुआ रज्जुयोग होता है ॥ ३९ ॥

नलयोगफल ।

न्यूनातिरिक्तदेहश्च निपुणो धनसञ्चयी ।
बन्धुप्रियः सुरूपश्च नलयोगे भवेज्जनः ॥ ४० ॥

नलयोग में उत्पन्न पुरुष हीन किंवा अधिक अंगोंवाला, निपुण, धन का संचयी, बंधुओं का प्यारा और सुरूपवान् हो ॥ ४० ॥

मुसलयोगफल ।

राजमान्यो धनैर्युक्तः ख्यातः पुत्री नृपप्रियः ।
मुसले स्थिरचित्तश्च कर्मोद्युक्तश्च जायते ॥ ४१ ॥

मुसलयोग में उत्पन्न पुरुष राजाओं में पूज्य, धन से युक्त, प्रसिद्ध, पुत्रवान्, राजा को प्रिय, स्थिर चित्तवाला और कर्मों में उद्योग करनेवाला हो ॥ ४१ ॥

रज्जुयोगफल ।

परदेशे द्रव्यभागी सुरूपो दानतत्परः ।
क्रूरः खलस्वभावश्च रज्जुयोगे जनो भवेत् ॥ ४२ ॥

रज्जुयोग में उत्पन्न पुरुष परदेश में द्रव्य को प्राप्त करनेवाला, सुरूपवान्, दान में तत्पर, क्रूर और दुष्ट स्वभाववाला हो ॥ ४२ ॥

सर्पयोगफल ।

केन्द्रस्थानेषु सर्वेषु शुभैः सर्वैश्च संस्थितैः ।
मालायोगः सर्वपापैः सर्पयोगः प्रकीर्तितः ॥ ४३ ॥

सब केन्द्रस्थानों में सम्पूर्ण शुभग्रह स्थित हों, तो मालायोग होता है और जो केन्द्रों ही में सब पापग्रह ही हों तो सर्पयोग होता है ॥ ४३ ॥

मालायोगफल ।

वस्त्रवाहनभोगाद्यैर्युक्तः कान्तासुहृत्प्रियः ।
मालायोगे समुत्पन्नः सुखी भवति सर्वदा ॥ ४४ ॥

मालायोग में उत्पन्न पुरुष वस्त्र, वाहन और भोगादिकों से युक्त, स्त्री और मित्रों को प्रिय और सदा ही सुखी हो ॥ ४४ ॥

क्रूरो निःस्वो दुःखितश्च परान्ने निरतः सदा ।
दीनश्च विषमो लोके सर्पयोगे प्रजायते ॥ ४५ ॥

सर्पयोग में उत्पन्न पुरुष क्रूर, दरिद्री, दुःखित, सदा ही पराए अन्न का खानेवाला, दीन और विषम 'कुटिल' हो ॥ ४५ ॥

धान्यादिविश्वाज्ञानप्रकार ।

शाकं वह्निगुणं कृत्वा सप्तभिर्भागमाहरेत् ।
शेषं नेत्रगुणं कृत्वा पञ्च पञ्च नियोजयेत् ॥ १ ॥

लब्धं वह्निगुणं कृत्वा धान्यादिः सप्तभागतः ।
शून्ये पञ्चैव विज्ञेयाः सर्वमेवं निरूपयेत् ॥ २ ॥
वर्षा धान्यं तृणं शीतमुष्णं वायुश्च वृद्धयः ।
क्षयश्च विग्रहश्चैव ज्ञेयमेवं क्रमेण च ॥ ३ ॥

शाका को तीन से गुणाकर सात का भाग देवे, फिर जो शेष बचे उसको दो से गुणाकर पाँच को जोड़ देवे, फिर लब्ध हुए अंक को तीन से गुणाकर सात का भाग देने से शून्य में पाँच ही जाने, इसी तरह से सबको निरूपित करे, फिर क्रम से वर्षा, धान्य, तृण, शीत, तेज (अग्नि), वायु, वृद्धि, क्षय और विग्रह ये क्रम से जाने ॥ १-३ ॥

शाकं शक्रगुणं कृत्वा भागो वेदैर्विधीयते ।
शेषे मेघा भवन्तीह चावर्ताद्या यथाक्रमम् ॥ ४ ॥
आवर्ते चिन्तितावृष्टिः समावर्ते सुशोभना ।
पुष्करे दुष्करा वृष्टिर्द्रोणे वर्षति सर्वदा ॥ ५ ॥

उदाहरण ।

शाके १८१५ है, इसको गुणा तो ५४४५ हुए, इसमें सात का भाग देने से ७७७ लब्ध हुए, शेष (बाकी) ६ रहे, उनको २ से गुणा तो १२ हुए, पाँच मिलाए तो १७ हुए, तो इस वर्ष में वर्षा १७ बिस्वा है । तदनंतर लब्ध हुए ७७७ को तीन से गुण कर सात का भाग दे, शेष जो बचे, उसमें पाँच जोड़कर धान्य के बिस्वा समझो । इसी प्रकार लब्ध को तिगुना करके सात का भाग देकर शेष में पाँच जोड़कर तृणादि के बिस्वा जानो ।

शाके को चौदह से गुणाकर चार का भाग देकर जो शेष बचे, तो आवर्त्तादि क्रम से मेघ जाने । (एक बचे, तो) आवर्त मेघ में चिंतवन की हुई वर्षा हो, समावर्त मेघ में शुभ वर्षा हो, पुष्कर मेघ में वर्षा दुर्लभ हो, द्रोण मेघ में सदा वर्षा हो ॥ ४-५ ॥

दशभिर्दिवसैर्मासो मासचतुष्केण लभ्यते दिवसः ।
दिवसद्वयेन घटिका घटिकायुग्मेन पलमेकं तु ॥ ६ ॥

दश दिनों से महीना और चार महीनों से दिन दो दिन से घड़ी और दो घड़ी से एक पल मिलता है[1] ॥ ६ ॥

ध्रुवाङ्क

ध्रुवाङ्को दशभिर्गुण्यो भानुना त्रिंशतापि च ।
षड्भिश्चैवं हरेद्भागं दशा सूर्यादिको भवेत् ॥ ७ ॥

"ध्रुवाङ्क संज्ञा" ध्रुव का अंक दश से गुणे, फिर बारह से गुणा कर तीस से गुणे, तब छः का भाग देने से जो लब्ध हो, तो क्रम से सूर्यादिकों की दशा जाने ॥ ७ ॥

आदित्यात्रिगुणो राहुः सूर्यश्चन्द्रयुतो गुरुः ।
आदित्याद्विगुणं भौमे मेलयित्वा शनिर्भवेत् ॥ ८ ॥

सूर्य से तिगुनी (१८ वर्ष) राहु की दशा जाने, सूर्य और चन्द्रमा से युक्त (१६ वर्ष) बृहस्पति की दशा, सूर्य से दूनी और मंगल से युक्त शनैश्चर की दशा होती है ॥ ८ ॥

चन्द्रभौमौ बुधो ज्ञेयः केतुश्च मङ्गलो यथा ।
चन्द्रमाद्विगुणः शुक्रो दशाचक्रमुदाहृतम् ॥ ६ ॥

चन्द्रमा और मंगल मिले अर्थात् १७ वर्ष तक बुध की दशा, केतु की दशा मंगल के समान ७ वर्ष, चन्द्रमा से दूनी अर्थात् २० वर्ष तक शुक्र की दशा । इस प्रकार दशा-चक्र समझ लेना चाहिए ॥ ६ ॥

दशा पर भुक्त-भोग्य विचार ।

भयातघट्यो गुणिताः स्ववर्षै-
राप्ता भभोगैः शरदोऽवशिष्टम् ।

१—यह किसी अन्य-ग्रंथ का श्लोक है, इसका संबंध पूर्वापर से पाठकों को ज्ञात होगा ।

हन्यात्तु सूर्येण तथैव मासं
तथा खरामेण दिनानि शेषात् ॥ १० ॥
तथैव षष्ट्या घटिकाः पलानि
विशोधयेदायुषि तत्र शेषम् ।
आयुर्दशाभिश्च दशाहता चे-
दन्तर्दशा स्याद्दशभिश्च भागैः ॥ ११ ॥

जिस नक्षत्र में जन्म हो, उसके पूर्व नक्षत्र की घड़ियों को साठ में घटाकर उसमें इष्टकाल जोड़ देने से भयात और जन्म-नक्षत्र की घड़ियों को पहले ६० में न्यून की हुई घड़ियों में जोड़ देने से भभोग हो जाता है। भयात को नक्षत्र-पति के वर्ष से गुण देवे, फिर भभोग की घड़ियों से उनमें भाग देवे, जो अंक आवे उसे वर्ष जानना। शेष बचे हुए को बारह से गुणाकर भभोग का भाग देकर मास, पुनः ३० से गुणाकर भभोग का भाग देकर दिन जाने। शेष को ६० से गुणाकर भभोग का भाग देवे, तो लब्ध को घड़ी जाने। पुनः शेष को ६० गुणाकर भभोग का भाग देकर लब्ध को पल जाने, इस प्रकार भुक्त-भोग दशा जाननी चाहिए। तथा भोग्य-दशा से जिसकी दशा देखनी हो, उस ग्रह की दशा को गुणाकर, दश का भाग देकर, लब्ध हुए को मास आदिक जाने ॥ १०-११ ॥

उच्चस्थ ग्रहफल ।

पूर्णो धनैः परिजनैः सुतदारकोशै-
श्चण्डप्रतापनिकरैर्विजितारिसङ्घः ।
कोपाकुलो निजजनैः परिपूर्णमान-
स्तुङ्गस्थिते दिनकरे भवतीह लोकः ॥ १२ ॥
दाता भोक्ता प्रचुरयुवतीनायको विश्वबन्धु-
र्नानाक्रीडापरिणतमतिश्चञ्चलात्मस्वभावः ।

पुत्रैः पौत्रैर्हयगजरथैः पूर्णगेहो विलासी
चन्द्रे तुंगे भवति मनुजो लोकमान्यः प्रसन्नः ॥१३॥

उच्च के सूर्य में धन, परिजन, पुत्र, स्त्री और खज़ाने से पूर्ण हो, और उग्र प्रताप से शत्रुओं को जीते, तथा कोप से व्याकुल और भाइयों में भी परिपूर्ण मान हो ॥

उच्च के चन्द्रमा में दानी, भोगी, बहुत स्त्रियों का पति, संसार भर का बंधु, अनेक प्रकार के खेल खेलने में बुद्धिवाला, चंचल-स्वभाव, पुत्र, पौत्र, हाथी, घोड़ा और रथों से पूर्ण घरवाला, विलास करनेवाला, संसार में पूज्य और प्रसन्न मनुष्य हो ॥ १२-१३ ॥

चण्डप्रतापवशिताखिलभूमिपालः
शस्त्रप्रहारनिपुणो धनधान्यपूर्णः ।
रक्ताधिको रणधरासु पुरः प्रयातो
तुङ्गस्थिते क्षितिसुते मनुजः प्रतापी ॥ १४ ॥

उच्च के मंगल में उग्र प्रताप से सम्पूर्ण राजाओं को वश में करनेवाला, शस्त्रों के प्रहार करने में निपुण, धन और धान्यों से पूर्ण, अधिक रक्तवाला, रण-भूमि में सबसे आगे जानेवाला और प्रतापी मनुष्य हो ॥ १४ ॥

अध्यापकः शुभमतिर्नृपतिर्धनाढ्यो
लोकोत्तरातिविभवो गुणवानुदारः ।
सत्कीर्तिमान् सुतनयो निरुजः सुमित्र-
स्तुङ्गे बुधे भवति सर्वजनोपकारी ॥ १५ ॥

उच्च के बुध में अध्यापक (पढ़ानेवाला), शुभ बुद्धिवाला, राजा, धनी, संसार भर से ऐश्वर्य में अधिक, गुणवान्, उदार, शुभ कीर्ति-युक्त, सुंदर पुत्रोंवाला, नीरोग, उत्तम मित्रोंवाला और सब मनुष्यों का उपकारी हो ॥ १५ ॥

भूमण्डलीपतिरुदारमतिश्च दाता
ब्रह्मात्मबोधविमलो बहुपुत्रपौत्रः।
तीर्थानुरागहृदयो दृढदेहबन्धु-
स्तुङ्गे गुरौ नरपतिर्धनवानुदारः॥ १६॥

उच्च के बृहस्पति में पृथ्वीमण्डल का स्वामी, उदार बुद्धिवाला, दानी, ब्रह्म के आत्मबोध में निर्मल, बहुत पुत्र और पौत्रों से युक्त, तीर्थों में अनुराग-युक्त हृदयवाला, पुष्ट शरीर और बन्धुवाला, मनुष्यों का स्वामी, धनी और उदार हो॥ १६॥

देशाधिपो दृढमतिः सुतनुः सुमन्त्री
योद्धा समस्तजनपालनलब्धकीर्तिः।
चौरादिशासनपरः सुकविः सुबुद्धि-
स्तुङ्गे कवौ कुलपतिर्मनुजोऽतिहृष्टः॥ १७॥

उच्च के शुक्र में देशों का स्वामी, दृढ़ बुद्धिवाला, सुंदर देहवाला, सुंदर मन्त्री, योद्धा, सम्पूर्ण मनुष्यों के पालने में लब्धकीर्ति, चोर इत्यादि दुष्टजनों के दण्ड देने में तत्पर, अच्छा कवि, सुबुद्धिमान्, कुल का स्वामी और बहुत प्रसन्न मनुष्य हो॥ १७॥

आसागरं क्षितिपतिर्दृढदेहबन्धु-
र्हिंसारतो रणभुवि प्रथितप्रभावः।
हस्त्यश्वरत्नमणिभिः परिपूर्णगेहः
सूर्यात्मजे भवति तुङ्गगते मनुष्यः॥ १८॥

उच्च के शनैश्चर में समुद्रपर्यन्त पृथ्वी का स्वामी, दृढ़ देह और बन्धुवाला, हिंसा में रत, रण भूमि में प्रसिद्ध प्रभाव, हाथी, घोड़ा, रत्न और मणियों से परिपूर्ण घर हो॥ १८॥

भवति धरणिपालो नीचजातिः प्रतापी
हयगजधनयुक्तो ज्ञातिवर्गे विरक्तः ।
कुटिलमतिरनीतिर्भूरिभाण्डारयुक्त-
स्तमसि मिथुनसंस्थे जायते मानवेन्द्रः ॥ १६ ॥

मिथुन के राहु में पृथ्वी का स्वामी, नीच जाति, प्रतापी, घोड़ा, हाथी और धन से युक्त, भाइयों में विरक्त, कुटिल बुद्धि, नीति विज्ञान, बड़े खज़ाने से युक्त और मनुष्यों में श्रेष्ठ हो ॥ १६ ॥

सूर्यादि का परमोच्चांश ।

दशांशेऽर्कः शशीत्र्यंशे भौमोऽष्टाविंशके तथा ।
बुधः पञ्चदशांशे च पञ्चमांशे बृहस्पतिः ॥ २० ॥
सप्तविंशांशके शुक्रो विंशत्यंशे शनैश्चरः ।
सैंहिकेयश्च विंशांशे परमोच्चं प्रकीर्तितम् ॥ २१ ॥
इति श्रीसर्वशास्त्रविशारदश्रीकाशिनाथकृता
लग्नचन्द्रिका समाप्ता ।

दश अंश तक सूर्य, तीन अंश तक चन्द्रमा, अठारह अंश तक मंगल, पंद्रह अंश तक बुध, पांच अंश तक बृहस्पति, सत्ताइस अंश तक शुक्र, बीस अंश तक शनैश्चर और बीस ही अंश तक राहु के परम उच्च कहाते हैं ॥ २०-२१ ॥

इति श्रीउन्नावप्रदेशान्तर्गततारगाँवनिवासिपण्डितरामविहारि-
सुकुलकृता लग्नचन्द्रिकाया भाषाटीका समाप्ता ।